अध्याय-एक

शोध प्रारूप

1.1. साहित्य का पुनरावलोकन: प्रस्तुत शोध को पूर्ण करने के पूर्व इसके विषय से संबंधित शोध प्रबंध, विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध पत्र आलेख विभिन्न कमेटियों आयोग द्वारा अनुशासित रिपोर्ट, प्रतिवेदन तथा पुस्तकों का गहन अध्ययन किया गया है। इसका लघु विवरण निम्नवत है-

पुस्तक-

- मिश्र, अनुपम. (1993). *आज भी खरे हैं तालाब*. नई दिल्ली: गाँधी शांति प्रतिष्ठान.

प्रस्तुत पुस्तक शोध की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस पुस्तक में अनुपम मिश्र ने समूचे भारत के तालाबों, जल प्रबंधन तथा पानी की अनेक भव्य परम्पराओं की समझ और शोध को समाहित किया है। जिससे शोध कार्य को करने में आसानी हुई। इस पुस्तक में अनुपम मिश्र ने भारत की पारंपरिक जल संरचनाएं आज भी हजारों गाँव और कस्बों के लिए जीवन रेखा के समान बताया हैं। आज भी खरे हैं तालाब जैसी पुस्तकें पानी के विषय पर प्रकाशित पुस्तकों में मील के पत्थर के समान हैं, और आज भी इन पुस्तकों की विषय वस्तु से कई समाजसेवियों, वॉटर हार्वेस्टिंग, इच्छुकों और जल तकनीकी के क्षेत्र में कार्य कर रहे लोगों को प्रेरणा और सहायता मिलती है। अनुपम जी ने अपने द्वारा लिखी इन पुस्तकों का कोई कॉपीराइट अपने पास नहीं रखा है। इसी वजह से आज भी खरे हैं तालाब पुस्तक का अब तक विभिन्न शोध कर्ताओं और युवाओं द्वारा ब्रेल लिपि सहित 19 भाषाओं में अनुवाद किया जा चुका है। अनुपम का यह कार्य, देश भर के भयानक जलसंकट से निपटने और समस्या को अच्छी तरह समझने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। अनुपम मिश्र की यह किताब विस्मयकारी तथ्यों से परिपूर्ण है।

इस पुस्तक में अनुपम जी ने बताया है कि सैकड़ों, हजारों तालाब अचानक शून्य से प्रकट नहीं हुए थे। इनके पीछे एक इकाई थी बनवाने वालों की, तो दहाई थी बनवाने वालों की। यह इकाई, दहाई मिलकर सैकड़ा हज़ार बनती थी। पिछले दो सौ बरसों में नए किस्म की थोड़ी पढ़ाई पढ़ गए समाज ने इस इकाई, दहाई, सैकड़ा, हज़ार को शून्य ही बना दिया। अपनी इस पुस्तक के ज़रिए उन्होंने एक ऐसे भारत के दर्शन

कराये हैं जो सभी प्रकार के प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण था। अनुपम मिश्र ने अपनी इस पुस्तक को कॉपीराइट मुक्त भी रखा। जिससे उन्होंने जो मुहिम शुरू की है वह अपने अंजाम तक पहुँच सके।[1]

- मिश्र, अनुपम. (1995). *राजस्थान की रजत बूंदें*. नई दिल्ली: गांधी शांति प्रतिष्ठान.

इस पुस्तक से जल परंपरा को समझने में आसानी हुई। लोगों का जल से कितना घनिष्ठ संबंध है यह इस पुस्तक में दिखाया गया है। अपनी इस पुस्तक में अनुपम मिश्र ने पश्चिमी राजस्थान में सदियों से जल प्रबंधन के प्रति लोगों की कड़ी मेहनत के तरीके को बताते हुए लिखा है कि यहाँ के लोगों ने सदियों से जलती हुई इस धरती पर अपने समर्पण, श्रमसाध्य विस्तार और समुदाय की अगुवाई वाली कार्रवाई के काम के माध्यम से पानी का प्रबंधन किया है। राजस्थान में पानी बहुत कम गिरता है, जितना पानी है वह खारा पानी है उसको पी नहीं सकते और न ही उसका इस्तेमाल नहाने के लिए कर सकते हैं। फिर भी यहाँ के लोगों ने बिना किसी सरकारी मिशन का इंतज़ार किए बिना, किसी एन.जी.ओ.का इंतज़ार किए जहां जगह मिली उसी के अनुरूप टांका बनाकर जल संरक्षण के लिए निर्माण कार्य किया। घर बनाने से पूर्व जल गौड़ का निर्माण करते थे। अनुपम मिश्र की यह रचना सिर्फ राजस्थान राज्य की जल समस्या का समाधान मात्र नहीं है। यह ज़मीन की गहराई में जीवन की पहचान है। यह रचना पानी की हर आहट की कलात्मक अभिव्यक्ति है। राजस्थान की रजत बूंदें के माध्यम से अनुपम मिश्र आम जनजीवन को यह संदेश देते हैं कि हमें अपने समाज, अपने गाँव और अपने शहर में सबके साथ मिलकर अपने पर्यावरण को समझने की कोशिश करनी चाहिए।[2]

- मिश्र, अनुपम. *महासागर से मिलने की शिक्षा*. नई दिल्ली: हरित स्वराज.

अनुपम मिश्र की यह पुस्तक महासागर से मिलने वाली शिक्षा उनके द्वारा लिखे गए विभिन्न लेखों जैसे जड़े, राज, समाज और पानी, तैरने वाला समाज डूब रहा है, अकेले नहीं आते बाढ़ और अकाल, दुनिया का खेला,साध्य, साधन और साधना जैसे महत्वपूर्ण लेखों का समायोजन है। जिससे उनकी लेखनी को समझने में सहायता मिली, जो शोध की दृष्टि से अहम है। पर्यावरणविद् अनुपम मिश्र ने अपनी इस पुस्तक में जल संरक्षण से जुड़ी बुनियादी बाते तो बताई ही हैं और साथ ही में इस पुस्तक में उनके गांधीवादी पर्यावरणविद् के रूप से भी हमे रूबरू कराती है। इस पुस्तक में उनके अलग-अलग मौकों पर दिये गए भाषणों, व्याख्यानों और लिखे लेखों का समायोजन है। यह किताब उनके सात व्याख्यान भाषण से

सुसज्जित है। ज्यादातर लेखों में जल और जंगल के पारंपरिक प्रबंधन के उदाहरण देते हुए इसे आज के दौर की समस्याओं का समाधान बताया गया है। प्रस्तुत पुस्तक में अनुपम मिश्र ने पर्यावरण से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य प्रस्तुत किए हैं।[3]

- मिश्र, अनुपम. (1988). *हमारा पर्यावरण*. नई दिल्ली: गांधी शांति प्रतिष्ठान.

अनुपम मिश्र ये यह किताब पर्यावरण के इतिहास को समझने में मदद करती है। अनुपम मिश्र ने अपनी इस कृति के माध्यम से बताया है कि कवि जिस मिट्टी के गुण गाते नहीं थकते थे वह आज बंजर हो चली है। यह पुस्तक देश के पर्यावरण पर प्रस्तुत दूसरी गैर सरकारी रिपोर्ट है। हमारा पर्यावरण में अनुपम मिश्र ने पर्यावरण के क्षेत्र में हो रही घटनाओं और उनके पीछे छिपी नीतियों और विकास की अवधारणाओं को साथ में रखकर देखने की कोशिश की है, और यह भी दर्शाया है की इनके कारण लाभ कौन पता है और किसे नुकसान होता है। प्रस्तुत पुस्तक के जरिए उन्होंने यह चेताने की कोशिश की है कि कैसे प्राकृतिक सम्पदा पूरे समाज से छीन कर कुछ लोगों को लाभ पहुंचाने के लिए किस तरह बर्बाद की जा रही है। यह भी समझने की कोशिश की है कि किस तरह सम्पदा के भिन्न भिन्न रूपों पर समाज के विभिन्न अंग टिके थे और आज विकास के नाम पर कैसे ये जीवन टूट चले हैं और इस कारण स्त्री-पुरुषों, गाँव-शहर, पशु-पक्षियों पर क्या बीत रही है। हमारा पर्यावरण पुस्तक कुछ तथ्य प्रस्तुत करती है जिसके अनुसार चारगाह समाप्त हो रहे हैं। पशुपालक उखड़ रहे हैं। देश में लगभग 8 लाख हेक्टेयर ज़मीन बीहड़ बनती जा रही है और जिस रफ्तार से बीहड़ को रोकने का काम किया जा रहा है, उस हिसाब से इस कार्य को पूरा होने 250 वर्ष लगेंगे और तब यह बीहड़ दोगने हो जाएंगे। पिछले तीस वर्षों में खनिज उत्पादन 50 गुना हुआ है पर इसके कारण लाखों हेक्टेयर फसल और वन चौपट हुए हैं और अनेक गाँव वीरान हुए हैं।[4]

- जैन, रमेश. (2005). *पर्यावरण मीडिया एवं कानून*. जयपुर: जयपुर सबलाइम.

प्रो. रमेश जैन की पर्यावरण एवं मीडिया विषय पर हिन्दी में यह प्रथम विस्तृत, शोध पूर्ण, प्रामाणिक एवं विवेचनात्मक कृति है। इस विषय पर भारतीय परिप्रेक्ष्य में लिखित पुस्तकें नहीं के बराबर हैं। इस पुस्तक से

पर्यावरण के लिए जो कानून बने हैं उसको समझने में सहायता करती है। प्रस्तुत पुस्तक में पर्यावरण के लिए मीडिया लेखन से संबंध रखती है। रमेश जैन की इस पुस्तक में पर्यावरण अर्थ एवं स्वरूप, पर्यावरण एवं फीचर, विभिन्न प्रकार, महत्व, स्त्रोत एवं लेखन के व्यावहारिक पक्ष, पर्यावरण कानून, पर्यावरण आंदोलन की जानकारी आदि विषयों का इसमें विस्तृत एवं तथ्यपरक वैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक यह भी सन्देश देती है कि आज मीडिया के लिए पर्यावरण के मुद्दों पर अधिक लिखने की आवश्यकता है।[5]

- दुबे, श्यामसुंदर. (2008). *लोक में जल*. भारत सरकार नई दिल्ली.

श्याम सुंदर दुबे ने अपनी पुस्तक लोक में जल में जल की लोक यात्रा का विश्लेषण किया है। यह पुस्तक जल की महत्ता समझने के लिए दृष्टि प्रदान करती है। जल की विशेषता बताते हुए उन्होंने कहा है कि जल एक अनिवार आकर्षण अपने भीतर पालता है। यह आकर्षण जल के जीवंत होने का प्रमाण है। जल सबको नया करता है- पुराने को बहाता हुआ, रंगरूप और गंधहीन करता हुआ है। जल पुनरूत्पादन का आधार है। संसार में कुछ भी फिर से नया हो रहा है, उग रहा है, जीवंत हो रहा है, हरा-भरा हो रहा है, वह सब जल की क्षमता का ही प्रदर्शन है। पौधा जब सूखने लगे तो उसे जल दो, वह पनपने लगेगा। धरती की कोख में पड़ा-पड़ा बीज जीवन के अनंत अपने सीरजता है, जब वह जल के संपर्क में आता है, तब उसके भीतर जीवन के स्पंदनों का विस्फोट होता है। जल को तोड़कर ही विद्युत प्राप्त की जाती है। जल की धारण क्षमता और धैर्य की असीमता के कारण ही धरती, धरती है। धरती के पास जल है तो वह सृष्टि धारण करने में समर्थ है। जिन ग्रहों पर जल नहीं हैं वे ग्रह- कंकाल रह गए हैं।

श्याम चरण दुबे कहते हैं कि तालाबों को, कुओं को, बावड़ियों को स्वार्थ के यक्ष से मुक्त करो। इन सबके तटों पर यक्ष केवल कब्जा नहीं जमाए है, इनको पाटता हुआ प्यासे युधिष्ठिर के सामने अनेक प्रश्न उछाल रहा है। मेरे युग के युधिष्ठिर को उसके अनेक प्रश्नों के उत्तर देने हैं।[6]

- शर्मा, दीप्ति और कुमार महेंद्र. (2001). *पर्यावरण अध्ययन*. नई दिल्ली.

दीप्ति शर्मा और महेंद्र कुमार की पुस्तक में उन्होंने पर्यावरण प्रबंध के अंतर्गत संसाधन के उपयोग के मुद्दे को उठाया है। संसाधन का उपयोग कैसे, कितना और कब-कब करना चाहिए। आज मनुष्य अपनी दैनिक कार्य में ही पर्यावरण का लगातार दोहन कर रहा है। अर्थात् पर्यावरण को हानि पहुंचा रहा है। दीप्ति शर्मा और महेंद्र कुमार ने इस बात पर चिंता जाताई है कि जिस तरह इन संसाधनों का उपयोग हो रहा है यदि यही क्रम जारी रहा तो आने वाले संसाधन सामान्य उपलब्धता तो दूर यह सभी एक दुर्लभ पशु-पक्षियों की कुछ नस्लें ही कहीं-कहीं रह पाई हैं। अतः संसाधन सुरक्षा एवं संसाधन पोषण एवं वृद्धि के लिए संसाधन प्रबंध अत्यावश्यक है, आज की पहली आवश्यकता है। यह पुस्तक प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कैसे किया जाना चाहिए और कितना किया जाना चाहिए उसका ज्ञान प्रदान करती है। जो शोध को एक दिशा प्रदान करती है। प्रस्तुत पुस्तक में विषय संबंधी विभिन्न पहलुओं की वैज्ञानिक ढ़ंग से व्याखा की गयी है।[7]

- बहुगुणा, सुन्दरलाल. (1999). *सभ्यता का संकट और संस्कृति का सन्देश*. नई दिल्ली.

सुंदर लाल बहुगुणा की पुस्तक सभ्यता का संकट और संस्कृति का संदेश में 23 दिसम्बर 1986 को डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद व्याखानमाला के अंतर्गत आकाशवाणी, नई दिल्ली से प्रसारित किए गए चिपको आंदोलन के प्रणेता और विख्यात सामसेवी श्री सुंदर लाल बहुगुणा का मूल पाठ है। स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद की पवन स्मृति में आकाशवाणी नई दिल्ली हर साल डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद व्याखानमाला का आयोजन कर, राष्ट्रीय महत्व के प्रश्नों पर विख्यात महानुभावों के व्याखान प्रसारित करती हैं। यह पुस्तक पर्यावरण संरक्षण की सभ्यता के बारे में ज्ञान प्रदान करती है, जिसका शोध में अहम स्थान है। श्री बहुगुणा द्वारा दिया गया यह व्याखान इस पंक्ति का 16वां पुष्प है। श्री बहुगुणा ने प्रदूषण की विकट समस्या विरूद्ध समस्त मानवजाति का आह्वान करते हुए इसके कारणों और निदान का सविस्तार वर्णन किया है।[8]

पत्रिकाएं-

- मंडलोई, लीलाधर. (2017). *नया ज्ञानोदय एकाग्र*. नई दिल्ली: धरमलाल तंवर प्रकाशन.

मैंने अपना शोध कार्य पूर्ण करने के लिए भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित नया ज्ञानोदय के फरवरी माह के एडिशन एकाग्र अनुपम मिश्र है उसको लिया है। इस पत्रिका में विभिन्न लोगों जैसे प्रभाष जोशी का "अनुपम मिश्र जैसे व्यक्ति कि पुण्याई पर हमारे जैसे लोग जी रहे हैं, विश्वनाथ त्रिपाठी का "सहजता का साधक", कुमार प्रशांत का "एक प्रार्थनामय जीवन की अनुपम साधना", मिथिलेश चतुर्वेदी का "ऐसा दोस्त पुण्य के बिना नहीं मिलता", दिलीप चिंचालकर का "अनुपम नाम सुभाव है", चिन्मय मिश्र का गांधी, विनोबा और जेपी के बाद अनुपम ही दे, जिन्हें समाज पर पूरा भरोसा था",नन्दिता मिश्र का "एक छोटा भाई, जो देखते देखते इतना बड़ा हो गया, सोपान जोशी का "एक साफ सुथरा, अनुपम जीवन", राकेश दीवान का नाम की सार्थकता का उदाहरण, उमेश आनंद का "वॉटर गुरु-अनुपम मिश्र" सुशीला ओझा का "पानी अपना रास्ता कभी नहीं भूलता है'' के नाम से आलेख हैं। जिसमे अनुपम जी की सादगी और समाजसेवी पूर्ण ज़िंदगी की झलक मिलती है। प्रस्तुत मैगज़ीन में अनुपम मिश्र की पर्यावरणीय यात्रा का ज़िक्र है, उनकी पर्यावरणीय दृष्टि पर विशेषज्ञों के लेख हैं। यह पत्रिका अनुपम मिश्र के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करती है, जो शोध के लिए अति आवश्यक है। प्रस्तुत पुस्तक में यह बताया गया है कि अनुपम मिश्र पर्यावरण के क्षेत्र में जनचेतना लाने का प्रयास तब से कर रहे हैं, जब भारत में कोई पर्यावरण केंद्र नहीं था।[9]

- अग्रवाल, अनिल. (2016). *डाउन टू अर्थ*. नई दिल्ली.

डाउन टू अर्थ पत्रिका पर्यावरण और विकास से जुड़े मुद्दों को समर्पित है। यह पत्रिका विकास, पर्यावरण और स्वास्थ्य की राजनीति से संबंधित ऐसी जमीनी रिपोर्ट और तथ्यपूर्ण लेख पाठकों तक पहुंचाती है जो सामान्य जन जीवन के लिए सबसे ज्यादा मायने रखते हैं। डाउन टू अर्थ पत्रिका केंद्र और राज्य सरकारों के नीति निर्धारकों को व्यापक जन हित में फैसले लेने के लिए बाध्य करती है। यह पत्रिका विकास और पर्यावरण के संबंध को समझने में दृष्टि प्रदान करती है जो शोध के लिए बहुत ज़रूरी है। पत्रिका में मौलिक

रिपोर्टों के अलावा पर्यावरण से जुड़े साहित्य, लोक संस्कृति और इतिहास से संबंधित सामग्री को भी जगह दी गयी है।[10]

- पाठक, रितेश. (2016). *योजना*. नई दिल्ली.

इस मासिक पत्रिका में जल संरक्षण के मुद्दे उठाया गया है। वर्षा जल संरक्षण की विभिन्न विधियों पर चर्चा की गयी है। नदी जोड़ की आवश्यकता और कुशल जल प्रबंधन के बारे में सविस्तार से बताया गया है। यह पत्रिका जल संरक्षण की पारंपरिक पद्धति को समझने में सहायता करती है जिसका शोध में अहम स्थान है।[11]

- *भारत 2*016. नई दिल्ली: दृष्टि प्रकाशन.

दृष्टि प्रकाशन की यह पत्रिका जल संसाधन पर केन्द्रित है। नदी संरक्षण के मुद्दे को उठाया गया। सरकार के नमामि गंगे, स्वच्छ गंगा के लिए राष्ट्रीय मिशन, राष्ट्रीय जल नीति, 2012 त्वरित सिंचाई लाभ कार्यक्रम, कमान क्षेत्र विकास एवं जल प्रबंधन, सिंधु जल संधि, नेशनल प्रोजेक्ट्स कन्स्ट्रकशन कार्पोरेशन लिमिटेड के बारे में बताया गया है। भारत में जल प्रबंधन और चुनौतियों पर भी चर्चा की गयी है। यह पुस्तक पर्यावरण का सार संग्रह है। पर्यावरण के आंदोलन जैसे कि चिपको आंदोलन, अप्पिको आंदोलन आदि से लेकर पर्यावरण संरक्षण के लिए बनाये गए नियम का व्याखान का संग्रहण शामिल है। पर्यावरण विषय के सम्बंध में यह पुस्तक बहुत ही सटीक ज्ञान प्रदान करने वाली है।

समाचार लेख-

पर्यावरण के एक महर्षि का जाना (लोकमत समाचार) 20/12/2016- अरुण त्रिपाठी का यह लेख अनुपम मिश्र को श्रद्धांजलि था। इस लेख के जरिए उन्होंने बताया कि हम सबने अनुपम जी के जाने से क्या खोया है? अनुपम मिश्र ने नहरों और टूबेवेलों पर निर्भर समाज को उसकी विरासत की याद दिलाई है। अनुपम मिश्र ने न केवल पर्यावरण संबंधी लेख लिखे बल्कि उन क्षेत्रों में जाकर काम भी किया जहां उसकी ज़रूरत थी। वह एक सच्चे पर्यावरणविद् थे। उनके जाने से समाज को भरी क्षति हुई है। जनसत्ता, 1993 (सत्याग्रह)"पर्यावरण का अनुपम, अनुपम मिश्र है, उसकी 'पुण्याई' पर हम जैसे जी रहे हैं"..... प्रभाष जोशी ने

अपने इस लेख में अनुपम मिश्र की जीवन गाथा के बारे में बताया है। उनके गांधी मार्ग के संस्थापक की यात्रा से लेकर चिपको आंदोलन की लड़ाई तक का जिक्र किया है, उनका मानना था कि पेड़ों को काटने से रोकने के लिए शुरू हुए इस आंदोलन और इससे आई पर्यावरणीय चेतना पर कोई लिख सकता है तो अनुपम मिश्र। प्रस्तुत लेख का समग्र ज्ञान शोध की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।[12]

प्रतिवेदन-

- **राष्ट्रीय जल नीति- 2012 The National Water Policy- 2012**

सरकार द्वारा 7 जून, 2012 को राष्ट्रीय जलनीति (2012) का संशोधित प्रारूप जारी किया गया। संशोधित प्रारूप को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया गया है।

जल प्राकृतिक संसाधन है की और जीवन, जीविका खाद्य सुरक्षा और निरंतर विकास का आधार है। यह एक दुर्लभ संसाधन भी है। भारत में संसार की 17% से अधिक आबादी है जबकि विश्व का केवल 4% नवीकरणीय जल संसाधन और विश्वके भूक्षेत्र का 2.6% भू-क्षेत्र है। जल की कमी तथा उसके जीवन रक्षक और आर्थिक महत्व के विषय में जागरूकता की कमी के कारण जल का कुप्रबंधन, जल की बर्बादी और अकुशल उपयोग होता है और प्रदूषण तथा न्यूनतम पारिस्थितिकीय आवश्यकताओं से भी कम प्रवाह हो पाता है। इसके अतिरिक्त, जल संसाधनों का बंटवारा असमान है तथा जल संसाधनों की आयोजना, प्रबंधन और उपयोग के विषय में समरूप परिप्रेक्ष्य की कमी है।

राष्ट्रीय जल नीति का उद्देश्य मौजूद स्थिति का संज्ञान लेने, नियमों और संस्थाओं की प्रणाली के सृजन और समरूप राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य समेत कार्य योजना हेतु ढांचे का प्रस्ताव रखना है। समुदाय को जल की स्थानीय उपलब्धता के अनुसार लंबी दूरी से अंतरण करके जल उपलब्ध कराने से पहल जल का उपयोग करने के लिए अनुकूलन किए जाने हेतु जागरूक बनाया जाना चाहिए और प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। समुदाय आधारित जल प्रबंधन सांस्थानिकृत और सुदृढ़ किया जाना चाहिए। वर्तमान अनुमान के अनुसार, भारत में प्रति वर्ष औसतन लगभग 4000 बिलियन घन मीटर (बीसीएम) वर्षा होती है जोकि इसका मूलभूत जल संसाधन है। इसमें से प्राकृतिक वाष्पीकरण-वाष्पोत्सर्जन के बाद नदियों एवं जलभृतों के

माध्यम से औसत वार्षिक प्राकृतिक प्रवाह लगभग 1869 बिलियन घन मीटर (बीसीएम) है। यदि बड़े अंतरबेसिन अंतरण को छोड़ दिया जाए तो इसमें से वर्तमान कार्यनीतियों से केवल लगभग 1123 बीसीएम जल उपयोग योग्य है। जल की बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के लिए उपयोग हेतु जल की उपलब्धता को बढ़ाए जाने की आवश्यकता है। उपयोग योग्य जल संसाधन में वृद्धि के लिए वर्षा का प्रत्यक्ष उपयोग एवं अपरिहार्य वाष्प-वाष्पोत्सर्जन को कम करना नई अतिरिक्त कार्य नीतियां हैं। देश में भू-जल संसाधन (पुनर्भरणीय एवं गैर-पुनर्भरणीय दोनों) की मात्रा एंव गुणवत्ता जानने के लिए जलभृतों की स्थिति का पता लगाने की आवश्यकता है। इस प्रक्रिया में स्थानीय समुदायों को शामिल करते हुए पूर्ण रूप से सहभागिता को बढ़ाया जाना चाहिए। अति-दोहित क्षेत्रों में जल उपयोग की उन्नत तकनीकें अपनाकर, जल के कुशल उपयोग को प्रोत्साहन देकर और जलभृतों के समुदाय आधारित प्रबंधन को बढ़ावा देकर भू-जल स्तर में गिरावट को रोके जाने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त जहां आवश्यक हो कृत्रिम पुनर्भरण परियोजनाएं शुरू की जानी चाहिए जिससे जल की निकासी के पुनर्भरण से कम हो।[13]

- **राज्यों की पर्यावरण रिपोर्ट**

पर्यावरण की स्थिति पर प्रतिवेदन का मुख्य उद्देश्य है भारत में पर्यावरण की वस्तु-स्थिति प्रस्तुत करना जो मौलिक दस्तावेज के रूप में प्रयुक्त हों तथा युक्तिसंगत एवं सूचना आधारित निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया में सहायता करे। पर्यावरण की दशा पर प्रतिवेदन का लक्ष्य आने वाले दशकों में संसाधन के निर्धारण हेतु पर्यावरण की दशा एवं प्रवृत्ति के विश्लेषण पर आधारित नीति-निर्देश उपलब्ध कराना तथा राष्ट्रीय पर्यावरणकारी योजना हेतु दिशा-निर्देश मुहैया कराना है।

राष्ट्रीय पर्यावरण नीति 2006- इस नीति में पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखकर कुछ नियम कानून बनाए गए हैं -

नियामकीय सुधार, पर्यावरणीय संरक्षण कार्यक्रम एवं परियोजना, केंद्र, राज्य व स्थानीय सरकार द्वारा कानूनों के पुनरावलोकन एवं उसके कार्यान्वयन में, इसकी भूमिका मार्गदर्शन देने की होगी।

- इस नीति की मुख्य विषयवस्तु है पर्यावरणीय संसाधनों का संरक्षण सबके कल्याण एवं आजीविका सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक है। अतः संरक्षण का सबसे मुख्य आधार यह होना चाहिए कि किसी संसाधन

पर निर्भर रहने वाले लोगों को संसाधन के निम्नीकरण की बजाय उसके संरक्षण के द्वारा आजीविका के बेहतर अवसर प्राप्त हो सकें।

यह नीति विभिन्न सहभागियों जैसे सरकारी अभिकरणों, स्थानीय समुदायों, अकादमिक एवं वैज्ञानिक संस्थानों, निवेश समुदायों एवं अंतरराष्ट्रीय विकास सहयोगियों द्वारा उनसे संबद्ध संसाधनों के उपयोग तथा पर्यावरण प्रबंधन के सशक्तीकरण हेतु उनकी भागीदारी को प्रोत्साहित करती है।[14]

शोध प्रबंध-

- **पर्यावरण जागरूकता तथा पर्यावरण शिक्षा के प्रति छात्राध्यापकों के ज्ञान तथा अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन**

प्रस्तुत अध्ययन श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के शिक्षा विभाग का है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में पर्यावरण विषय अध्ययन करने वाले तथा अध्ययन नहीं करने वाले छात्र और अध्यापकों के पर्यावरणीय ज्ञान, पर्यावरणीय शिक्षा और पर्यावरणीय जागरूकता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन है।

यह शोध प्रबंध पर्यावरण के प्रति छात्रों और अध्यापकों की जागरूकता पर आधारित है, जिसनें मुझे पर्यावरण के प्रति लोगों में जागरूकता के स्तर को समझने के लिए एक दिशा प्रदान की।[15]

1.2. अध्ययन की रूपरेखा: प्रस्तुत शोध में अनुपम मिश्र द्वारा पर्यावरण के क्षेत्र में किए गए कार्यों का आकलन प्रस्तुत करने के लिए उनके कार्य क्षेत्रों को आधार बनाया गया है। पर्यावरण की अवधारणा और वर्तमान स्थिति,अनुपम मिश्र तथा उनके द्वारा किए कार्यों को शोध में प्रस्तुत करने के लिए द्वितीयक सामाग्री के रूप में विषय से संबंधित पुस्तक, पत्र, पत्रिकाओं का उपयोग किया गया है। प्राथमिक आंकड़ों के संकलन के लिए प्रश्नावली का निर्माण कर विशेषज्ञों से साक्षात्कार किए गए हैं।

1.3. शोध प्रश्न: जब शोध के लिए किसी विषय का चुनाव किया जाता है तब अनेक प्रश्न दिमाग में आने लगते हैं। प्रस्तुत शोध के संबंध में भी यह बात लागू होती है। पर्यावरण पत्रकारिता को लेकर शोधार्थी द्वारा निम्नलिखित प्रश्नों पर विचार किया गया-

- पर्यावरण पत्रकारिता का क्या इतिहास रहा है?
- पर्यावरण के क्षेत्र में जल प्रबंधन तकनीकी को सुदृढ़ में अनुपम मिश्र का क्या योगदान रहा है?
- वर्तमान और भविष्य के पर्यावरण संकट क्या हैं?

1.4. शोध का उद्देश्य: किसी भी शोध अध्ययन का निश्चित स्वरूप रेखांकित करना शोध का मूल उद्देश्य होता है। इसके अभाव में शोध अध्ययन का निश्चित परिणाम अथवा निष्कर्ष प्राप्त करना असंभव होता है। अतः यह कहा जा सकता है कि शोध अध्ययन के लिए उद्देश्य इसकी महत्वपूर्ण इकाई होती है। प्रस्तुत शोध के उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

- पर्यावरण के क्षेत्र में जल संरक्षण के लिए अनुपम मिश्र द्वारा किए गए कार्यों का अवलोकन करना है।
- भारत में पर्यावरण पत्रकारिता की पृष्ठभूमि का अवलोकन करना है।
- अनुपम मिश्र की पर्यावरण पत्रकारिता की प्रस्तुति का विश्लेषण करना है।

1.5. शोध की प्राकल्पना: कोई भी अनुसंधान किसी नवीन तथ्य की खोज या उपलब्ध तथ्यों के सत्यापन के संदर्भ में किया जाता है। अनुसंधान कार्य के पीछे कुछ ऐसे प्रश्न होते हैं जिनके उत्तर की खोज सिद्ध या असिद्ध रूप में होता है। परिकल्पना शोधक को वास्तविक प्रद्त एकत्रित करने के पूर्व अध्ययन के परिणाम की भविष्यवाणी करने हेतु अवसर प्रदान करती है। यह भविष्यवाणी ही परिकल्पनाएं कहलाती हैं।

प्रस्तुत शोध की प्राकल्पना निम्नवत हैं-

- पर्यावरण के जल संरक्षण के क्षेत्र में अनुपम मिश्र का महत्वपूर्ण योगदान है।
- अनुपम मिश्र द्वारा जल संरक्षण के क्षेत्र में किये गये कार्यों के बाद मीडिया जागरूक हुई है।
- जल संरक्षण के प्रति लोगों में जागरूकता का अभाव देखने को मिलता है।

1.6. शोध की प्रासंगिकता: सामाजिक और पर्यावरणीय क्रांति की नींव पर खड़ा भारतीय मीडिया का पत्रकारीय सरोकार हमेशा एक जैसा नहीं रहा है। प्रस्तुत शोध में अध्ययन के माध्यम से पर्यावरण पत्रकारिता की और पर्यावरण पत्रकारिता में अनुपम मिश्र की भूमिका का सविस्तार अध्ययन किया गया है। आज मनुष्य अपने लोभवश प्रतिदिन पर्यावरण को दूषित करने में जुट गया है। प्रस्तुत अध्ययन लोगों में पर्यावरण और सबसे विशेष जल संकट जिसके लिए अनुपम मिश्र ने अपना पूरा जीवन लगा दिया, के प्रति चेतना जगाने में अहम भूमिका निभा सकता है।

1.7. अध्ययन का क्षेत्र एवं सीमाएं: शोध में अध्ययन क्षेत्र की अपनी महत्ता होती है। क्षेत्र, संबंधित विषय के विभिन्न दृष्टिकोण से अध्ययन में विश्वसनीयता प्रदान करने में सहायक होता है। प्रस्तुत शोध प्रबंध के विषय पर्यावरण पत्रकारिता और अनुपम मिश्र को ध्यान में रखते हुए पर्यावरण के जल संरक्षण के मुद्दे को लिया गया है। अनुपम मिश्र की पर्यावरणीय दृष्टि का अवलोकन किया गया है। जिन क्षेत्रों में अनुपम मिश्र ने काम किया हैं उनको केंद्र में रखकर शोधार्थी ने अपना शोध कार्य किया है।

1.8. तथ्य संकलन पद्धति: प्राथमिक स्त्रोत- प्रस्तुत शोध में प्राथमिक स्रोत से तथ्यों का संकलन करने के लिए साक्षात्कार पद्धति (Interview Methods) का उपयोग किया गया और प्रत्यक्ष रूप से साक्षात्कार करने के लिए संरचित साक्षात्कार अनुसूची (Structured Interview Schedule) का उपयोग किया गया।

द्वितीयक स्रोत- पूर्व में जल संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण और तालाब संस्कृति को लेकर जो शोध हुए हैं, जल संरक्षण से संबंधित छपे लेख, समाचार आलेख आदि का अध्ययन किया है।

1.9. शोध प्रविधि: मेरा यह शोध अनुपम मिश्र की पर्यावरण पत्रकारिता पर आधारित है। इसलिए यह शोध एक वैयक्तिक अध्ययन के अंतर्गत आता है। अपने इस शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए मैंने विषय से संबंधित लोगों से साक्षात्कार किए हैं तथा अनुपम मिश्र द्वारा पर्यावरण के क्षेत्र में लिखे गए लेखों का विश्लेषण किया है। अपने शोध को पूर्ण करने के लिए मैंने निम्नलिखित शोध प्रविधि का उपयोग किया है।

- वैयक्तिक अध्ययन
- निदर्शन पद्धति
- अवलोकन
- अंतर्वस्तु विश्लेषण
- साक्षात्कार

1.10. भविष्य में शोध: प्रत्येक शोध की एक सीमा होती है, जिसके दायरे में रहकर शोधार्थी को अपना शोध कार्य पूर्ण करना पड़ता है। मेरा शोध विषय जोकि पर्यावरण पत्रकारिता और अनुपम मिश्र है, बहुत ही वृहद है, लेकिन एक निश्चित अवधि निर्धारित होने की वजह शोध कार्य उतना व्यापक स्तर पर नहीं हो पाया है। मेरा यह शोध लघु शोध की श्रेणी में आता है। समय के अभाव के कारण मैंने अपने इस शोध में एक पर्यावरणविद् से साक्षात्कार किया है। अधिक तथ्य हासिल करने के लिए दो या दो से अधिक पर्यावरणविद् से साक्षात्कार किया जा सकता है। अनुपम जी के देहांत होने की वजह मुझे उन लोगों से संपर्क करने में कठिनाई हुई जो उनकी पर्यावरणीय दृष्टि के बारे में सही और सटीक ज्ञान दे सके क्योंकि मेरा शोध समय सीमा से बंधा हुआ था। भविष्य में इस विषय पर व्यापक स्तर पर शोध की जा सकती है।

संदर्भ:

1. मिश्र, अनुपम. (1993. *आज भी खरे हैं तालाब*. नई दिल्ली: गाँधी शांति प्रतिष्ठान.
2. मिश्र, अनुपम.(1995). *राजस्थान की रजत बूंदें*. नई दिल्ली: गांधी शांति प्रतिष्ठान.
3. मिश्र, अनुपम. *महासागर से मिलने की शिक्षा*. नई दिल्ली: हरित स्वराज.
4. मिश्र, अनुपम. (1988). *हमारा पर्यावरण*. नई दिल्ली: गाँधी शांति प्रतिष्ठान.
5. जैन, रमेश. (2005). *पर्यावरण मीडिया एवं कानून*. जयपुर: जयपुर सबलाइम.
6. दुबे, श्यामसुंदर. (2008). *लोक में जल*. भारत सरकार नई दिल्ली.
7. शर्मा, दीप्ति और कुमार महेंद्र. (2001). *पर्यावरण अध्ययन*. नई दिल्ली.
8. बहुगुणा, सुन्दरलाल. (1999). *सभ्यता का संकट और संस्कृति का सन्देश*. नई दिल्ली.
9. मंडलोई, लीलाधर. (2017). *नया ज्ञानोदय एकाग्र*. नई दिल्ली: धरमलाल तंवर प्रकाशन.
10. अग्रवाल, अनिल. (2016). *डाउन टू अर्थ*. नई दिल्ली.
11. पाठक, रितेश. (2016). *योजना*. नई दिल्ली.
12. http://www.jansatta.com/sunday-magazine/jansatta-article-about-anupam-mishra//215113
13. http://www.chetanbopal.in/nata/%
14. https://hi.wikipedia.org/wiki/
15. https://hi.wikipedia.org/wiki/

अध्याय-दो

पर्यावरण और पर्यावरण पत्रकारिता

2.1. पर्यावरण और पर्यावरण पत्रकारिता: पर्यावरण शब्द परि+आवरण दो शब्दों से मिलकर बना है। परि का अर्थ है- चारों तरफ तथा आवरण शब्द का अर्थ है- ढ़का हुआ। इस प्रकार पर्यावरण शब्द का अर्थ है- चारों तरफ से ढकने वाला। पर्यावरण की एक निश्चित एवं सर्वमान्य परिभाषा नहीं है किन्तु विभिन्न पर्यावरणविदों ने इसे अपने अपने ढंग से परिभाषित किया है-

डिक्शनरी ऑफ़ एनवायर्नमेंटल टर्म्स (1976) के अनुसार पर्यावरण वह क्षेत्र, घेरा या परिस्थितियां जिनमें कोई चीज विद्यमान है जीवधारी के बाहर प्रत्येक वस्तु। एक जीव या सावयव के पर्यावरण के अंतर्गत-(1) शुद्धभौतिक या अजैविक परिवेश जिसमें वह विद्यमान है, जैसे भौगोलिक स्थिति, जलवायुगत दशाओं और भू-स्थल का समावेश है, (2) कार्बनिक या जैविक परिवेश जिसके अंतर्गत और जीवित कार्बनिक पदार्थ और सभी जीवधारियों, विशेषतः जनसंख्या जिसका जीवधारी है, सहित किसी क्षेत्र में पौधों एवं जानवरों का समावेश है।

इंटरनेशनल एनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ सोशियल साइंसेज (1986) के अनुसार पर्यावरण को जीवन और एक सावयव के विकास को प्रभावित करने वाली सभी बाह्य दशाओं और प्रभावों की समग्रता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है"।

कैंब्रिज एनसाइक्लोपीडिया (1990) के मतानुसार किसी स्थान की वे परिस्थितियां जिनमें एक जीवधारी रहता है, पर्यावरण है।

डगलस व हॉलैंड के अनुसार पर्यावरण शब्द का प्रयोग उन सभी बाह्य शक्तियों, प्रभावों तथा दशाओं के सामूहिक रूप से वर्णन करने हेतु किया जाता है जो जीवित प्राणियों के जीवन, व्यवहार, बुद्धि, विकास और परिपक्वता का प्रभाव डालते हैं। पर्यावरण पर पर्यावरण के लिए की गई पत्रकारिता पर्यावरण पत्रकारिता कहलाती है। जब पर्यावरण में पर्यावरण के प्रतिकूल घटनाएं घटित होती हैं, जिससे पर्यावरण को क्षति होती

है तथा पर्यावरण में रहने वाले मनुष्यों और जीव जंतुओं का जीवन भी प्रभावित होता है। तब मीडिया उससे अखबार या न्यूज़ चैनल या किसी अन्य माध्यम से लोगों तक उस घटना की पूरी जानकारी पहुंचाती है, वह पर्यावरण पत्रकारिता कहलाती है। समस्त विश्व में समय-समय पर ऐसी घटनाएं घटित होती आई हैं और हो रही हैं जिससे पर्यावरण प्रभावित होता है।

चाणक्य ने कहा था कि, साम्राज्य की स्थिरता पर्यावरण की स्वच्छता पर निर्भर करती है। औषधि विज्ञान के गुरु चरक ने स्वस्थ जीवन के लिए स्वच्छ वायु, जल तथा देश को आवश्यक कारक बताया है। पुराने समय में पर्यावरण को स्वच्छ बनाने के लिए प्रजा और राजा समान रूप से प्रयत्नशील रहते थे, पर्यावरण को स्वच्छ रखना राजा और प्रजा दोनों का मूल कर्तव्य होता था किन्तु आज की इस भौतिकतावादी, आधुनिकतावादी युग में मनुष्य अपने आपको सर्वश्रेष्ठ घोषित करने की होड़ में, अपने आराम और विलासिता हेतु पर्यावरण से निरंतर खिलवाड़ कर रहा है। संसाधनों का दोहन करना उसकी आदत बन गयी है। यह आज की बात नहीं है, उपभोक्तावाद की प्रथम लहर प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति (1991) पर डिब्बा बंद खाद्य सामग्री, कारों और प्लास्टिक के रंग-बिरंगे सामान के साथ आई और दूसरे विश्व युद्धकी विदाई (1946) के साथ तीव्र गति को प्राप्त हो गयी।

विश्व में वर्ष 1950 से 2000 तक अधिकांश यूरोपीय देशों की औसत आय में वृद्धि हुई लोगों की जीवन शैली में बदलाव आए, मानव और अधिक शक्तिशाली हो गया, मानव के विकास के साथ साथ उपभोक्तावाद तथा साथ ही पर्यावरण प्रदूषण में भी कई गुना वृद्धि हुई है। लगभग सारे एशिया में आजकल डिब्बा बंद खाद्य सामग्री, कृत्रिम पेय पदार्थो, शराब, सिगरेट, प्लास्टिक निर्मित डिस्पोजल क्रोकरी, नेपकिन कलर टीवी, चार पहिया वाहन से प्रदूषण दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। सामान्यतः तीन चार सौ वर्ष पहले यूरोप में जो औद्योगिक क्रांति हुई उसने एक नयी सभ्यता को जन्म दिया। उसी को आज हम सभ्यता मानते हैं। इस सभ्यता ने जीवन और प्रकृति के प्रति मनुष्य के दृष्टिकोण में एक बुनियादी परिवर्तन कर दिया। विज्ञान ने कई आविष्कार करके मानव जीवन को अति आधुनिक और सरल बनाया है। उदाहरण के तौर पर भाप के इंजन ने मनुष्य के हाथ में आसाधरण शक्ति दे दी। इस शक्ति का प्रयोग करके प्रकृति के साथ व्यवहार करने का उसका जो रिश्ता था, वह बिल्कुल बदल गया है। [1]अब प्रकृति उसके लिए संसाधन मात्र रह गयी और वह संसाधन का स्वामी बन गया।

ऊंची-ऊंची इमारतों का निर्माण कर, पेड़ों को काटकर, फैक्ट्री का निर्माण करके आधुनिकता की होड़ में आगे तो हुआ ही है किन्तु इसके चलते उसने वातावरण को बहुत दूषित किया है। ऑक्सीजन गैस जो मानव जीवन के लिए अति आवश्यक है उसकी मात्रा भी वातावरण से निरंतर घटती जा रही है। आज हम सामान्य जीव मण्डल में नहीं, अपितु एक तकनीकी-मण्डल में रह रहे हैं। इस तकनीकी-मण्डल की ऑक्सीजन की आवश्यकताएँ दुनिया के सभी जीवधारियों की ऑक्सीजन की आवश्यकता से पन्द्रह गुना अधिक है।[2]

पर्यावरण पत्रकारिता से तात्पर्य यह भी है कि आम जन जीवन को या आम लोगों को पर्यावरण से संबंधित उन मुद्दों तथा पर्यावरण में घटित हो रही, घटित हो सकने वाली उन घटनाओं से अवगत कराना है जो आम जन जीवन को प्रभावित करते हैं। इस धरती पर न जाने अब कितनी सभ्यताएं उदित और नष्ट हुई हैं, इसका ब्यौरा भी अभी तक मनुष्य नहीं ढूंढ पाया है। पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरण प्रबंधन, पर्यावरणीय जागरूकता, पर्यावरण शिक्षा में व्यापक चेतना लाने में मीडिया भी उल्लेखनीय भूमिका निभा सकता है। मीडिया से अपेक्षा की जाती है कि वे वैश्विक, क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर सम्पन्न होने वाली पर्यावरणीय घटनाओं, समाचारों और सूचनाओं को जनसामन्य तक इस ढंग से पहुंचाए कि वे तथ्यों का सही विश्लेषण कर अपनी राय बना सकें। मीडिया का लक्ष्य पर्यावरणीय समस्याओं के निराकरण के उद्देश्य से व्यक्ति को समझ, विवेक, व्यावहारिक ज्ञान, कौशल प्रदान करना होना चाहिए। व्यक्ति, समाज, देश एवं राष्ट्र में पर्यावरण के प्रति न केवल जागरूकता, चेतना एवं रुचि जागृत करना चाहिए , बल्कि पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्रेरित भी करना चाहिए।

1. पर्यावरण की रक्षा का संकल्प

2.2. विश्व में पर्यावरण पत्रकारिता के मुद्दे: विश्व में पर्यावरण पत्रकारिता का इतिहास आज का नहीं बल्कि सदियों पुराना है। मानव का निरंतर प्रकृति के कामों में हस्तक्षेप के कारण प्रकृति का संतुलन बिगड़ता है। जिसका परिणाम उसे भयंकर प्राकृतिक आपदाओं के रूप में भुगतना पड़ता है, जो उसकी स्वयं की पैदा की हुई होती है। जिससे भयंकर तबाही होती है। जनजीवन भी बुरी तरह से प्रभावित होता है और वह परिवेश जहां थोड़ी देर पहले जीवन होता है वहाँ सदियों तक जीवन की कोई किरण नहीं दिखाई देती है। ऐसी भयंकर तबाही मचाने वाली प्राकृतिक आपदाओं में मुख्यतः हैं-

भूकंप

सुनामी

ग्लोबल वार्मिंग

ओजोन परत में छेद होना

इन प्राकृतिक आपदाओं से पर्यावरण को होने वाले नुकसान को जानने के लिए इनके बारे में विस्तार से समझना होगा।

- **भूकंप-**

जब पृथ्वी की ऊपरी परत में अचानक कंपन्न उत्पन्न होता है तब उस स्थिति को भूकंप कहते हैं। वैज्ञानिक भाषा में कहें तो पृथ्वी की बाहरी परत में अचानक हलचल से ऊर्जा के परिणाम स्वरूप को कहते हैं। यह ऊर्जा पृथ्वी की सतह पर, भूकम्पी तरंगे उत्पन्न करता है, जो भूमि को हिलाकर यह ऊर्जा या विस्थापित करके प्रकट होता है। भूगर्भ में भूकंप के उत्पन्न होने का प्रारम्भिक बिन्दु को केंद्र पृथ्वी की सतह पर, भूकम्पी तरंगे उत्पन्न करता है, जो भूमि को हिलाकर या विस्थापित करके प्रकट होता है। भूगर्भ में भूकंप के उत्पन्न होने का प्रारम्भिक बिन्दु को केंद्र या हाईपो सेंटर कहा जाता है। हाईपो सेंटर के ठीक ऊपर ज़मीन के सतह पर जो बिन्दु है उसे अधिकेन्द्र कहा जाता है। भूकम्पी तरंगे मूलतः तीन प्रकार की होती हैं।

प्राइमरी तरंग

सेकंडरी तरंग

सतही तरंग

भूकंप अपने साथ एकएक भयंकर विनाश लाता है, और हंसते खेलते जीवन का दृश्यलेख ही पलट कर रख देता है।

भूकंप के कारण-

भूकम्प प्रकृति द्वारा घटित घटना है या मानवजनित कारणों से भी हो सकता है। अक्सर भूकंप भूगर्भीय दोषों (पृथ्वी के अंदर के दोष) के कारण आते हैं। भारी मात्रा में गैस प्रवास, पृथ्वी के भीतर मुख्यत: गहरी मीथेन, जवालामुखी, भूस्खलन और नाभकीय परीक्षण ऐसे मुख्य दोष हैं।

वैज्ञानिक भाषा में ज़्यादातर भूकंप रूपांतरित या फिर अभिकेंद्रित सीमाओं पर होती हैं। रूपांतरित सीमाओं पर दो प्लेट एक दूसरे को घिसकर जाते हैं। इस घर्षण के कारण दो प्लेट की सीमाओं पर तनाओं उत्पन्न होता है। इस तनाव के बढ़ते बढ़ते ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है जब भूगर्भीय पत्थर इस तनाव को झेल न पाने के कारण अकस्मात टूट जाते हैं। तनाव ऊर्जा का अचानक बाहर आना ही भूकंप को जन्म देता है।

भूकंप के प्रभाव-

झटके और भूमि का फटना भूकंप के मुख्य प्रभाव हैं, जो मुख्य रूप से इमारतों व अन्य कठोर संरचनाओं को कम या अधिक गंभीर नुकसान पहुंचाती है। भूमि का फटना प्रमुख अभियांत्रिकी संरचनाओं जैसे बांधों , पुल (bridges) और परमाणु शक्ति स्टेशनों के लिए बहुत बड़ा जोखिम है, सावधानीपूर्वक इनमें आए दोषों या संभावित भू स्फतन को पहचानना बहुत जरुरी है।

भूकंप, भूस्खलन और हिमस्खलन पैदा कर सकता है, जो पहाड़ी और पर्वतीय इलाकों में क्षति का कारण हो सकता है। एक भूकंप के बाद, किसी लाइन या विद्युत शक्ति के टूट जाने से आग लग सकती

है। यदि जल का मुख्य स्रोत फट जाए या दबाव कम हो जाए, तो एक बार आग शुरू हो जाने के बाद इसे फैलने से रोकना कठिन हो जाता है।

मिट्टी अनुपजाऊ होना-

मिट्टी अनुपजाऊ तब हो जाती है जब झटकों के कारण जल संतृप्त दानेदार पदार्थ अस्थायी रूप से अपनी क्षमता को खो देता है और एक ठोस से तरल अवस्था में बदल जाता है। [3]

विश्व के दस भयावह भूकंप-

विश्व में कई ऐसे भूकंप आए जिसने क्षण भर में सारा परिदृश्य बदल का रख दिया। ऐसे कुछ प्रमुख भूकंप निम्नलिखित हैं-

- **23 जनवरी 1556 (सांक्सी प्रांत चीन)**

इतिहास में कैजुयलिटी के लिहाज से अबतक का सबसे खतरनाक भूकंप चीन के सांक्सी प्रांत में 23 जनवरी 1556 में आया था। रिक्टर स्केल पर 8 तीव्रता वाले इस भूकंप से 520 मील तक का इलाका तबाह हो गया। इस भूकंप की वजह से ऐसा भूस्खलन हुआ जिसकी वजह से करीब 8 लाख 30 हज़ार लोगों की मौत हुई।

- **22 मई 1960 (चिल्ली)**

चिली के वाल्डिविया में रिक्टर स्केल पर 9.5 तीव्रता वाले इस भूकंप ने भारी तबाही मचाई थी। कहते हैं कि इस भूकंप की ताकत 1 हजार एटम बम के बराबर थी। इसका असर वाल्डिविया से लेकर हवाई द्वीप तक था। इसमें 6 हजार से ज्यादा लोगों की मौत हुई थी, जबकि लाखों लोग बेघर हो गए थे।

- **1 सितम्बर 1923 (टोक्यो)**

जापान की राजधानी टोक्यो में आया ग्रेट कांटो भूकंप। इसकी वजह से 142,800 लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा।

- **26 जनवरी 2001 (गुजरात, भारत)**

भारत के गुजरात राज्य में रिक्टर स्केल पर 7.9 तीव्रता का एक शक्तिशाली भूकंप आया। इसमें कम से कम 30 हज़ार लोग मारे गए और क़रीब 10 लाख लोग बेघर हो गए। भुज और अहमदाबाद पर भूकंप का सबसे अधिक असर पड़ा।

- **31 मई 1935 (क्वेटा, पाकिस्तान)**

क्वेटा और उसके आसपास के इलाक़ों में आए ज़बरदस्त भूकंप में लगभग 35 हज़ार लोगों की जानें गईं।

- **8 अक्तूबर 2005 (पाकिस्तान)**

पाकिस्तान में 7.6 तीव्रता वाला भीषण भूकंप आया, जिसमें करीब 75 हज़ार लोग मारे गए। करीब 35 लाख लोग बेघर हुए थे।

- **26 दिसंबर 2004 (श्रीलंका, फिलीपींस व दक्षिणी भारत)**

भूकंप के कारण पैदा हुईं सुनामी लहरों ने एशिया में 2 लाख 30 हजार लोगों की जान ले ली थी। 8.9 तीव्रता वाले इस भूकंप के कारण लाखों लोग बेघर हो गए थे।

- **26 दिसंबर 2003 (ईरान)**

दक्षिणी ईरान में आए भूकंप में 26 हज़ार से अधिक लोगों की मौत हो गई थी।

- **21 जून 1990 (गिलान, ईरान)**

ईरान के उत्तरी राज्य गिलान में आए भूकंप ने 40 हज़ार से भी अधिक लोगों की जान ले ली थी।

- **17 अगस्त 1999 (इमिट, इस्तांबुल व तुर्की)**

तुर्की के इमिट और इंस्ताबुल शहरों में रिक्टर स्केल पर 7.4 तीव्रता का भूकंप आया। इस भूकंप की वजह से 17 हज़ार से अधिक लोग मारे गए और हज़ारों अन्य घायल हुए।

- **28 जुलाई 1976 (तांगशान,चीन)**

चीन का तांगशान शहर 7.8 तीव्रता वाले भूकंप की वजह से मिट्टी में मिल गया इसमें 5 लाख से अधिक लोग मारे गए थे।[4]

- **सुनामी-**

समुद्र में आने वाले तूफान को जापानी भाषा में सुनामी कहते हैं। सुनामी यानी बन्दरगाह के निकट की लहर। ये लहरें बहुत लंबी होती हैं। समुद्र में आने वाली लहरों की चौड़ाई सैंकड़ों किलोमीटर तक होती है,यानी की लहरों के निचले हिस्सों के बीच का यह फ़ासला सैकड़ों किलोमीटर का होता है, पर जब ये समुद्र तट के पास आती हैं, तो लहरों का निचला हिस्सा ज़मीन को छूने लगता है, इनकी गति कम हो जाती है और ऊँचाई बढ़ जाती है। ऐसी स्थिति में जब ये तट से टक्कर मारती हैं तो तबाही होती है। गति 420 किलोमीटर प्रति घण्टा तक और ऊँचाई 10 से 18 मीटर तक। यानी खारे पानी की चलती दीवार। अक्सर समुद्री भूकम्पों की वजह से ये तूफ़ान पैदा होते हैं। प्रशान्त महासागर में बहुत आम हैं, पर बंगाल की खाड़ी, हिन्द महासागर व अरब सागर में नहीं। इसीलिए शायद भारतीय भाषाओं में इनके लिए विशिष्ट नाम नहीं है।

सुनामी के कारण- सुनामी जल में आए तूफान के कारण उत्पन्न होती है। सुनामी लहरों की ऊंचाई समुद्र तल में आई विकृति के परिमाण पर निर्भर करती है। जल राशि का विस्थापन जितना खड़ा होगा सुनामी लहरों की ऊंचाई भी उतनी ही अधिक होती है।

भूकंप से मुक्त हुई ऊर्जा समुद्र के पानी को सामान्य स्तर से ऊपर उठाकर स्थितिज ऊर्जा में बदल कर समुद्र के पानी में ही समाहित हो जाती है। यह स्थितिज ऊर्जा सुनामी तरंगों के उत्पन्न होने से गतिज

ऊर्जा में बदल जाती है और ये ही ऊर्जा इन तरंगों को आगे प्रसारित करती हैं एवं भयंकर सुनामी तरंगों में तब्दील करते हैं।

सुनामी की उत्पत्ति के लिए भूकंप ही एकमात्र कारण नहीं है। कोई भी विक्षोभ जो जल की विपुल मात्रा को अपनी साम्यावस्था से विस्थापित करने की क्षमता रखता है, सुनामी का कारण बन सकता है। भूकंप या ज्वालामुखी के दब जाने के कारण अंतः समुद्री भूस्खलन, ऊपरी जल स्तंभ में हलचल पैदा कर सुनामी का कारण बनते हैं। अंतःसमुद्री ज्वालामुखी विस्फोट की प्रचंड ऊर्जा भी जल स्तंभ को ऊपर उठा कर सुनामी उत्पन्न कर सकती है।

जापान में आई सुनामी- अमेरिकी भूगर्भ सर्वे की तरफ से इस भूकंप की तीव्रता 7.9 बताई गयी जिसका केंद्र ज़मीन से 15.1 मील नीचे बाते गया। बाद में भूकंप की तीव्रता 8.8 पाई गयी। जापान में भूकंप आम बात है। दुनिया में आने वाले भूकंप का 20 प्रतिशत जापान में ही आते हैं जिसकी तीव्रता रिक्टर सकाले पर अक्सर 6 या उससे ज़्यादा होती है। जापान का पूर्वोत्तर प्रशांत तट सानरिकु अक्सर भूकंप और सुनामी झेलता रहता है। [5]

- **ग्लोबल वार्मिंग-**

ग्लोबल वार्मिंग आज पूरे विश्व के लिए एक पर्यावरणीय और सामाजिक और पर्यावरणीय और वायुमंडलीयमुद्दा बना हुआ है। आसान शब्दों में समझे तो ग्लोबल वार्मिंग का अर्थ है पृथ्वी के तापमान में वृद्धि और एसके कारण मौसम में होने वाले परिवर्तन। पृथ्वी के तापमान में हो रही इस वृद्धि के परिणाम स्वरूप बारिश के तरीकों में बदलाव, हिमखंडों और ग्लेशियरके पिघलने, समुद्र के जलस्तर में वृद्धि और वनस्पति तथा जन्तु जगत पर प्रभावों के रूप में सामने आ सकते हैं।

वैश्विक तापमान में वृद्धि के विविध कारण (ग्लोबल वार्मिंग)- वर्तमान समय में तापमान-वृद्धि, वातावरण परिवर्तन तथा प्राकृतिक आपदाओं की बढी हुई मात्रा विश्व अनुभव कर रहा है।

आध्यात्मिक शोध के अनुसार तापमान-वृद्धि (ग्लोबल वार्मिंग) का मूल कारण है, ब्रह्मांड में निर्धारित कालावधि के उपरांत होनेवाले चक्रीय परिवर्तन। वैश्विक तापमान-वृद्धि (ग्लोबल वार्मिंग) के जो परिणाम आज तक हमने अनुभव किए हैं, वास्तव में वह एक विध्वंसक आपात्काल का प्रारंभ है, जिस की तीव्रता आगामी 5-10 वर्षों में और भी बढ़ेगी। मनुष्य द्वारा प्रकृति के साथ अनुचित व्यवहार करने से चक्रीय परिवर्तनों का यह विध्वंसक स्वरूप और भी बिगड़ सकता है। मनुष्य अपनी घटती आध्यात्मिक चेतना के कारण अनिष्ट शक्तियों के प्रभाव से सुरक्षा प्राप्त करने की क्षमता खो बैठा है।

परिणाम- पिछले एक दशक से हम पूरे विश्व में प्राकृतिक आपदाओं की तीव्रता में वृद्धि होते देख रहे हैं। कभी प्रसार माध्यमों द्वारा तथा हममें से कुछ ने प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा प्रकृति के इस भयावह सामर्थ्य को अनुभव किया है। कुछ समय पूर्व दक्षिण-पूर्वी एशिया एवं जापान में आई सुनामी, पाकिस्तान, हैती तथा चीन में हुए भूकंप, साथ ही कटरिना एवं उत्तर और मध्य अमरीका में आई अन्य चक्रवात आदि द्वारा हुए प्राकृतिक संकट देखे हैं। इन की तीव्रता के कारण हुआ अभूतपूर्व विध्वंस तथा जन-हानि हमारे मन पर अंकित हो गई है। विश्वविख्यात वैज्ञानिक संस्थानों ने भी इस बात का स्वीकार किया है कि पृथ्वी का तापमान बढता जा रहा है।

IPCC जो कि संयुक्त राष्ट्रसंघ की मौसम परिवर्तन संबंधी समिति है, उस ने 2008 में कहा है कि पिछली शताब्दी में पृथ्वी का तापमान तीन चौथाई सेल्सियस बढ गया है। इसमें भी वैश्विक तापमान में अधिकांश वृद्धि (ग्लोबल वार्मिंग) पिछले कुछ दशकों में हुई है। कुछ राष्ट्रीय वैज्ञानिक संस्थान दावा करते हैं कि मानवीय गतिविधियां ही पिछले कुछ दशकों में हुई तापमान-वृद्धि के लिए अधिक मात्रा में उत्तरदायी हैं। आधुनिक वैज्ञानिक दावा करते हैं कि प्रतिवर्ष मानवीय गतिविधियों से वातावरण में मुक्त होने वाली लाखों टन ग्रीनहाऊस गैस के कारण यह सब हो रहा है।[6]

- **ओज़ोन परत में छेद होना-**

सूर्य से निकलने वाली उच्च ऊर्जा पराबैंगनी रेडिएशन द्वारा पृथ्वी के वायुमण्डल में 3 सूक्ष्म अणुओं से ओज़ोन परत बनी है। इस प्रकार से बनने वाली लगभग 90 प्रतिशत ओज़ोन पृथ्वी की सतह से 10 से 50 किलोमीटर के बीच रहती है जिसे समतापमण्डल कहते हैं।

वैज्ञानिक मानते है कि ओजोन परत के मामले में इंसान प्रदूषण फैलाने के बाद भाग्य के भरोसे रहता है। प्रदूषण के बाद आगे का काम कुदरतन होता है। ताकतवर हवाओं और बेहद ठंडे वातावरण की वजह से क्लोरीन के तत्व ओजोन परत के पास जमा होते हैं। अन्य रासायनिक तत्वों के साथ मिले क्लोरीन के अणु सूर्य की पराबैंगनी किरणों के संपर्क में आने पर टूट जाते हैं। विखंडित क्लोरीन अणु ओजोन गैस से टकरा कर उसे ऑक्सीजन में तोड़ देते हैं। विघटित रासायनिक तत्व बादलों के संपर्क में आने पर अम्ल बनाते हैं।

वैज्ञानिक मानते हैं कि प्रदूषण और मौसमी बदलावों की वजह से ओजोन परत को और ज्यादा नुकसान पहुंच सकता है। ऐसी स्थिति में दक्षिणी ध्रुव की बर्फ तेजी से गलने लगेगी।समुद्रों का जलस्तर बढ़ने लगेगा। तटीय इलाकों के डूबने से करोड़ों लोगों को विस्थापित होना पड़ेगा। ऐसा संकट समुद्री सीमा वाले देशों और उनके पड़ोसी देशों का आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक ढांचा बिगाड़ कर रख देगा। विश्व स्तर पर होने वाली इन पर्यावरणीय आपदा के लिए काफी हद तक मनुष्य ही ज़िम्मेदार है।

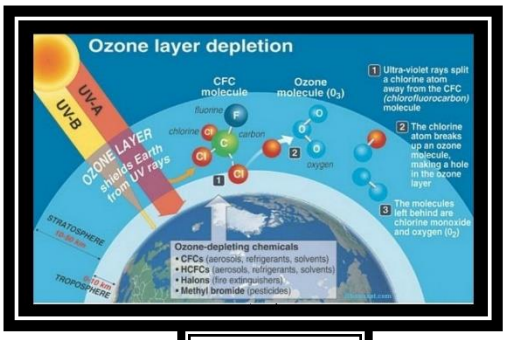

2.

2.3.भारत के संदर्भ में पर्यावरण पत्रकारिता: भारत में पर्यावरण की सुरक्षा एवं संतुलन के लिए बरसों से प्रयास किए जा रहे हैं। भारत के लोगों का आदिकाल से ही जीव-जंतुओं एवं वनस्पतियों के साथ एक गहरा संबंध रहा है। पृथ्वी पर जीवन का आधार ही पर्यावरण है। प्रकृति के कोप से मनुष्य हमेशा से ही परिचित रहा है। पहले इन प्राकृतिक आपदाओं के लिए ज़्यादातर प्रकृति ही जिम्मेदार रहती थी। किन्तु आज मानव ने प्रकृति के कार्य में हस्तक्षेपकर पर्यावरण को प्रदूषित किया है और आज मनुष्य इन प्राकृतिक आपदाओं के लिए प्रकृति से ज़्यादा जिम्मेदार है। भारत के अनेक बुद्धिजीवियों ने पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए एकजुट होने की बात कही जिसमें महात्मा गांधी का नाम प्रमुख है। पर्यावरण संरक्षण के तहत 1972 से ही विश्व के विभिन्न देशों में पर्यावरण सम्मेलन आयोजित किए गएजिनके अंतर्गत पर्यावरण की समस्याओं पर अनेक चर्चाएं हुई और समस्याओं से निपटने के लिए अनेक संस्थाएं बनाई गईं। पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से 1972 का वर्ष भारत के लिए भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है।[7]

भारत के इतिहस में पर्यावरण से संबंधित ऐसे कई आंदोलन और संकट हुए हैं जिसने सबको सोचने पर मजबूर कर दिया वह निम्नलिखित हैं-

- चिपको आंदोलन
- नर्मदा बचाओ आंदोलन
- बीज बचाओ आंदोलन
- चिल्का आंदोलन
- साइलेंट वैली आंदोलन
- लातूर जल संकट
- टिहरी बांध परियोजना
- गंगा एक्शन प्लान
- पेरिस जलवायु समझौता

- **चिपको आंदोलन-**

चिपको आंदोलन पर्यावरण रक्षा के लिए किया गया आंदोलन है। यह आंदोलन भारत के उत्तराखंड राज्य किसाने ने वृक्षों की कटाई के विरोध में किया था। वे राज्य के वन्य विभाग के ठेकेदारों द्वारा वनों की कटाई का विरोध कर रहे थे और उनपर अपना परंपरागत अधिकार जता रहे थे। यह आंदोलन तत्कालीन उत्तर प्रदेश के चमोली जिले में सन् 1983 में प्रारम्भ हुआ। एक दशक के अन्दर यह पूरे उत्तराखण्ड क्षेत्र में फैल गया। चिपको आंदोलन की एक मुख्य बात थी कि इसमें स्त्रियों ने भारी संख्या में भाग लिया था। इस आंदोलन की शुरुआत भारत के प्रसिद्ध पर्यावरणविद् सुन्दरलाल बहुगुणा, चण्डीप्रसाद भट्ट तथा श्रीमती गौरादेवी के नेत्रत्व मे हुई थी:

चिपको आंदोलन के घोषवाक्य थे-

क्या हैं जंगल के उपकार, मिट्टी, पानी और बयार।

मिट्टी, पानी और बयार, जिन्दा रहने के आधार।

इस आंदोलन की मुख्य उपलब्धि यह रही कि इसने केंद्रीय राजनीति के एजेंडे में पर्यावरण को एक सघन मुद्दा बना दिया था। यहाँ तक कि केंद्र सरकार में पर्यावरण मंत्रालय का गठन भी चिपको की वजह से ही संभव हो पाया।

उत्तराखण्ड में इस आंदोलन ने 1980 में तब एक बड़ी जीत हासिल की,जब तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी ने प्रदेश के हिमालयी वनों में वृक्षों की कटाई पर 15 वर्षों के लिए रोक लगा दी। बाद के वर्षों में यह आंदोलन पूर्व में बिहार, पश्चिम में राजस्थान, उत्तर में हिमाचल प्रदेश, दक्षिण में कर्नाटक और मध्य भारत में विंध्यतक फैला गया था। उत्तर प्रदेश में प्रतिबंध के अलावा यह आंदोलन पश्चिमी घाट और विंध्य पर्वतमाला में वृक्षों की कटाई को रोकने में सफल रहा। साथ ही यह लोगों की आवश्यकताओं और पर्यावरण के प्रति अधिक सचेत प्राकृतिक संसाधन नीति के लिए दबाब बनाने में भी सफल रहा।[8]

- **नर्मदा बचाओ आंदोलन-**

नर्मदा बचाओ आंदोलन भारत में चल रहे पर्यावरण आंदोलनों की परिपक्वता का जीवंत उदाहरण है। इसने पहली बार पर्यावरण तथा विकास के संघर्ष को राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय बनाया जिसमें न केवल विस्थापित लोगों बल्कि वैज्ञानिकों, गैर सरकारी संगठनों तथा आम जनता की भी भागीदारी रही। नर्मदा नदी पर सरदार सरोवर बांध परियोजना का उदघाटन सन् 1961 में पंडित जवाहर लाल नेहरू ने किया था। लेकिन तीन राज्यों गुजरात मध्य प्रदेश तथा राजस्थान के मध्य एक उपयुक्त जल वितरण नीति पर कोई सहमति नहीं बन पायी।

सन् 1969 में, सरकार ने नर्मदा जल विवाद न्यायधिकरण का गठन किया ताकि जल संबंधी विवाद का हल करके परियोजना का कार्य शुरु किया जा सके। सन् 1979 में न्यायधिकरण सर्वसम्मति पर पहुँचा तथा नर्मदा घाटी परियोजना ने जन्म लिया जिसमें नर्मदा नदी तथा उसकी 4134 नदियों पर दो विशाल बांधों गुजरात में सरदार सरोवर बांध तथा मध्य प्रदेश में नर्मदा सागर बांध 28 मध्यम बांध तथा 3000 जल परियोजनाओं का निर्माण शामिल था।

सन् 1985 में इस परियोजना के लिए विश्व बैंक ने 450 करोड़ डॉलर का लोन देने की घोषणा की सरकार के अनुसार इस परियोजना से मध्य प्रदेश, गुजरात तथा राजस्थान के सूखा ग्रस्त क्षेत्रों की 2.27 करोड़ हेक्टेयर भूमि को सिंचाई के लिए जल मिलेगा, बिजली का निर्माण होगा, पीने के लिए जल मिलेगा तथा क्षेत्र में बाढ़ को रोका जा सकेगा। नर्मदा परियोजना ने एक गंभीर विवाद को जन्म दिया है। एक ओर इस परियोजना को समृद्धि तथा विकास का सूचक माना जा रहा है जिसके परिणाम स्वरूप सिंचाई, पेयजल की आपूर्ति, बाढ़ पर नियंत्रण, रोजगार के नये अवसर, बिजली तथा सूखे से बचाव आदि लाभों को प्राप्त करने की बात की जा रही है वहीं दूसरी ओर अनुमान है कि इससे तीन राज्यों की 37000 हेक्टेयर भूमि जलमग्न हो जाएगी जिसमें 13000 हेक्टेयर वन भूमि है।

यह भी अनुमान है कि इससे 248 गांव के एक लाख से अधिक लोग विस्थापित होंगे। जिनमें 58 प्रतिशत लोग आदिवासी क्षेत्र के हैं। इस प्रक्रिया में नर्मदा बचाओ आंदोलन ने विकास के मॉडल पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है।[9]

- **बीज बचाओ आंदोलन-**

बीज बचाओ आंदोलन परंपरागत बीजों की विलुप्त होती प्रजातियों के संरक्षण तथा व्यावसायिक हितों के लिए कुछ विशेष प्रकार के बीजों और पौधों को बोने के विरोध में हुआ। सन् 1990 में कुछ गांधीवादी कार्यकर्ताओं ने जैसे की धुमसिंह नेगी, कुंवरप्रशुन तथा विजय जरधारी द्वारा टिहरी गढ़वाल क्षेत्र के हेवलघाटी इलाके में हुआ। इस आंदोलन के जरिए चावल की लगभग 200 क़िस्मों, राजमा की 150 क़िस्मों तथा बीजों की कई प्रजातियों को लुप्त होने से बचाया गया।[10]

- **चिल्का आंदोलन-**

चिल्का उड़ीसा में स्थित एशिया की सबसे बड़ी खारे पानी की झील है जिसकी लम्बाई 72 कि.मी. तथा चौड़ाई 25 कि.मी. और क्षेत्रफल लगभग 1000 वर्ग कि.मी. है। चिल्का 158 प्रकार के प्रवासी पक्षियों तथा चीते की व्यापारिक रूप से महत्त्वपूर्ण प्रजातियों का निवास स्थान है। यह 192 गांवों की आजीविका का भी साधन है जो मत्स्यपालन खासकर झींगा मछली पर निर्भर हैं। 50,000 से अधिक मछुआरे तथा दो लाख से अधिक जनसंख्या अपनी आजीविका के लिए चिल्का पर निर्भर है। मछली पालन तो कई शताब्दियों से चिल्का क्षेत्र का परम्परागत पेशा है। मछुआरों को यहाँ मछली पालन का अधिकार अफगानी शासन के समय से प्राप्त है। यहाँ तक कि बिट्रिश शासन में भी मछुआरों के अधिकारों की रक्षा मछुआरों के संघस्थापित कर की गई। अत: चिल्का का प्राचीन समय से मछली उत्पादन, सहकारिता तथा ग्रामीण लोकतंत्र का एक विशेष तथा प्रेरक इतिहास रहा है।

सन् 1977-78 का वर्ष झींगा मछली के उत्पादन तथा निर्यात के विकास का एक महत्त्वपूर्ण वर्ष था। चिल्का झींगा मछली तथा पैसे का पर्यायवाची शब्द बन गया था। पूरे क्षेत्र को सोने की खान से आंका जाने लगा। इस परिवर्तन से यहाँ पर व्यापारिक आक्रमण दिखाई देने लगा। पहले व्यापारी तथा बिचौलिए फिर राजनीतिज्ञों तथा उड़ीसा के व्यापारिक तथा औद्योगिक घरानों में राज्य सरकार की कृपा से विकास के नाम पर इस क्षेत्र को हथियाने की होड़ लग गई।

सन् 1986 में, तत्कालीन जे.बी. पटनायक सरकार ने निर्णय लिया कि चिल्का में 1400 हेक्टेयर झींगा प्रधान क्षेत्र को टाटा तथा उड़ीसा सरकार की संयुक्त कम्पनी को पट्टे पर दिया जाएगा। उस समय इस

निर्णय का विरोध मछवारों के साथ-साथ विपक्षी राजनीतिक पार्टी जनता दल ने भी किया। जिसके कारण जनता दल को विधानसभा की सभी पांचों सीटें जीतने में मदद मिली। लेकिन 1989 में जनता दल के सत्ता में आने पर स्थिति फिर बदल गई। इस घटना ने राजनीतिक दलों की दोहरी भूमिका तथा आर्थिक शक्तियों के किसी भी राजनीतिक दल में पैठ लगाने की शक्ति को स्पष्ट किया।

सन् 1991 में जनता दल की सरकार ने चिल्का के झींगा प्रधान क्षेत्र के विकास के लिए टाटा कंपनी को संयुक्त क्षेत्र कंपनी बनाने के लिए आंमत्रित किया। सरकार ने 50000 मछुआरों तथा दो लाख लोगों के हितों के बारे में जरा भी नहीं सोचा जो कई सदियों से अपने जीवन निर्वाह के लिए चिल्का पर निर्भर थे। सरकार ने इस प्रक्रिया द्वारा पर्यावरण को होने वाले नुकसान की भी परवाह नहीं की।

इस प्रकार सन् 1991 में एक संघर्ष ने जन्म लिया। चिल्का के 192 गांवों के मछुआरों ने 'मत्स्य महासंघ' के अंतर्गत एकजुट होकर अपने अधिकारों की लड़ाई शुरू की। इस संघर्ष में उनका साथ उट्टकल विश्वविद्यालय के छात्रों ने भी दिया। 15 जनवरी, सन् 1992 में गोपीनाथपुर गांव में यह संघर्ष जन आंदोलन में तब्दील हो गया। 'चिल्का बचाओ आंदोलन' ने विकास के उस प्रतिमान के विरुद्ध संघर्ष किया जिससे क्षेत्रीय पर्यावरण, विकास तथा लोगों की आजीविका को खतरा था।

सन् 1992 में 192 गांवों के लोग आजीविका के अधिकार बनाम डॉलर के विरोध में मुख्यमंत्री बीजू पटनायक से मिले। लेकिन काफी समय के बाद भी सरकार की तरफ से काई सकारात्मक जबाब नहीं मिला। अत: चिल्का क्षेत्र की समस्त जनता ने उट्टकल विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा गठित संगठन 'क्रांतिदर्शी युवा संगम' के सहयोग से उस बांध को तोड़ना शुरू किया जो चिल्का के अंदर टाटा ने बनवाया था। इस जनआंदोलन को देखते हुए अंतत: उड़ीया सरकार ने दिसम्बर, 1992 को टाटा को दिये गये पट्टे के अधिकार को रद्द कर दिया। इस प्रकार चिल्का बचाओ आंदोलन ने न केवल स्थानीय पर्यावरण बल्कि लोगों के परम्परागत अधिकारों को पाने में भी सफलता हासिल की।[11]

- **लातूर जल संकट-**

आज जल संकट पर्यावरण का सबसे बड़ा मुद्दा बनकर हमारे सामने खड़ा हो गया है। आज देश के कुछ हिस्सों में पानी की जो स्थिति है उससे हम सब अच्छे से परिचित हैं। आज जल संकट सिर्फ सूखे से पीड़ित किसानों की समस्या नहीं है बल्कि आज आम जीवन का भी संकट बन गया है। महाराष्ट्र का लातूर जिला

भयंकर जल संकट से गुजरने वाला जिला है। यहाँ तक की लातूर जिले के कलेक्टर पांडुरंग पोल के इलाके में धारा 144 लगानी पड़ी। कलेक्टर ने यह निर्देश सीआरपीसी की धारा 144 के तहत जारी किया है। लातूर में जल संकट को चलते पानी की मारा मारी देखते हुए सरकारी टैंकों के पास संभावित हिंसा व विवाद की स्थिति को पैदा होने से रोकने के लिए यह कदम उठाया गया है। लातूर में सरकारी टैंकरों के द्वारा हफ्ते में एक बार लोगों को पानी की आपूर्ति की जाती है। जिन 20 जगहों पर सरकारी पानी की टंकियां हैं, वहां पुलिस और प्रशासन को निर्देश दे दिया गया है और यह आदेश जारी कर दिया गया है, कि वे इन जगहों पर 5 से ज्यादा लोगों को जमा ना होने दें।

- **साइलेंट वैली आंदोलन-**

केरल की शांत घाटी 89 वर्ग किलामीटर क्षेत्र में है जो अपनी घनी जैवविविधता के लिए मशहूर है। कुंतीपूंझ नदी पर एक परियोजना के अंतर्गत 200 मेगावाट बिजली निर्माण हेतु बांध का प्रस्ताव रखा गया। केरल सरकार इस परियोजना के लिए बहुत इच्छुक थी लेकिन इस परियोजना के विरोध में वैज्ञानिकों, पर्यावरण कार्यकर्ताओं तथा क्षेत्रीय लोगों के स्वर गूंजने लगे। इनका मानना था कि इससे इस क्षेत्र के कई विशेष फूलों, पौधों तथा लुप्त होने वाली प्रजातियों को खतरा है। इसके अलावा यह पश्चिमी घाट की कई सदियों पुरानी संतुलित पारिस्थिति की को भारी हानि पहुँचा सकता है। लेकिन राज्य सरकार इस परियोजना को किसी की परिस्थिति में संपन्न करना चाहती थी।[12]

- **टिहरी बांध परियोजना-**

टिहरी शहर यहां बनाए गए बांध की झील में डूब गया है। टिहरी बांध भारत का सबसे ऊंचा बांध है और इसे यहां भागीरथी नदी पर बनाया गया है। यह भारत की एक प्रमुख नदी घाटी परियोजना हैं। टिहरी बांध दो महत्वपूर्ण हिमालय की नदियों भागीरथी तथा भीलांगना के संगम पर बना है टिहरी बांध दुनिया में उच्चतम बांधों में गिना जायेगा, टिहरी बांध करीब 260.5 मीटर ऊंचा, जो की भारत का अब तक का सबसे ऊंचा बाँध है भारत का अब तक का सबसे ऊंचा बाँध बाख्डा नागल बांध था जो करीब 226 मीटर ऊंचा था टिहरी बांध से 3,22 मिलियन घन मीटर पानी को संसय की उम्मीद है इसके जलाशय से तक़रीबन 2,70,000 हेक्टेयर भूमि की सिंचाई और तक़रीबन 346 मेगावाट बिजली की उत्पन्न की उम्मीद है इस

बांध से पूरी तरह से डूबे टिहरी शहर और 23 गांवों, जबकि 72 अन्य गांवों को आंशिक रूप से लाभ होगा। इस परियोजना का सुंदरलाल बहुगुणा तथा अनेक पर्यावरणविदों ने कई आधारों पर विरोध किया है।

इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एंड कल्चरल हैरिटेज द्वारा टिहरी बांध के मूल्याकंन की रिपोर्ट के अनुसार यह बांध टिहरी कस्बे और उसके आसपास के 23 गांवों को पूर्ण रूप से तथा 72 अन्य गांव को आंशिक रूप से जलम, न कर देगा, जिससे 85600 लोग विस्थापित हो जाएंगे। इस परियोजना से 5200 हेक्टेयर भूमि, जिसमें से 1600 हैक्टेयर कृषि भूमि होगी जो जलाशय की भेंट चढ़ जाएगी। अनेक विशेषज्ञों का मानना है कि टिहरी बांध 'गहन भूकम्पीय सक्रियता' के क्षेत्र में आता है और अगर रियेक्टर पैमाने पर 8 की तीव्रता से भूकंप आया तो टिहरी बांध के टूटने का खतरा उत्पन्न हो सकता है। अगर ऐसा हुआ तो उत्तरांचल सहित अनेक मैदानी इलाके डूब जाएंगे।

टिहरी बांध विरोधी आंदोलन ने इस परियोजना से क्षेत्र के पर्यावरण, ग्रामीण जीवन शैली, वन्यजीव, कृषि तथा लोक-संस्कृति को होने वाली क्षति की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया है। उम्मीद की जाती है कि इसका सकारात्मक प्रभाव स्थानीय पर्यावरण की रक्षा के साथ साथ विस्थापित लोगों के पुनर्वास में मानवीय सोच के रूप में देखने को मिलेगा।[13]

- **गंगा एक्शन प्लान-**

देश की प्रमुख नदियों में से एक गंगा आज लगभग पूरी तरह से प्रदूषित हो गयी है। आंकड़ों के मुताबिक वर्तमान में 50,000 से अधिक आबादी वाले 100 से अधिक शहरों का असंसाधित मल-अपशिष्ट गंगा में बहा दिया जाता है, तथा हजारों की संख्याओं में लाशों व जले अवशेषों का भी विसर्जन गंगा में कर दिया जाता है। गंगा बेसिन में भारत की लगभग 35 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रक बोर्ड द्वारा केन्द्रीय गंगा प्राधिकरण का गठन कर 1985 में गंगा एक्शन प्लान की शुरुआत की गयी। गंगा एक्शन प्लान की शुरुआत राजीव गांधी ने सन् 1985 में की।इस योजना का लक्ष्य दस लाख लीटर मल जल को रोकना था।[14]

- **पेरिस जलवायु समझौता-**

पेरिस जलवायु समझौता ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन शमन, अनुकूलन और वित्त पर किया गया समझौता है। यह समझौता 2020 से शुरू किया जाएगा। इस समझौते पर पेरिस में हुए 21वें सम्मेलन में 196 पार्टियों ने 12 दिसम्बर 2015 को आम सहमति से अपनाया था। 195 सदस्यों ने इस पर हस्ताक्षर किए और 148 ने इसकी पुष्टि भी की है। जलवायु परिवर्तन पर लगाम लगाने के लिए सबसे पहले 1992 में रियो डी जनेरियो में संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा 'पृथ्वी सम्मलेन' का आयोजन किया गया। इस सम्मलेन में यूनाइटेड नेशंस फ्रेमवर्क कन्वेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज (यूएनएफसीसी) का गठन हुआ। अभी इसमें अमेरिका सहित कुल 191 देश शामिल हैं। इन देशों के सम्मलेन को 'कांफ्रेंस ऑफ पार्टीज' (सीओपी) कहा जाता है।[15]इस समझौते के अनुसार 21वीं सदी के औसत तापमान में औद्योगिकीकरण के पूर्व के वैश्विक तापमान के स्तर में 2 डिग्री सेल्सियस से अधिक की वृद्धि नहीं होने दी जाएगी और सदस्यों द्वारा यह प्रयास किया जाएगा की वैश्विक औसत तापमान में वृद्धि को 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित रखा जाए।

3.

2.4. पर्यावरण पत्रकारिता की वर्तमान स्थिति: मीडिया का कार्य लोगों तक सूचनाओं और देश विदेश में घटित हो रही घटनाओं से अवगत कराना है। भारतीय मीडिया में अधिकतर मीडिया निजी हाथों में हैं और बड़ी कंपनीयों द्वारा नियंत्रित हैं। भारत में 70,000 से अधिक समाचार पत्र हैं, 690 उपग्रह चैनल हैं जिनमें से 80 समाचार चैनल हैं। भारत आज विश्व का सबसे बड़ा समाचार पत्र का बाज़ार है।[16]

मीडिया को लोकतन्त्र का चौथा स्तम्भ कहा गया है। जिसका उद्देश्य लोकतन्त्र को सशक्त बनाना है। वर्तमान की विडम्बना ही कहा जाएगा कि आज मीडिया अपनी इस शक्ति का प्रयोग अपने फायदे के लिए कर रहा है। जिस घटना से उसकी टी.आर.पी. बढ़ती है और उससे फायदा होता है सिर्फ उन्हीं खबरों को लोगों तक पहुंचाने का कार्य करता है। मीडिया आज लोगों के लिए मुद्दे निर्माण करने का कार्य कर रहा है। मीडिया सिर्फ यह तय करने में जुट गया है कि आज लोगों को किस बारे में सोचना है। पर्यावरण के मुद्दे आज मीडिया ने एकदम उपेक्षित कर दिए हैं क्योंकि उससे उनको फायदा नहीं होता और न ही उनके चैनल की टीआरपी बढ़ती है। विश्व पर्यावरण दिवस भी अब एक रस्म बन गया है, जिसे संभवत: विश्वभर में कुछ इस तरह मनाया जाता है कि अगले दिन सभी अखबारों में आधे से लेकर एक पन्ने में विभिन्न जगहों पर पर्यावरण दिवस मनाने की खबर होती हैं। कहीं रैलिया निकाली जाती हैं तो कहीं भाषण दिए जाते हैं और यदि इन सबका कवरेज अच्छा हो जाए तो माना जाएगा कि संस्थाओं और मीडिया ने पर्यावरण के प्रति अपने दायित्व का सही ढंग से निर्वाह कर दिया है। हमारे समाचार पत्रों में अर्थ, वाणिज्य, विदेश जैसे दैनिक पृष्ठों की तरह ही विज्ञापन, प्रौद्योगिकी और पर्यावरण को जगह नहीं मिलती? क्या दुनिया के बदलते मौसम पर इसी महीने बान में हुई गोष्ठी और दिसम्बर में होने वाले कोपेनहेगेन सम्मेलन के विस्तृत समाचार हमारे समाचार पत्रों और टीवी समाचार चैनलों में दिखाए जाएगे? जब खेल के पन्नों में गावस्कर जैसे विशेषज्ञों के लेख छप सकते हैं तो पर्यावरण पर विशिष्ट लेख छापने के लिए केवल संपादकीय पन्ने में ही जगह क्यों निकालनी पड़ती है? भारतीय संचार माध्यमों में रस्म निबाही के अलावा जैव विविधता, भू-जल संसाधनों की कमी, बरखा के पानी का संरक्षण, ऊर्जा संसाधनों पर दबाव और गैर पारंपरिक उर्जा साधनों एवं ऊर्जा संरक्षण, ओज़ोन सतह, आदि विषयों पर जानकारी नहीं के बराबर होती है।

हिन्दी और अन्य भाषाओं में अगर डिस्कवरी, नेशनल जियोग्राफ़िक, एनिमल प्लेनेट जैसे चैनल न भी चला पाए तब भी अपने 24 घंटे के समाचार और मनोरंजन के चैनलों पर काफी सारी सामग्री तो दे

ही सकते हैं। दरअसल आज जनसंचार माध्यमों का सबसे बड़ा संकट सुरुचिपूर्ण ढंग से जन चेतना संबंधी जानकारिया न दे पाने का है, जिसे पाठकों और दर्शकों की इन विषयों में दिलचस्पी न होने की बात कह कर टाल देते हैं।[17]

वर्धा में स्थित सेंटर ऑफ साइन्स फॉर विलेजेस के वर्तमान चेयरमैन और इरीगेशन डिपार्टमेंट के हेड रह चुके भरत महोदय का कहना है कि मीडिया सिर्फ मसालेदार खबरों को अपने अखबार या चैनल में जगह देता है। बाकी सारी खबरें उसके लिए शून्य होती हैं। तभी जब तक कोई बड़ी आपदा नहीं आती अर्थात् जब तक पर्यावरण को भारी क्षति नहीं होती तब तक भारतीय मीडिया कुंभकरण की भांति सोता रहता है और जब को आपदा आ जाती है तो उसके कुछ दिन हर मीडिया घराने में बस उसी आपदा के चर्चे होते रहते हैं। कुछ दिन बाद सब धुआँ हो जाता है जैसे कुछ हुआ ही न हो और आगे फिर कोई आपदा आती है तब फिर से मीडिया जाग जाता है। यही प्रक्रिया होती रहती है। सिर्फ पर्यावरण की चंद बातें और संरक्षण की चिंता में जुटे कुछ नामों के उल्लेख से मीडिया अपना दायित्व पूरा नहीं कर पाएगा।

- **कुदरत के कहर पर भी करती है मीडिया भेदभाव-**

किसी मुद्दे को ज़्यादा तवज्जो देना और किसी को कम देना यह भारतीय मीडिया की आदत बन चुकी है। फिर चाहे वह कोई भी मुद्दा हो। मीडिया को जिसमें अपना व्यावसायिक हित दिखता है, वह उसी को ज़्यादा उछालता है। 16 सितम्बर 2014 में इंडिया वॉटर पोर्टल में आनंद जोशी के छपे लेख 'कुदरत के कहर पर भी करती है मीडिया भेदभाव' में वर्ष 1902 में श्रीनगर में मीडिया को अन्य स्थानों पर आई बाढ़ के मामले में ज़्यादा फूर्तीला बताया है। इस लेख के अनुसार जम्मू-कश्मीर में पिछले 60 वर्षों की यह सबसे भयानक बाढ़ थी। वहाँ के लोगों ने झेलम का ऐसा विकराल रूप कभी नहीं देखा था। राज्य के ढाई हज़ार से अधिक गाँवों में बाढ़ ने कहर बरसाया 300 से अधिक लोगों की जान गयी। 10 लाख लोग बाढ़ से प्रभावित हुए थे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक सर्वेक्षण के बाद इस आपदा को राष्ट्रीय स्तर की आपदा घोषित कर दिया था। सेना ने बचाव व राहत कार्य तेजी से शुरू कर दिए थे।

शायद इसलिए राष्ट्रीय मीडिया ने भी कोई कसर नहीं छोड़ी। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने लगातार दस दिन तक जम्मू कश्मीर की बाढ़ की सुर्खियों में रही। जन्नत कहे जाने वाले कश्मीर में कुदरत का कहर कयामत बनकर किस तरह टूटा इसकी हक़ीक़त मीडिया ने देश को बताई। लाइव रेपोर्टिंग, जलप्लावन की

दर्दनाक तस्वीरें, पीड़ितों की आप-बीती तथा मानवीय संवेदनाओं को छूने वाले वृतांत मीडिया के जरिए देश के लोगों ने पढे, सुने और देखे। पीड़ित परिवारों के बिछुड़े लोगों को मिलाने और उनके बारे में जानकारीयां देने में मीडिया की अहम भूमिका सामने आई।

जम्मू कश्मीर की तरह उत्तरी-पूर्वी (असम, मेघालय, मणिपुर, अरुणाचल प्रदेश) राज्यों का बड़ा हिस्सा भयानक बाढ़ की ताबाही से जूझ रहा था। उत्तर-पूर्वी राज्य में बाढ़ की क्या स्थिति थी और वहाँ के लोग किन परिस्थितियों से गुज़र रहे थे। इसकी एक झलक भी 24 घंटे चलने वाले हमारे इन राष्ट्रीय कहे जाने वाले चैनलों पर नहीं दिखाई पड़ी। जो थोड़ी बहुत सूचनात्मक तौर पर जानकारियां मिली वह भी प्रिंट मीडिया के जरिए। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को हत्या, बालात्कार तथा मनोरंजक चर्चाओं से फुर्सत नहीं थी।

पर्यावरण की रक्षा के लिए पर्यावरण संरक्षण अधिनियम और प्रदूषण को रोकने के लिए केन्द्रीय प्रदूषण बोर्ड भी बना हुआ है जो इस प्रकार है-

- **पर्यावरण संरक्षण अधिनियम-**

पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 एक व्यापक विधान है। इसकी रूप रेखा केन्द्रीय सरकार के विभिन्न केन्द्रीय और राज्य प्राधिकरणों के क्रियाकलापों के समन्वयन के लिए तैयार किया गया है। जिनकी स्थापना पिछले कानूनों के तहत की गई है, जैसाकि जल अधिनियम और वायु अधिनियम। मानव पर्यावरण की रक्षा और सुधार करने एवं पेड़-पौधे और सम्पत्ति का छोड़कर मानव जाति को आपदा से बचाने के लिए ईपीए पारित किया गया। यह केन्द्र सरकार का पर्यावरणीय गुणवत्ता की रक्षा करने और सुधारने, सभी स्रोतों से प्रदूषण नियंत्रण का नियंत्रण और कम करने और पर्यावरणीय आधार पर किसी औद्योगिक सुविधा की स्थापना करना, संचालन करना निषेध या प्रतिबंधित करने का अधिकार देता है।

ईपीए की संभावना व्यापक है पर्यावरण की परिभाषा में जल, वायु, भूमि और जल, वायु, भूमि और मानव जाति के और अन्य जीवित जीव-जन्तु वनस्पति, सूक्ष्म जीव एवं सम्पत्ति के बीच मौजूद परस्पर संबंध शामिल है। कानून आपदा जनक अपशिष्ट आपदाजनक अपशिष्ट प्रबंधन और प्रचालनों संबंधी भी नियम लागू करता है। अधिनियम में संचालकों, प्राधिकृत करने की परिस्थितियां, निपटान स्थलों की

स्थितियां, आपदाजनक अपशिष्ट आयात करने के नियमों, दुर्घटनाओं की सूचना देना, पैकेजिंग और लेबलिंग अपेक्षाएं और संभावित संचालकों के लिए अपील करने की प्रक्रिया जिन्हें प्राधिकृत नहीं किया गया है, को भी पारिभाषित किया गया है। नियमों के विनिर्माण आपदाजनक और नशीले रसायनों का भण्डारण और आयात सूक्ष्म जीवों, प्रजनन रूप से इंजीनियरिंग जीवों या सेलों पर लागू किया गया है।

- **केंद्रीय प्रदूषण बोर्ड**

यह क्षेत्र निर्माण के रूप में कार्य करता है तथा पर्यावरण सुरक्षा अधिनियम, 1986 के प्रावधानों के अन्तर्गत पर्यावरण एवं वन मंत्रालय को तकनीकी सेवाएं भी उपलब्ध करता है। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के प्रमुख कार्य जल (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) अधिनियम, 1974 तथा वायु (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) अधिनियम, 1981 में व्यक्त किये गये हैं।

(1) जल प्रदूषण के निवारण एवं नियंत्रण द्वारा राज्यों के विभिन्न क्षेत्रों में कुओं और सरिताओं की स्वच्छता को सुधारना।

(2) देश में वायु प्रदूषण के निराकरण अथवा नियंत्रण, निवारण के लिए वायु गुणवत्ता में सुधार लाना।

वायु गुणवत्ता प्रबोधन वायु गुणवत्ता प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण अंग है। राष्ट्रीय वायु प्रबोधन कार्यक्रम (रा.व.प्र.का.) की स्थापना वर्तमान वायु गुणवत्ता की स्थिति और प्रवृत्ति को सुनिश्चित करने तथा उद्योगों और अन्य स्रोतों के प्रदूषण को नियमित कर नियंत्रित करने तथा वायु गुणवत्ता मानकों के अनुरूप रखने के उद्धेश्य से की गई है। यह औद्योगिक स्थापना तथा शहरों की योजना तैयार करने के लिए अपेक्षित वायु गुणवत्ता के आंकड़ों की पृष्ठभूमि भी उपलब्ध कराता है।

इसके अलावा केन्द्रीय बोर्ड का नई दिल्ली स्थित आई.टी.ओ. चौराहे पर एक स्वचालित प्रबोधन केन्द्र भी है। इस केन्द्र पर श्वसन निलम्बित विवित्त कण, कार्बन मोनो ऑक्साइड, ओजोन, सल्फर डायोक्साइड, नाइट्रोजन डाई ऑक्साइड तथा निलम्बित विवित्त कण भी नियमित रूप से प्रबोधित किये जा रहे हैं। आई.टी.ओ. की वायु गुणवत्ता पर सूचना प्रत्येक सप्ताह अद्यतन की जाती है।

स्वच्छ जल खेती-बाड़ी, उद्योग में प्रयोग के लिए वन्य जीव तथा मत्स्य पालन के प्रजनन तथा मानव के आस्तित्व के लिए एक चिर स्थाई संसाधन आवश्यक है। भारत नदियों वाला देश है। यहां 14 प्रमुख नदियों, 44 मझोली नदियों और 55 छोटी नदियों के अलावा काफी संख्या में झीलें, तालाब तथा कुएं हैं, जिनका प्रयोग प्राथमिक रूप से बिना उपचार किये पीने के लिए किया जाता है। सामान्य तौर पर अधिकत्तर नदियां मानसून के दौरान से भरी रहती हैं जो वर्ष के केवल तीन माह तक सीमित रहती है, प्रायः शेष समय में ये सूखी ही रहती है और उद्योगों अथवा शहरों/कस्बों से विसर्जित अपशिष्ट जल ही ले जाती है, जो हमारे सीमित जल संसाधनों की गुणवत्ता को खतरे में डालती है। भारतीय संसद ने हमारे जल निकायों की स्वास्थ्य प्रदता को बरकरार रखने तथा सुरक्षित रखने के विचार से जल (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) अधिनियम, 1974 बनाया। जल प्रदूषण से संबंधित तकनीकी तथा सांख्यिकीय आँकड़ों को एकत्र करना, मिलाना तथा उसका प्रसारण करना केन्द्रीय बोर्ड का एक अधिदेश है। इसलिए जल गुणवत्ता का प्रबोधन तथा निगरानी इसकी सबसे महत्वपूर्ण गतिविधि है।

संदर्भ:

(1)http://hi.vikaspedia.in/rural-energy/environment/92d93e930924-92e94790292a93094d92f93e9359309239069029269 4b932928/92893094d92e92693e92c932928

(2)http://hi.vikaspedia.in/rural-energy/environment/92d93e930924-92e947902-92a93094d92f93e9359390690292694b932928/91a93f93291593e-92c91a93e913-90690292694b

(3)http://hi.vikaspedia.in/ruralenergy/environment/92d93e93092492e94790292a93094d92f93e9359309239069029269 4b932928/93893e907932947902 91f91893e91f940-90690292694b932928

(4)http://www.ajabgjab.com/2015/04/deadliest-earthquake-in-history.html

(5)https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B8%E0%A5%82%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%AE%E0%A5%80

(6)https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AD%E0%A5%82%E0%A4%AE%E0%A4%82%E0%A4%A1%E0%A4%B2%E0%A5%80%E0%A4%AF_%E0%A4%8A%E0%A4%B7%E0%A3

(7)http://ytrewq.xyz/index.php?newsid=196952

(8)https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%9A%E0%A4%BF%E0%A4%AA%E0%A4%95%E0%A5%8B_%E0%A4%86%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A6%E0%A5%8B%E0%A8

(9)http://hi.vikaspedia.in/rural-energy/environment/92d93e930924-92e947902-92a93094d92f93e935930923-90690292694b932928/92893094d92e92693e-92c9932928

(10)http://hi.vikaspedia.in/rural-energy/environment/92d93e930924-92e947902-92a93094d92f93e935930923-90690292694b932928/92c94091c-92c91a93e913-9032928

(11)http://hi.vikaspedia.in/rural-energy/environment/92d93e93092492e947902-92a93094d92f93e935930923-90690292694b932928/91a93f93291593e-92c91a93e913-4b9328

(12)http://hi.vikaspedia.in/rural-energy/environment/92d93e93092492e947902-92a93094d92f93e9359309239069029269 4b932928/93893e907932947902 91f91893e91f932928

(13)http://hi.vikaspedia.in/rural-energy/environment/92d93e930924-92e947902-92a93094d92f93e935930923-90690292694b932928/92893094d92e92693e-92c292694b932928

(14)*भारत 2016.*नई दिल्ली.

(15)https://hindi.firstpost.com/world/world-environmenyt-day-2017-what-isparis-climate-agreement-and-why-donald-trump-and-us-pull-out-from-this-agreement-pr-33405.html

(16)http://www.ssgcp.com/2017/जलवायु-परिवर्तन-पेरिस-सम/

(17)https://www.livehindustan.com/news/article-story.html

अध्याय-तीन

भारत के प्रमुख पर्यावरणविद् और अनुपम मिश्र

पृथ्वी मानव का घर है। मनुष्य ने इस पृथ्वी से बहुत कुछ पाया है। ऊँचे पर्वत, हिमाच्छादित शिखर, भरपूर पानी और शुद्ध हवाएँ ये सब प्रकृति की ही देन हैं, लेकिन शायद इन सबको बचाने लिए और प्रकृति के कोप से बचने के लिए हमारी भावी पीढ़ी को अपना सम्पूर्ण जीवन बिताना पड़े। मानव अपने जीवनयापन के लिए सदैव पर्यावरण पर निर्भर रहता चला आया है। विकास के साथ मनुष्य की आवश्यकताएं भी बढ़ी हैं। जिससे उपभोकतवाद की संस्कृति का जन्म हुआ है। जिसके चलते मनुष्य पर्यावरण के दोहन के साथ उसका शोषण भी करने लगा है। पर्यावरण के दोहन के इस लगातार दोहन से मनुष्य को ग्लोबल वार्मिंग, ओज़ोन कवच क्षरण जैसी मुसीबतों को झेलना पड़ता है। आज के युग में मनुष्य विकास की जिस अंधी दौड़ में निकाल पड़ा वहाँ से उसी अवस्था में लौट पाना अब उसके लिए मुश्किल हो गया है।

आज वह बड़ी-बड़ी इमारतें बना रहा है, कारखानों का निर्माण कर रहा है पेड़ों की अंधाधुंध कटाई कर रहा है, संसाधनों का लगातार दोहन कर रहा है। इनमें से कुछ संसाधन ऐसे भी हैं जो एक सीमा तक ही मनुष्य के पास उपलब्ध हैं। बेशक मनुष्य आज इस दौड़ में इतना आगे निकाल गया है जिसके चलते उसने ने ऊंची इमारतें खड़ी कर दी हैं। रोजगार के नए आयाम प्रस्तुत किए हैं, लेकिन इसके चलते उसने सबसे नुकसान अपने पर्यावरण को पहुंचाया है। सभ्यता के विकास के साथ ही हमनें भौतिक उन्नति, प्राकृतिक सम्पदा का दोहन, मशीनों रसायनों लवड़ों और खनिजों का भरपूर उपयोग को पूंजीवादी विकासात्मक तकनीकी के साथ प्राथमिकता दी है। परिणाम स्वरूप विकास और पर्यावरण का जो नाजुक सम्बन्ध है वह बद्तर हो गया है। मनुष्य के सभी प्राकृतिक गुण जैसे जन्म, वृद्धि, स्वास्थ्य, मृत्यु आदि प्राकृतिक पर्यावरण से उसी तरह प्रभावित होते हैं जैसे अन्य जीवों के गुण।

इस प्रकार मानव की प्राकृतिक पर्यावरण के साथ भूमिका प्रारम्भ में पर्यावरण के कारक के रूप में थी, जो समय के साथ बदलती गयी। मानव-पर्यावरण के मध्य बदलते सम्बन्धों का मूल कारण प्रौद्योगिकी ही है। प्राचीन काल में मनुष्य तथा प्राकृतिक पर्यावरण के बीच संबंध काफी संतुलित थे, लेकिन समय के साथ मनुष्य के व्यवहार में परिवर्तन,जोकि उपभोक्तावाद को दर्शाता है, के कारण यह संबंध असंतुलित हो

गया। मनुष्य अब पर्यावरण का कारक एवं पालक न होकर उसका विनाशक हो गया। आज मनुष्य अपने आप को आधुनिक कहता है लेकिन जितना वह आधुनिक हुआ है उतना ही अधिक पर्यावरण के साथ खिलवाड़ भी किया। नदियों को दूषित किया, वायु को प्रदूषित किया, प्राकृतिक संसाधनों का दोहन किया। अपने आपको आधुनिक साबित करने के इस होड़ में आगे रहने केलिए वह निरंतर पर्यावरण के साथ खिलवाड़ करता आया है और अभी भी कर ही रहा है जिसका नतीजा हमें भयंकर प्राकृतिक आपदाओं के रूप में भुगतना पड़ता है। कभी जहां हँसता खेलता जीवन हुआ करता था वहाँ से जीवन का नामों निशान तक मिट जाता है। भारत में कुछ व्यक्ति ऐसे भी हुए हैं जिन्होंने पर्यावरण को बचाने के लिए अर्थात् पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और कुछ लोग अभी भी निरंतर पर्यावरण को बचाने की ओर प्रयासरत हैं।

3.1. भारत के कुछ प्रमुख पर्यावरणविद्:

- **महात्मा गाँधी-**

महात्मा गाँधी का सम्पूर्ण जीवन ही प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रेरणास्त्रोत है। उन्होंने देश को आज़ाद कराने में अपना पूरा जीवन लगा दिया और साथ ही पर्यावरण को स्वच्छ रखने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका भी निभाई है। उन्होंने पर्यावरण संबंधी ऐसे कई आंदोलन चलाए जिससे पर्यावरण को स्वच्छ रखा जाए और लोगों में पर्यावरण के प्रति चेतना का विस्तार हो सके। गाँधी जी के पर्यावरणीय मूल्यों से ही प्रभावित होकर चंडी प्रसाद भट्ट एवं सुन्दरलाल बहुगुणा, बाबा आमटे एवं मेधा पाटकर जैसे प्रकृति संरक्षकों ने पर्यावरण संबंधी आंदोलन चलाये। कई बड़े गैर सरकारी समूहों ने भी सामाजिक और पर्यावरणीय एवं पर्यावरणीय सरोकारों से जुड़े कार्यक्रम चलाये जैसे सुलभ इंटरनेशनल, गाँधी जी की प्रेरणा से सफाईकर्मियों विशेषकर हाथ से मैला ढोने वालों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के लिए शिक्षा एवं पर्यावरणीय जागरूकता के लिए कार्य करती है। गाँधी जी ने कहा कि "वर्तमान दर से होते विकास के कारण किस प्रकार मनुष्य के द्वारा प्रकृति एवं मनुष्य का शोषण किया जा रहा है, प्रकृति हमारी जरूरतों को पूरा कर सकती है किन्तु हमारे लालच को नहीं।" गाँधी जी ने हमेशा से ही पर्यावरण एवं मानव के संबंधों को एक दूसरे का पूरक माना और पृथ्वी पर

जीवन को बचाए रखने एवं भावी पीढ़ी को एक स्वस्थ वातावरण प्रदान करने के लिए पर्यावरण एवं मानव के सम्बन्ध को बेहतर बनाये जाने की बात कही।[1]

- **इंदिरा गाँधी-**

भारत की भूतपूर्व प्रधानमन्त्री इंदिरा गाँधी का नाम भारत के पर्यावरण के क्षेत्र में वैधानिक रूपसे जुड़ा हुआ है। इन्दिरा गांधी जंतुओं एवं पर्यावरण संरक्षण को सुरक्षित करने में हमेशा से अग्रणी रही हैं। इन्होंने1972 में वन्य जीव संरक्षण अधिनियम पारित कराकर वन्य जीवों के संरक्षण तथा पर्यावरण संरक्षण को कानूनी अधिकार बनाया। इंदिरा गाँधी के कार्यकाल में संरक्षित केशेत्रों की संख्या 65 से बढ़कर 217 हो गयी। इन्दिरा गांधी भारतीय वन्य जीव बोर्ड की चेयरपर्सन भी रहीं।[2]

- **मेधा पाटकर एवं अरुंधती राय-**

मेधा पाटकर एवं अरुंधती राय का नाम नर्मदा बचाओ से जुड़ा हुआ है। मेधा पाटकर ने नर्मदा बचाओ आंदोलन की नींव रखी। नर्मदा नदी को बचाने के लिए इन्होंने इस पर बनने वाली विभिन्न निर्माणाधीन बाँध परियोजनाओं का विरोध किया गया जो आदिवासी जनजातियों के अधिकारों का हनन कर रही थी।

- **राजेंद्र सिंह-**

राजेंद्र सिंह को भारत में जल संरक्षण के लिए किये गए प्रयासों के लिए जाना जाता है। इन्हें भारत का जल पुरुष अर्थात् वॉटर गुरु भी कहा जाता है। जल संरक्षण के लिए उनके प्रयासों से प्रभावित होकर विश्व की अनेक संस्थाओं ने उन्हें मैग्सेसे अवार्ड एवं स्टॉकहोम वाटर प्राइजजैसे कई पुरस्कार देकर उन्हें सम्मानित किया। इन पुरस्कारों को नोबल वाटर प्राइज पुरस्कारोंके नाम से भी जाना जाता है। इन्होंने परंपरागत जल स्त्रोतों को तकनीकी विधि जोड़ा। जिससे राजस्थान जैसे क्षेत्र में पानी की आपूर्ति आसान हुई।[3]

- **एम.एस.स्वामीनाथन-**

एम.एस.स्वामीनाथन भारत के जेनेटिक वैज्ञानिक हैं। स्वामीनाथन को भारत में हरित क्रान्ति का जनक कहा जाता है। इन्होनें सन् 1966 में मैक्सिको के बीजों को पंजाब की घरेलू किस्मों के साथ मिश्रित कर उच्च उत्पादकता वाले गेहूँ के संकर बीज विकसित किये।

- **अनिल कुमार अग्रवाल-**

अनिल कुमार अग्रवाल भारतीय पर्यावरणीय वैज्ञानिक थे, जिन्होंने1982 में भारत के राज्यों के पर्यावरण पर पहली रिपोर्ट लिखी। वे सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट के संस्थापक थे। [4]

- **आनंद कुमार-**

आनंद कुमार प्रकृति संरक्षणवादी वैज्ञानिक हैं। इन्हें दक्षिण भारत में मानव एवं हाथियों के बीच रिश्तों को बेहतर बनाने और मानव एवं हाथियों के बीच के तनावों को कम करने के लिए जाना जाता है।

- **चेवांग नोरफेल-**

नोरफेल एक सिविल इंजीनियर हैं। चेवांग नोरफेल कोआइस मैन के नाम से भी जाना जाता है। नोरफेल ने भारत के अत्यंत ठंडे एवं उच्च क्षेत्रों में कृत्रिम ग्लेशियर का निर्माण किया जिससे लेह लद्दाख क्षेत्रों में पानी की समस्या में कमी आई।उच्च क्षेत्रों के ये कृत्रिम ग्लेशियर इन क्षेत्रों के भूमिगत जल को बाधा पहुंचाते हैं और सिचाईके मौसम में पर्याप्त मात्र में पानी उपलब्ध कराते हैं। इन्हें जमनालाल बजाज एवं पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया।[5]

- **मधु भटनागर-**

मधु भटनागर एक शिक्षक हैं जिन्होनें पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए पर्यावरणीय शिक्षा नीति की शुरुआत की। इन्होंने सन् 1991 मेंअपने विद्यालय में जल संरक्षण के लिए जल संग्रहण की शुरुआत की।

- **चंडी प्रसाद भट्ट-**

चंडी प्रसाद भट्ट गाँधी जी की विचारधारा को मानने वाले पर्यावरणविद् एवं सामाजिक और पर्यावरणीय कार्यकर्ता हैं। इन्होनें सन् 1964 में गोपेशवर में दशोली ग्राम स्वराज्य संघ की स्थापना की जो बाद में चलकर चिपको आंदोलन का मातृ संगठन सिद्ध हुआ। आज इन्हें मातहत सामाजिक और पर्यावरणीय पारिस्थिकी पर कार्य करने के लिए जाना जाता है और आधुनिक भारत का प्रथम पर्यावरण विद्वान् की श्रेणी में रखा गया है।

- **सुन्दरलाल बहुगुणा-**

सुन्दरलाल बहुगुणा एक गांधीवादी पर्यावरणविद् थे। इन्होनें बड़ी ही शांतिपूर्ण तरीके से चिपको आंदोलन का नेतृत्व किया। सुंदर लाला बहुगुणा वर्ष 1980 से 2004 टीहरी बाँध के निर्माण के विरोध में आंदोलन चलाते रहे। इन्होंने टिहरी बाँध के कारण पड़ने वाले प्रभावों के सन्दर्भ में लोगों को जागरूक किया। इनके द्वारा शुरू किए गए चिपको आंदोलन के कारण आज विश्व भर में ये वृक्ष मित्र नाम से प्रसिद्ध हैं।

- **बाबा आमटे-**

बाबा आमटे भारत के प्रमुख समाजसेवी एवं पर्यावरण संरक्षण कार्यकर्ता थे। इन्होनें अपना पूरा जीवन वन्य जीव संरक्षण तथा नर्मदा बचाओ आंदोलन में लगा दिया। इन्हें सन् 1971 में पद्मश्री, सन् 1985 में मैग्सेसे पुरस्कार, सन् 1983 में डेमियन पुरस्कार, सन् 1986 में पद्म विभूषण एवं सन् 1991 में गाँधी शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया।[6]

- **सुनीता नारायण-**

सुनीता नारायण भारत की प्रसिद्द पर्यावरणविद् हैं। वर्तमान में सुनीता नारायण विज्ञान एवं पर्यावरण केंद्र की महानिदेशक के रूप में कार्य कर रही हैं। विज्ञान एवं पर्यावरण केंद्र की महानिदेशक के साथ-साथ ये पर्यावरण संचार समाजकी निदेशक भी हैं। सुनीता नारायण पर्यावरण पर केन्द्रित पाक्षिक पत्रिका डाउन टू अर्थ की प्रकाशक भी हैं। ये समाज के हरित विकास की समर्थक हैं। ये कई वर्षों से पर्यावरण एवं समाज की मूलभूत समस्याओं को लेकर समाज में जागरूकता फैलाने का कार्य कर रही हैं। इनके कार्यों से प्रभावित होकर सरकार ने वर्ष 2005 में पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया।[7]

- **रॉबिन बैनेर्जी-**

रॉबिन बनर्जी का जन्म 12 अगस्त, 1908 में पश्चिम बंगाल के बहरामपुर में हुआ और अपनी प्राथमिक शिक्षा शंतिनेकतन से प्राप्त की। काजीरंगा पार्क में अपनी एक यात्रा के दौरान उन्होंने फैसला लिया कि वह वही काजीरंगा के पास गोलाघाट में रहेंगे। बॅनर्जी एक स्नातक बने रहे, और फिल्म निर्माण कार्य के अलावा वह एक पर्यावरणविद् के रूप में सक्रिय रूप से कार्य करते रहे। रॉबिन बैनर्जी ने स्वास्थ्य शिविरों के अलावा भूमिदान भी किया। वह स्थानीय लोगों के बीच चाचा रॉबिन के नाम से मशहूर थे। वह संगठन काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान और सरकारी संगठन काजीरंगा वन्य जीव सोसाइटी के संस्थापक थे जी सक्रिय रूप से पार्क के हितों की सुरक्षा करता था। सन् 1997 में उन्हें उनके काम के लिए पद्मश्री से सम्मानित किया गया।**(8)**

- **जादव मोलाइ पाएंग-**

जादव मोलाई, असम के जोरहट के एक गांव के रहने वालें हैं। जादव को बचपन से ही प्रकृति से प्रेम था, जीव जंतु, पशु पक्षियों को वो बहुत पसंद करते थे। जब वे 13 वर्ष के थे तो उन्होंने देखा की उनके गांव के आस पास पशु-पक्षियों की संख्या घटती जा रही है, जब इसका कारण उन्होंने अपने बड़ों से पूछा तो उन्होंने बताया की ऐसा जंगल के कम होते जाने से हो रहा है। फिर एक दिन जादव ने देखा की बहुत सारे सांप, ब्रह्मपुत्र नदी के एक बंजर टापू पर मरे पड़े हैं, टापू पर कोई भी पेड़ न होने के कारण सैकड़ों सांप अपने आप

को नहीं बचा पाए। यह देख कर जादव को बहुत दुख हुआ। उन्होंने तुरंत यह सूचना वन विभाग को दे दी। वन विभाग वालों ने उन्हें वहाँ पर पेड़ लगाने की सलाह दी। हालांकि वन विभाग वालों ने यह सलाह उनका मज़ाक उड़ाने के लिए दी थी किन्तु जादव ने उसे बड़ी गंभीरता से लिया।

जादव ने ब्रह्मपुत्र नदी के बीच एक वीरान टापू पर बीस बांस के पौधे लगाकर शुरुआत की। तीस वर्षों तक हर रोज़ सुबह जागकर वे उस टापू पर पौधे लगाकर आ जाते। इतने सारे पौधे को पानी देना भी अकेले जादव के बस की बात नहीं थी, पर उन्होंने इसके लिए भी एक उपाय निकाल लिया, उन्होंने हर पौधे के ऊपर एक बांस की तख्ती रखकर उस पर एक मिटटी का घड़ा लगा दिया जिसमे महीन सुराख़ थे। इस तरकीब से नए पौधे को एक हफ्ते तक बूंद बूंद पानी मिलता रहता था।

सन् 1980 में जब वन विभाग ने वहां वृक्षारोपण की परियोजना शुरू की तो जादव पायेंग भी उससे जुड़ गए, और एक मजदूर की तरह काम करते रहे। पांच वर्ष बाद जब परियोजना ख़त्म हो गयी और बाकी सभी कर्मचारी चले गए तब भी जादव पायेंग ने अपना काम जारी रखा। वे नए पौधे लगाते रहे और पेड़ों की देख-रेख करते रहे।

इस तरह तीस वर्षों तक काम करते हुए मोलाई ने लगभग 1360 एकड़ (550 हेक्टेयर) का जंगल उगा दिया जो की न्यूयार्क के सेन्ट्रल पार्क से भी बड़ा है।

उनके नाम पर इस जंगल का नाम "मोलाई फोरेस्ट" (Molai Forest) रखा गया है। इस जंगल में बंगाल टाइगर्स, भारतीय गेंडे, सो हिरन, कई प्रजाति के बन्दर, खरगोश, विभिन्न प्रकार के पक्षियों ने अपना घर बना लिया है। सो हाथियों का झुण्ड भी इस जंगल में आता जाता रहता है।

करीब 300 एकड़ में बांस के जंगल है और बाकी जगह तरह तरह के पेड़ जैसे वल्कोल, अर्जुन, एजर, गुलमोहर, कोरोई, मोज आदि पेड़ हैं।जादव पायेंगइसी जंगल में अपनी पत्नी और तीन बच्चों के साथ एक कुटिया में रहतें है और गायों का दूध बेचकर अपना जीवन यापन करते है।

जादव पायेंग को उनके इस अद्वितीय उपलब्धि की लिए वर्ष 2012में जवाहर लाल नेहरु विश्विद्यालय द्वारा सम्मानित किया गया, सन् 2013 में इन्डियन इंस्टिट्यूट और फोरेस्ट मेनेजमेंट ने उन्हें पुरुस्कार दिया। सन् 2015 में, उन्हें भारत का सबसे उच्च नागरिक सम्मान पद्म श्री से नवाज़ा गया।[9]

- **वंदना शिवा-**

वंदना शिवा (जन्म 5 नवम्बर 1952, देहरादून, उत्तराखंड, भारत), एक दार्शनिक, पर्यावरण कार्यकर्ता, पर्यावरण संबंधी नारी अधिकारवादी एवं कई पुस्तकों की लेखिका हैं। वर्तमान में नई दिल्ली में स्थित, शिवा अग्रणी वैज्ञानिक और तकनीकी पत्रिकाओं में 300 से अधिक लेखों की रचनाकार हैं। शिवा ने सन्1970 के दशक के दौरान अहिंसात्मक चिपको आंदोलन में भाग लिया। इस आंदोलन ने, जिसके कुछ मुख्य प्रतिभागी महिलाएं थी, पेड़ों की कटाई को रोकने के लिए पेड़ों के चारों तरफ मानव चक्र तैयार करने की पद्धति को अपनाया। वे वैश्वीकरण के संबंध में अंतर्राष्ट्रीय फोरम की नेताओं में से एक हैं (जेरी मैंडर, एडवर्ड गोल्डस्मिथ, राल्फ नैडर, जेरेमी रिफ़किन आदि के साथ) और वे वैश्वीकरण में परिवर्तन लाओ (अल्टर-ग्लोबलाइज़ेशन मूवमेंट) नामक वैश्विक एकजुटता आंदोलन की एक विभूति हैं।

वंदना शिवा ने कई पारंपरिक प्रथाओं के ज्ञान के पक्ष में तर्क प्रस्तुत किया है,जोकि *वैदिक पर्यावरण* (रैन्कर प्राइम द्वारा रचित) में दिये गए उनके साक्षात्कार से स्पष्ट है जो भारत की वैदिक विरासत की ओर आकर्षित करता है। शिवा ने अंतर्राष्ट्रीय वैश्वीकरण मंच, महिलाओं के पर्यावरण एवं विकास संगठन एवं तीसरी दुनिया के नेटवर्क सहित भारत एवं विदेशों में सरकारों तथा गैर-सरकारी संगठनों के सलाहकार के रूप में भी कार्य किया है।[10]

- **सलीम अली-**

सलीम अली पक्षी वैज्ञानिक और प्रकृतिवेत्ता थे। इन्हें भारत का बर्डमैन भी कहा जाता है। सलीम अली पहले ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने पहली बार पक्षियों का व्यवस्थित सर्वे करवाया। इन्होंने बुक ऑफ इंडियन बर्ड्स नामक किताब लिखी। ये सन् 1947 के बाद भारत में बने संगठन बाम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी के मुख्य व्यक्तियों में से एक थे। इन्हीं के व्यक्तिगत प्रयासों से केवलादेव नेशनल पार्क का निर्माण किया गया। साइलेंट वैली में हो रहे विनाश को रोकने का कार्य भी सलीम अली ने किया। इन्हें सन् 1976 में पद्मविभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

3.2. अनुपम मिश्र:

अनुपम मिश्र अपने नाम की तरह बेजोड़ प्रतिभा वाले व्यक्ति थे। एक ऐसा महान व्यक्ति जिसने अपना सारा जीवन पर्यावरण को समर्पित कर दिया, वह आज किसी परिचय का मोहताज नहीं है। उन्होंने अपनी लिखी हुई पुस्तकों पर कभी किसी प्रकार का अधिकार नहीं जमाया। ऐसे अनुपम व्यक्तित्व वाला व्यक्ति जिसने मृत्यु को करीब से आते देखा, महसूस किया लेकिन मधुरता, आत्मीयता एवं जीवन की उष्मा ऊर्जा को कभी चूकने नहीं दिया। ऐसा व्यक्ति समाज में बहुत कम हैं। उनका आज हमारे बीच में न होने से पर्यावरण को भारी नुकसान हुआ है।

- **परिवेश-**

पर्यावरण चेतना व भारत के परंपरागत जल स्रोतों के संरक्षण अभियान से जुड़े प्रख्यात पर्यावरणविद् अनुपम मिश्र का जन्म 5 जून 1948 को महाराष्ट्र राज्य के वर्धा जिले में हुआ था। अनुपम मिश्र के पिता प्रख्यात साहित्यकार भवानी प्रसाद मिश्र थे। घर में उन्हें पमपम कहकर बुलाया जाता था। अनुपम मिश्र की बहन नंदिता मिश्र के अनुसार उनका बचपन बापू की कर्मभूमि वर्धा में ही बीता। फिर वह हैदराबाद, बेमेतरा और अंत में फिर नई दिल्ली में जाकर बस गए। सन् 1958 में अनुपम मिश्र नई दिल्लीवासी हो गए। प्रख्यात साहित्यकार भवानी प्रसाद का पुत्र होने के बावजूद उनके अंदर बिलकुल भी घमंड नहीं था। उनकी माता सरला मिश्र एक ग्राहिणी थी। अनुपम मिश्र बचपन सेही समाज व पर्यावरण से जुड़े मुद्दों को लेकर काफी खासे गंभीर थे।[11]

- **शिक्षा एवं कार्य-**

अनुपम मिश्र ने वर्ष 1968 में नई दिल्ली विश्वविद्यालय से संस्कृत से एम.ए.किया। अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने नयी नई दिल्ली में गांधी शांति प्रतिष्ठान में प्रवेश किया। सन् 1969 से लेकर, जब तक वह जीवित थे गांधी शांतिप्रतिष्ठान में ही काम करते रहें। अनुपम मिश्र गांधी शांति प्रतिष्ठान के सचिव रहने के अलावा वह प्रतिष्ठान की पत्रिका गांधी मार्ग के संपादक भी रहे थे। वह राजेन्द्र सिंह की संस्था तरुण भारत संघ के लंबे समय तक अध्यक्ष रहे।

अनुपम मिश्र पर्यावरण संरक्षण के लिए वह तब से काम कर थे जब भारत में पर्यावरण रक्षा का कोई विभाग नहीं खुला था। उन्होंने जल संरक्षण के परंपरागत तरीकों पर लोगों का ध्यान केन्द्रित किया। वह हमेशा ही तालाबों के जल अभियान तथा वर्षा जल संरक्षण से लोगों को जोड़े रखने की हर मुमकिन कोशिश की। वे सेंटर फॉर इनवायरनमेंट एंड फूड सिक्योरिटी के संस्थापक सदस्य भी रहे थे। अनुपम मिश्र उत्तराखंड के प्रख्यात पर्यावरणविद् चंडी प्रसाद भट्ट के साथ जुड़कर बहुचर्चित चिपको आंदोलन में भी अपनी भूमिका निभाई। चिपको आंदोलन की पहली रिपोर्ट अनुपम मिश्र ने ही लिखी थी। इस रिपोर्ट को लिखने के लिए वह जोशीमठ क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर गए और महिलाओं के साथ बातचीत की। इसी रिपोर्ट के कारण राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया का ध्यान चिपको आंदोलन की तरफ आकर्षित हुआ। तब मोरार जी देसाई भारत के प्रधानमंत्री थे। दिसम्बर 1977 में 'हिमालय और हम' सेमिनार में उत्तराखंड के वन आंदोलन की बात को उनके सामने रखने के लिए अनुपम मिश्र का बहुत बड़ा योगदान था। अनुपम मिश्र ने देश के विभिन्न राज्यों में जल संरक्षण से जुड़े अभियानों में अपनी एक अहम भूमिका निभाई।

पर्यावरणविद् होने के नाते न सिर्फ उन्होंने जल संरक्षण के मुद्दों पर सिर्फ लिखा बल्कि जल संकट जहां भारी समस्या है। वहाँ जाकर वहाँ के लोगों के बीच रहकर उनको जल का अर्थ समझाया, और जल संरक्षण की लोकनीति अपनाने के लिए प्रेरित किया। अनुपम मिश्र ने राजस्थान, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड व मध्यप्रदेश को अपनी कर्मभूमि बनाया। उन्होंने कुओं, बावडिय़ों, तलाबों व बरसाती नदियों के संरक्षण पर बल दिया। उन्हीं की देख-रेख में राजस्थान के अलवर में जलसंरक्षण का काम शुरू हुआ,और अरवरी नदी को एक बार फिर जीवन प्राप्त हुआ।

नई दिल्ली में हुए एक व्यखान में अपना दुख व्यक्त करते हुए कहा कि शायद हम इंतजार कर रहे है आकाश से आनी वाली किसी वाणी का, जो हमारी नदियों को बचा सके। अनुपम मिश्र हमेशा ही यह कहते थे कि हमारे पूर्वज बेहतर जल इंजीनियर थे। उनके द्वारा लिखी गयी पुस्तक आज भी खरे हैं तालाब और राजस्थान की रजत बूंदे जल प्रबंधन के परंपरागत तरीकों का ज्ञान प्रस्तुत करती है। यह पुस्तकें जल संरक्षण में मील का पत्थर साबित हुई हैं।

उनकी पुस्तक आज भी खरे हैं तालाब सन् 1993 में प्रकाशित हुई। आठ वर्ष के गहन अध्ययन के बाद अनुपम मिश्र ने यह पुस्तक लिखी। यह किताब भारत के बेजोड़ भव्य तालाबों का दर्शन कराती है। इस

किताब ने लोगों को परंपरागत तालाबों और जल प्रबंधन के तरीकों से लोगों को रूबरू कराया है। यह पुस्तक यह दर्शाती है की कई वर्ष पूर्व भारत में बेजोड़ सुंदर तालाबों की भव्य परंपरा थी। अनुपम मिश्र द्वारा लिखी पुस्तक देश का पर्यावरण,पर्यावरण पर एक बेजोड़ किताब है। जिसमें पर्यावरण को उसकी समग्रता में मूल तत्वों यथा, मनुष्य, भूमि, जल, वन, बाँध, वातावरण, रहन-सहन, स्वास्थ्य, ऊर्जा, वन्य जीवन के बारे में अच्छी तरह से समझाया है। अनुपम मिश्र की यह पुस्तक उत्तराखंड की महिलाओं को समर्पित है।

अनुपम मिश्र कहते थे की पानी का कोई विकल्प नहीं हो सकता है। जल संरक्षण के लिए व्यापक स्तर पर एक मुहिम चलाने की आवश्यकता है।[11]अपनी पुस्तक राजस्थान की रजत बूंदें में उन्होंने जल संरक्षण के उन तरीकों को उजागर किया है। जिनके ज़रिए हमारे पूर्वजों ने रेगिस्तान की सूखी धरती को पानी की बूंदों से गीला किया, लेकिन आज मानव के लोभ और प्रशासन की उदासीनता के चलते आज परंपरागत स्त्रोत सूख गए हैं। आज इतने आधुनिक होने के बावजूद सरकार लोगों को पेय जल उपलब्ध नहीं करा पा रही है। अनुपम जल संरक्षण की स्वदेशी तकनीकों के पक्षधर थे। वर्ष 1996 में अनुपम मिश्र को सरकार ने इन्दिरा गांधी पर्यावरण पुरस्कार से सम्मानित किया। वर्ष 2009 में मिश्र ने ब्रिटिश कोलम्बिया के वैनक्यूवर में टेड सम्मेलन में जल संचयन के प्राचीन तकनीकी के विषय पर लोगों का ध्यान केन्द्रित किया।

अनुपम मिश्र का मानना था कि सिर्फ पर्यावरण की संस्थाएं खोल देने भर से ही पर्यावरण संरक्षण का कार्य पूर्ण नहीं होता है। उनकी स्पष्ट धारणा है कि जल संरक्षण प्रकृति व संस्कृति की रक्षा की अनिवार्य शर्त है। अनुपम मिश्र ने अपना सम्पूर्ण जीवन जल के संरक्षण और लोगों को जल की उपयोगिता बताने में लगा दिया। अनुपम मिश्र ने पर्यावरणविद् , लेखक और संपादक के रूप में प्रसिद्धि हासिल की। यह सच्चे, सरल, सादे, विनम्र, हँसमुख, कोरकोर मानवीय-व्यक्तित्व वाली प्रतिभा अब हमारे बीच में नहीं है। इस ज़माने में भी बग़ैर मोबाइल, बग़ैर टीवी, बग़ैर वाहन के रहने वाले व्यक्ति थे। सादगी इतनी थी कीदो जोड़ी कुरते-पायजामे और झोलेसे ही अपना काम चलते थे। उनकी 'राजस्थान की रजत बूँदें' और 'आज भी खरे हैं तालाब' जैसी बेजोड़ कृतियांआज भी कई जल स्त्रोतों को पुनर्जीवन देने का काम कर रहीं हैं।[12]

- **प्रसिद्ध कृतियाँ-**

  - आज भी खरे हैं तालाब

- राजस्थान की रजत बूंदें
- महासागर से मिलने की शिक्षा
- देश का पर्यावरण
- हमारा पर्यावरण
- तैरने वाला समाज डूब रहा है
- अच्छे विचारों का अकाल
- जीवन सम्पदा और पर्यावरण
- ऊर्जा और स्वास्थ्य

- **उपलब्धियां-**

- पर्यावरण क्षेत्र में उल्लेखनीय काम करने के लिए सन् 1986 में उन्हें इंदिरा गांधी वृक्षमित्र पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- अनुपम मिश्र को सन् 1996 में देश के सर्वोच्च पर्यावरण पुरस्कार जोकि इंदिरा गांधी पर्यावरण पुरस्कार है, से सम्मानित किया गया।
- वर्ष 2007-2008 में उन्हें मध्यप्रदेश सरकार ने उनको उनके समाज कार्य के लिए चन्द्रशेखर राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
- उन्हें एक लाख रुपेय के कृष्ण बलदेव वैद पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है।
- अनुपम मिश्र को वर्ष 2011 में उनकी पुस्तक आज भी खरे हैं तालाब के लिए प्रतिष्ठित जमनालाल बजाज पुरस्कार से सम्मानित किया गया। [13]

- **मृत्यु-**

मात्र 68 वर्ष की अल्पायु में कैंसर से झूझते हुए अनुपम मिश्र का निधन हो गया। अनुपम मिश्र ने 19 दिसम्बर 2016 को नई दिल्ली के एम्स अस्पताल में अपनी अंतिम सांसें ली और आज पर्यावरण का यह सिपाही हमारे बीच में नहीं है।

संदर्भ:

(1,2,3,4,5,6,7)*भारत 2016*, नई दिल्ली: दृष्टि पब्लिकेशन.

(8)https://hi.wikipedia.org/wiki/%E%0A%4B%0E%0A8%5B%E%0A%4AC%E%0A%4BF%E%0A4%E%0A%4AC%E%0A%4A%8E%0A%4B%0E%0A8%5D%E%0A9%4C%E%0A80%5

(9)http://netinhindi.com/jadav-payeng-forest-man-story-in-hindi/

(10)https://hi.wikipedia.org/wiki/%E%0A%4B%5E%0A%82%4E%0A%4A%6E%0A%4A%8E%0A%4BE_%E%0A%4B%6E%0A%4BF%E%0A%4B%5E%0A%4BE

(11)https://en.wikipedia.org/wiki/Anupam_Mishra

(12)http://www.abhivyakti-hindi.org/lekhak/a/anupam_mishra.htm

(13)https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%85%E0%A4%A8%E0%A5%81%E0%A4%AA%E0%A4%AE_%E0%A4%AE%E0%A4%BF%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%B0

अध्याय-चार

अनुपम मिश्र की पर्यावरणीय दृष्टि

अनुपम मिश्र! वह लोकजीवन और लोक ज्ञान के साधक थे, उन्होंने पर्यावरण संरक्षण के पश्चिमी मॉडल और मानक को कभी स्वीकार नहीं किया। उनको देसी ज्ञान, कौशल और समाज की ताकत पर पूरा भरोसा था। उन्होंने अपनी इस पर्यावरणीय दृष्टि के ज़रिये अपने जैसे लोगों को, उसके कामों की, उसकी शक्ति की और उसकी जरूरतों की याद दिलाना चाहते थे। वह लोगों को यह याद दिलाना चाहते थे की पर्यावरण की सेवा ही पर्यावरण का संरक्षण है।उनकी पर्यावरण को लेकर जो दृष्टि थी वह उनकी कृति आज भी खरे हैं तालाब में साफ झलकती है। उनकी यह कृति रामायण न होकर भी कई लाख प्रतियों में बिकी है।

- **अनुपम मिश्र का पर्यावरणीय दृष्टिकोण-**

अनुपम मिश्र ने पर्यावरण के मुख्यत: जल संकट पर समाज का ध्यान केन्द्रित करने का सफल प्रयास किया। अपने लिखे लेखों और पुस्तकों के माध्यम से यह साबित कर दिया है कि पर्यावरण की जल समस्या मनुष्य की स्वयं की पैदा की हुई है। गांधी शांति प्रतिष्ठान नई दिल्ली के सेक्रेटरी कुमार प्रशांत का मानना है कि अनुपम मिश्र ने पर्यावरण की चिंता में उन्होंने कभी युद्ध घोषित नहीं किए। हालाँकि पर्यावरण के प्रति जागरूकता बनाने और उसे ज़मीन पर उतारने का उनका काम किसी से भी, किसी मायने में कमतर या कमज़ोर नहीं था। आज इतने अधिक लोग, इतनी आक्रामकता से पर्यावरण की रक्षा करने में जुटे हैं कि उनसे ही पर्यावरण को खतरा पैदा हो गया है। अनुपम इस भीड़ से एकदम अलग खड़े और अपने काम में मन से, मन भर डूबे, तन्मय नज़र आते थे, और इसलिए वह पर्यावरण के विनाश को मनुष्य से अलग करके नहीं देखते थे, लेकिन उसे जवाब देने का युद्ध घोषित करने से कहीं अधिक ज़रूरी वे यह मानते थे कि समाज को सजग बनाया जाए।

अनुपम मिश्र का मानना था प्रकृति के पास मनुष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए सब कुछ है किन्तु उसके लोभ को पूरा नहीं कर सकती। उन्होंने अपनी पुस्तक आज भी खरे हैं तालाब में एक ऐसे भारत का दर्शन कराया जो जल संरक्षण के संसाधनों से परिपूर्ण था। अनुपम मिश्र ने पूरे देश को अपना घर बताया

है। पर्यावरण के लिए सतत् चिंता और चिंतन करते रहने वाले अनुपम मिश्र ने दूसरी संस्थाओं सहित सरकारों को पर्यावरण के लिए चिंता और चिंतन करने के लिए उकसाया। सर्वोदय प्रेस सर्विस में जनवरी 2017 में छपे लेख के अनुसार अनुपम मिश्र जिस भाषा में बोलते और लिखते थे वह लोगों के भीतर छू जाने वाली अपनी सी लगती थी। राजकुमार कुम्भ जोकि वरिष्ठ कवि और लेखक हैं उनका मानना है की अनुपम मिश्र की पुस्तक आज भी खरे हैं तालाब देश में हो रहे मौजूदा विकास से होने वाले खतरे से आगाह करती है। मौजूदा पुस्तक में विस्मयकारी तथ्य हैं। अनुपम मिश्र को प्रकृति पुरुष भी कहा जा सकता है। गांधी शांति प्रतिष्ठान से प्रकाशित होने वाली गांधी मार्ग के प्रत्येक अंक में उनकी संपादकीय दृष्टि देखी जा सकती है। अनुपम मिश्र की चिंता और चिंतन के केंद्र में सिर्फ किसी भूखंड पर पर तालाब का होना या तालाब में पानी का होना महत्वपूर्ण नहीं था बल्कि उन्होंने अपने व्यवहार से यह प्रतिष्ठित किया था कि आदमी की आँखों में पानी होना कितना ज़रूरी है।

अनुपम मिश्र की दूसरी अनमोल कृति राजस्थान की रजत बूंदें में उन्होंने एक ऐसे समाज के प्रस्तुत किया जिसने मरुभूमि में पानी की आस को कभी नहीं छोड़ा। जल संरक्षण की अनोखी प्रक्रिया से रूबरू कराया।

विकास संवाद मीडिया ग्रुप भोपाल के सलाहकार और एक वरिष्ठ पत्रकार राकेश दीवान के अनुसार अनुपम मिश्र जैसी भाषा बहुत कम लोगों को मिलती है। वह कहते हैं कि अनुपम मिश्र की आज भी खरे हैं तालाब किताब कन्टेंट, विषय, रिसर्च से लेकर प्रस्तुतिकरण तक हर मायने में उत्कृष्ट है। अनुपम मिश्र में पर्यावरण को समझने की अनोखी प्रतिभा थी।

4.1. जल संरक्षण की लोकनीति: हिन्दी में कहावत है 'जल है तो कल है' जिसका अर्थ है हमारा भविष्य तभी सुरक्षित होगा, जब जल होगा। मानव शरीर पाँच तत्वों अग्नि, वायु, पृथ्वी, आकाश और जल से मिलकर बना हुआ है। ऋग्वेद में जल की उपयोगिता साफ शब्दों में बताते हुए यह बताया गया है कि जल से ही जीवन निकला है। जल का उपयोग छोटे-छोटे कामों से लेकर बड़े कामों के लिए भी किया जाता है। जल कृषि, उद्योग, परिवहन के लिए तो होता ही है और साथ ही जल से विद्युत भी उत्पन्न की जाती है। प्राचीन समय में लोग भले ही कम पढ़े-लिखे होते थे लेकिन जल संरक्षण की शिक्षा से भली भांति परिचित

थे। उनको यह ज्ञात था कि जल का उपयोग कैसे करें और सबसे महत्वपूर्ण जल संरक्षण कैसे करें। आदिकाल से ही लोग तालाब का निर्माण करके नदियों को संरक्षित करके जल संरक्षण का काम करते थे।[1]

अनुपम मिश्र ने जल संरक्षण की लोकनीति पर बल दिया। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन लोक को समर्पित कर दिया। उनकी लिखी किताब आज भी खरे हैं, तालाब जल संरक्षण में मील का पत्थर साबित हुई है। इस किताब की लगभग 23000 प्रतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। अनुपम मिश्र ने इस किताब को कॉपीराइट से मुक्त रखा। इस किताब के जरिए उन्होंने लोगों में तालाब संस्कृति को पुनर्जीवित करने का प्रयत्न किया है। प्राचीन समय में तालाब संस्कृति की परंपरा लोगों में बड़ी प्रचलित थी। इस किताब में पुराने समय में हमारे देश में बेजोड़ भव्य सुंदर तालाबों की परंपरा को दर्शाया है। मैगसेसे पुरस्कार से सम्मानित जल राणा राजेंद्र सिंह बताते हैं कि इस पुस्तक का राजस्थान की उनकी संस्था तरुण भारत संघ के पानी बचाने के बड़े काम को सफल बनाने में बहुत बड़ा हाथ है। जयपुर जिले के ही सालों से अकालग्रस्त लापोड़िया गाँव ने इस पुस्तक को अपनी आत्मा में बसाया हुआ है। अनुपम मिश्र का कहना है कि सैकड़ों, हजारों तालाब अचानक शून्य से प्रकट नहीं हुए थे। इनके पीछे एक इकाई पीछे एक इकाई थी बनवाने वालों की, दहाई मिलकर, सैंकड़ा, हज़ार बनती थीं। पिछले दो सौ बरसों में नए किस्म की थोड़ी सी नयी किस्म की पढ़ाई पढ़ गए समाज ने इस इकाई, दहाई, सैंकड़ा, हज़ार को शून्य ही बना दिया।

आज जल ही जीवन है जैसे विज्ञापन के जरिए लोगों को निरंतर जागरूक करने का भरसक प्रयत्न किया जा रहा है। योजना जुलाई 2016 के विशेषांक अनमोल जल संसाधन में यह बताया गया है कि ग्लोबल रिस्क रिपोर्ट 2016 में विश्व आर्थिक मंच ने प्रभावकारिता के स्तर पर जल संकट को सबसे बड़े वैश्विक खतरे के रूप में सूचीबद्ध किया है। महाराष्ट्र के लातूर में जल संकट को दूर करने के लिए जलदूत (रेल) भी चलाई गयी।

जल की उपलब्धि या प्रभाव के कारण ही बहुत सी सभ्यताएं एवं संस्कृतियां बनती हैं और बिगड़ती भी हैं, इसलिए हमारे देश की सांस्कृतिक चेतना में जल का काफी ऊंचा स्थान रहा है। हमारे पूर्वज जानते थे कि तालाबों से जंगल व जमीन का पोषण होता है। भूमि के कटाव एवं नदियों के तल में मिट्टी के जमाव को रोकने में भी तालाब मददगार होते हैं। इस चेतना के कारण ही गांव के संगठन की सूझ-बूझ से

गांव के सारे पानी को विधिवत उपयोग में लेने के लिए तालाब बनाए जाते थे। इन तालाबों से अकाल के समय भी पानी मिल जाता था। जैसा कि गांवों की व्यवस्था से संबंधित अन्य बातों में होता था, उसी तरह तालाब के निर्माण व रख-रखाव के लिए भी गाँववासी अपनी ग्राम सभा में सर्वसम्मति से कुछ कानून बनाते थे। ये कानून 'गंवई दस्तूर' कहलाते थे। ये दस्तूर 'गंवई बही' में लिखे जाते थे, या मौखिक परंपरा के जरिए पीढ़ी-दर-पीढ़ी चले जाते थे।

नदी, तालाब, कुएं, बावडिय़ा और झीलें हमारी संस्कृति का अंग है, प्राचीन काल में ये संस्कृतियाँ हमारे जीवन के एक महत्वपूर्ण हिस्सा थी। समय के साथ औद्योगीकरण हुआ और हम आधुनिक हुए और इस आधुनिकता के दौर में जनमानस ने हमारी इस संस्कृति को खतरे में डाल दिया है, इन्हीं संस्कृतियो में एक तालाब की संस्कृति जिसके कारण पुराने समय में एक पूरे गाँव को पानी की बड़ी से बड़ी समस्या से आज़ादी मिलती थी क्योंकि इस समस्या का निवारण करने के लिए हमेशा ही तालाब पानी से लबालब भरे हुए होते थे। आज यह संस्कृति धीरे-धीरे अपनी समाप्ती की कगार पर आ चुकी है। हमारा वह समाज जो कभी जल को अपने लिए तथा भावी पीढ़ी के लिए संरक्षित करने के लिए तालाबों का निर्माण करता था। वह तालाबों की जगह बड़ी- बड़ी इमारते बनाने में जुट गया है। इतिहास की ओर नजर डालने पर हमें यह ज्ञात होता है कि पुराने समय में तालाबों से भरी मात्रा में जल आपूर्ति की जाती थी और कभी जल संकट नहीं होता था। तालाबों में जल संग्रहण से जमीन के अंदर पानी का स्तर अच्छा बना हुआ रहता था। तालाब संस्कृति ने पूर्व समय में गाँव में जल संवर्धन को बढ़ावा दिया था और इस संस्कृति के कारण खेती-बड़ी में बहुत व्यापक और समृद्ध प्रभाव पड़ा था। जिसके कारण भारत एक कृषि प्रधान देश बना था लेकिन आज स्थिति विकास के आड़ में संसाधनों का दोहन मात्र बची है।

महान आयुर्वेदाचार्य सुरपाल ने लिखा है- दस कुएं एक तालाब के बराबर, दस तालाब एक झील के बारे में दस झील एक पुत्र के एवं दस पुत्र एक पेड़ के बराबर हैं। भारत में जल संरक्षण का एक बेहतरीन इतिहास है। यहाँ जल संरक्षण की एक मूल्यवान पारंपरिक, सामाजिक और पर्यावरणीय एवं सांस्कृतिक परंपरा है। उदाहरण स्वरूप नदी, खादिन, तालाब, जोहड़ कुंआ इत्यादि देश के अलग-अलग हिस्सों में इनमें देश के अलग अलग तरीकों को अपनाया गया जो वहाँ के जलवायु के उपयुक्त है। ऋग्वेद में रीता की चर्चा जो आवश्यक वर्षा की उपलब्धता से संबंधित है। कृषि पराशर में वर्षा प्रणाली की व्याख्या की गयी

है। यहाँ तक कि वर्षा जल संग्रहण के लिए खेतों में छोटे –छोटे बांध बनाने की चर्चा भी है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में जल प्रबंधन कि विस्तृत चर्चा है। इसमें वर्षा मापन के लिए द्रोण नमक यंत्र की चर्चा भी है। सुश्रुत संहिता का 45वें अध्याय पेयजल ही पर है। अनुपम मिश्र आज के पढ़े-लिखे समाज का ध्यान भारत में मौजूद जल संरक्षण की उन पारंपरिक संरचनाओं की ओर ले जाना चाहते थे , जिनके नाम भी शायद आज का समाज भूल चुका है, वह निम्नलिखित हैं-

- **मौजूदा महत्वपूर्ण पारंपरिक संरचनाएं-**

- **तालाब-** तालाब, एक प्रकार के जलाशय हैं। ये प्राकृतिक या कृत्रिम हो सकते हैं। प्राकृतिक तालाब जिसे कई क्षेत्रों में परिवारियों कहा जाता है का एक अच्छा उदाहरण बुंदेलखंड के टीकमगढ़ के तालाब हैं। जबकि कृत्रिम जलाशय के उदाहरण उदयपुर की झील हैं।
- **जोहड़-** जोहड़ एक प्रकार के छोटे चेक डैम होते हैं जिनका उपयोग वर्षा जल को इकट्ठा करने और भू-जल की स्थिति को बेहतर करने का काम किया जाता था।
- **बावड़ी-** ये सामाजिक और पर्यावरणीय कुएं हैं, जिनको मुख्यत: पीने के पानी के स्त्रोत के रूप में उपयोग में लाया जाता था।
- **झालर-** झालर कृत्रिम टैंक जिनका उपयोग धार्मिक एवं सामाजिक और पर्यावरणीय कार्यक्रमों में होता है। इसके जल का उपयोग पीने के लिए नहीं किया जाता है। अक्सर ये आयताकार होते हैं।
- **जल मंदिर सीढ़ियाँ या सीढ़ीदार कुएं-** यह एक ऐसी भूमि संरचना है जो सिर्फ भारत में पाई जाती है। यह भारत के शुष्क क्षेत्रों में काफी लोकप्रिय रहा है। इसका उपयोग वर्षा जल संग्रहण एवं पीने के पानी के लगातार उपलब्धता के लिए किया जाता है। इस प्रकार के कुएं बनाने का विचार सूखे की समस्या के कारण आया। इनके विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग नाम हैं, जैसे काव, बावड़ी, बावरी, बादली,वावड़ी।
- **कुंड-** सामान्य तौर पर कुंड का अर्थ भूगर्भीय टैंक होते हैं, जिनका विकास सूखे कि समस्या के समाधान के लिए किया गया था, जैसे गौरी कुंड, सीता कुंड, ब्रम्ह कुंड इत्यादि।

- **टंका-** यह एक छोटा टैंक होता है, जिसमें पानी को इकट्ठा किया जाता है। यह जमीन के अंदर होता है ओर इसकी दीवारों पर चूना लगाया जाता है। इसमें सामान्य तौर पर वर्षा जल इकट्ठा किया जाता है। चोल राजाओं ने जल संरक्षण के लिए बहुत से टैंकों का निर्माण कराया था।
- **कुहल-** कुहल विशेषकर हिमाचल प्रदेश में बनाए जाते हैं। ये एक प्रकार की नहरें होती हैं, जिनका उपयोग ग्लेशियर के पिघलने से पानी को गाँव तक पहुंचाने के लिए किया जाता है।
- **गढ़-** असम में राजाओं ने वर्षा जल संरक्षण के लिए तालाब ओर कुंड बनाए थे। कई स्थानों पर गढ़ का उपयोग नदी के पानी को चैनलाइज करने के लिए किया गया था। गढ़ बड़े नाले की तरह होते हैं। गढ़ों का उपयोग सिंचाई के लिए किया जाता था।[(2)]

4.2. तालाब संस्कृति: हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो (ईसा से 3000 से 1500 साल पूर्व) में जलापूर्ति और मल निकासी की बेहतरीन प्रणालियों के अवषेश मिले हैं। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी जल संरचनाओं के बारे में अनेक विवरण विस्तार से उपलब्ध हैं। इससे पता चलता है कि तालाबों के निर्माण का कार्य राज्य की जमीन पर होता था। राजा और प्रजा दोनों मिलकर तालाब का निर्माण करते थे। स्थानीय लोग तालाब निर्माण की सामग्री जुटाते थे। तालाब को किसी भी प्रकार का नुकसान पहुंचाने वाले के खिलाफ कार्यवाही की जाती थी। जो भी व्यक्ति तालाब को किसी भी प्रकार का नुकसान पहुंचाने की कोशिश करता था उस पर राजा द्वारा जुर्माना लगाया जाता था। उस समय के राजा चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा यह व्यवस्था ईसा से 321-297 साल पहले लागू की गई थी। प्राचीन समय में बरसात के पानी को संचित करने के लिये तटबन्ध, जलाशय और तालाबों का निर्माण करना एक आम बात थी। तालाब भूमि के कटाव एवं नदियों के तल में मिट्टी के जमाव को रोकने में भी मददगार होते हैं। जैसा कि हम सब जानते हैं कि राजस्थान में वर्षा की कमी है परन्तु राजस्थान के सबसे ज्यादा कमी वाले क्षेत्र तीन है- जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर। अनुपम मिश्र जी हमें यह बताते हैं की इन तीनों स्थानों पर गाँवों में सौ प्रतिशत पानी उपलब्ध है। इसका एक जीता जागता सुंदर उदाहरण है- घड़ीसीसर तालाब। यह तालाब जैसलमेर की भूमि के अंतर्गत आता है। महाराज घड़सी ने इस तालाब को बनवाया था। राजा की मृत्यु के पश्चात् रानी ने राजा के सपने को पूरा किया। आज यह तालाब रेत की आंधियों के बीच अगर विलुप्त हो जाने की स्थिति में पहुँच चुका है तो

अब यह विचार करने का समय आ गया है की आधुनिक और विकास करने की अंधाधुंध दौड़ में हमारी इच्छाशक्ति इतनी क्षीण क्यों हो गयी है कि हम अपनी इस स्वर्ण विरासत को सहेज कर न रख सकें।

ऐसी ही अनेक विस्मयकारी तथ्य हमें उनकी किताब आज भी खरे हैं तालाब में देखने को मिलते हैं। उन्होंने अपनी इसी पुस्तक में पारस पत्थर वाली कहानी का ज़िक्र भी किया है जिसमें राजा न तो पारस लेता है न ही सोना बल्कि अच्छे काम करने की प्रेरणा देता है।

तालाब निर्माण का कार्य करने वाली अनेक जातियों में से एक जाति गजधर है। गजधर यानी जो गज को धारण करते हैं। गजधर वास्तुकार हुआ करते थे। गांव हो या नगर उनके निर्माण की जिम्मेदारी गजधर की होती थी। नगर नियोजन से लेकर छोटे से छोटे निर्माण के काम गजधर के कंधों पर टिके थे। वे योजना बनाते थे, कुल काम की लागत निकालते थे, काम में लगने वाली सारी सामग्री जुटाते थे। निर्माण कार्य पूर्ण होने के बाद लोगों से जो कुछ बनता, वे गजधर को भेंट कर देते। पारिश्रमिक के अलावा गजधर को सम्मान भी मिलता था। सम्मान स्वरूप गजधर को सरोपा भी भेंट किया जाता था। इसके अलावा चांदी और कभी सोने के बटन भी भेंट दिए जाते थे। लोग अपनी इच्छानुसार जमीन भी गजधर के नाम करते थे।

छत्तीसगढ़ के गांवों में आज भी छेर- छेरा के गीत गाए जाते हैं और उससे मिले अनाज से अपने तालाबों की मरम्मत की जाती है। हरियाणा के नारनौल में जात उतारने के बाद माता-पिता तालाब की मिट्टी काटते हैं और पाल पर चढ़ाते हैं। न जाने कितने शहर, कितने सारे गांव इन्हीं तालाबों के कारण टिके हुए हैं। बहुत- सी नगर पालिकाएं आज भी इन्हीं तालाबों के कारण पल रही हैं और सिंचाई विभाग इन्हीं के दम पर खेतों को पानी दे पा रहे हैं।

यह कहावत बहुत प्रसिध्द है कितालों में ताल भोपाल का, बाकी सब तलैया। गढ़ों में गढ़ चित्तौड़ का बाकी सब गढैयां "। राजा भोज द्वारा 11 वीं शताब्दी में निर्मित कराया गया भोपाल का ताल शहर का गौरव है, यह शान-ए- भोपाल है। प्राचीन काल से ही मानव सभ्यताएं जल स्त्रोतों के किनारे विकसित हुई हैं, और यह तालाब भी इसका अपवाद नहीं है। इस तालाब के जितना बड़ा जलाशय यदि किसी शहर के निकट हो, तो शहरवासियों का उस पर गर्व करना सर्वथा उचित है। यह नासमझी का ही नतीजा माना जायेगा कि यह विशाल ताल एक बार फिर सूखने के कगार पर है। सदियों से लबालब भरा रहने वाला यह

ताल दुर्दशा का शिकार इस वजह से हुआ कि लोगों ने इस ताल के पारम्परिक जल स्त्रोतों और जल भराव क्षेत्र की ओर समुचित ध्यान नहीं दिया और प्राकृतिक संतुलन से अनावश्यक छेड़-छाड़ की।लेकिन अब भोपाल के लाखों वाशिन्दों की प्यास बुझाने वाले इस ताल को बचाने के लिए सैकडों लोग खुद ब खुद आकर तालाब की सफाई के लिए श्रमदान करने में जुट गए है।[3]

प्राचीन काल से ही मानव सभ्यताएं जल स्त्रोतों के किनारे विकसित हुई हैं, और यह तालाब भी इसका अपवाद नहीं है। सैकड़ो साल पुराना भोपाल का यह ताल प्राचीन जल-अभियांत्रिकी का बेजोड़ उदाहरण है। बेहद प्राचीन और जन उपयोगी इस जलाशय का इतिहास अनेक खट्टे-मीठे अनुभवों से भरा हुआ है। उपलब्ध ऐतहासिक अभिलेखों के आधार पर यह माना जाता है कि धार प्रदेश के प्रसिद्ध परमार राजा भोज एक असाध्य चर्मरोग से पीड़ित हो गए थे। एक संत ने उन्हें सलाह दी कि वे 365 स्त्रोतों वाला एक विशाल जलाशय बनाकर उसमें स्नान करें। साधु की बात मानकर राजा ने राजकर्मचारियों को काम पर लगा दिया। इन राजकर्मचारियों ने एक ऐसी घाटी का पता लगाया, जो बेतवा नदी के मुहाने स्थित थी। लेकिन उन्हें यह देखकर झुंझलाहट हुई कि वहां केवल 356 सर-सरिताओं का पानी ही आता था। तब कालिया नाम के एक गोंड मुखिया के पास की एक नदी की जानकारी दी जिसकी अनेक सहायक नदियां थीं। इन सबको मिलाकर संत के द्वारा बताई गई संख्या पूरी होती थी। इस गोंड मुखिया के नाम पर इस नदी का नाम कालियासोत रखा गया, जो आज भी प्रचलित है। लेकिन राजा भोज के चुनौतियों का दौर अब भी समाप्त नहीं हुआ था। बेतवा नदी का पानी इस विशाल घाटी को भरने के लिए पर्याप्त नहीं था। इसलिए इस घाटी से लगभग 32 किलोमीटर पश्चिम में बह रही एक अन्य नदी को बेतवा घाटी की ओर मोड़ने के लिए एक बांध बनाया गया। यह बांध आज के भोपाल शहर के नजदीक भोजपुर में बना था। इन प्रयासों से जो विशाल जलाशय बना, उसका नाम भोजपाला रखा गया। उसका विस्तार 65,000 हेक्टेयर था और कहीं कहीं वह 30 मीटर गहरा था।

यह प्रायद्वीपीय भारत का कदाचित सबसे बड़ा मानव-निर्मित जलाशय था। उसमें अनेक सुंदर द्वीप थे, और उसके चारों ओर खूबसूरत पहाड़ियां थीं। वह प्रसिद्ध भोजपुर शिवालय से आज के भोपाल शहर तक फैला हुआ था। कहते हैं कि राजा भोज इस जलाशय में स्नान करके अपने रोग से मुक्त हो गए। राजा भोज द्वारा निर्मित विशाल जलाशय भोजपाला की वजह से ही इस शहर का नाम धीरे-धीरे भोजपाल और

बाद में भोपाल हो गया। बेतवा नदी के बहाव को रोकने के लिए भोजपुर में जो मुख्य बांध बनाया गया था, वह पत्थरों से निर्मित था। इस बांध को 1443 ईस्वीं में होशंगशाह ने तुड़वा दिया था। कहते हैं कि उसके सैनिकों को उसे तोड़ने में 30 दिन लग गए। बांध के टूटने के बाद भी जलाशय को पूरा सूखने में 30 वर्ष लगे। तालाब की सूखी जमीन पर आज बसाहट है। कालान्तर में भोजपुर का बांध तोड़ दिया गया, लेकिन भोपाल में कमला पार्क के पास जो मिट्टी का बांध था, वह बच गया। उसके कारण एक छोटा जलाशय शेष रह गया। इसी को आज बड़ा तालाब कहते हैं।

वर्ष 1694 में नवाब छोटे खान ने बड़े तालाब के पास बाणगंगा पर एक बांध बनवाया, जिसके कारण छोटा तालाब अस्तित्व में आया। यह दोनों तालाब आज भी धार के दूरदर्शी राजा भोज की स्मृति को अमर बनाए हुए है। वर्ष 1963 में भदभदा पर एक बांध बनाकर बड़े तालाब की जल संग्रहण क्षमता को बढ़ाया गया। इससे बड़े तालाब के पश्चिमी और दक्षिणी भागों के डूब क्षेत्र में वृध्दि हुई। बड़े तालाब का जल विस्तार क्षेत्र लगभग 31 वर्ग किलोमीटर है, जबकि छोटे तालाब का जल विस्तार क्षेत्र मात्र 1.29 वर्ग किलोमीटर है। इन तालाबों की औसत गहराई 6 मीटर है। कुछ स्थानों में गहराई 11 मीटर है। बड़े तालाब की जल संग्रहण क्षमता 1160 लाख घन मीटर है।

यह पानी तालाब के जलग्रहण क्षेत्र में हुई वर्षा से आता है और अंतत: भोपाल के रहवासियों को घरों के नलों से पेयजल के रूप में उपलब्ध होता है। भोपाल के तालाबों के नीचे की चट्टानें डेक्कन ट्रैप बेसाल्ट प्रकार की हैं, जो ज्वालामुखियों के लावा के बहने और तुरंत ठंडा होने के कारण बनी हैं। जिस भूभाग में भोपाल का तालाब स्थित हैं, प्राचीन समय में उस भूभाग में काफी भूगर्भीय उथल-पुथल हुई थी। अपने लगभग एक हजार वर्ष के अस्तित्व काल में बड़ा तालाब एक प्राकृतिक नमभूमि में बदल गया है। वोट क्लब पर टहलते हुए जब भी लोग तकिया टापू के पीछे सूरज को डूबते देखते है, तो वे इस तालाब के सौंदर्य से अभिभूत हुए बिना नहीं रह पाते। यद्यपि आज इन तालाबों के इर्द-गिर्द अनेक आधुनिक संरचनाएं बना दी गई हैं फिर भी तालाब को आस्तित्व प्रदान करने वाली प्रमुख संरचना वही मिट्टी का पुराना बांध है जिसे राजा भोज ने बनवाया था। निश्चित ही राजाभोज में गजब की दूर दृष्टि थी क्योंकि 11वीं सदी में निर्मित यह जलाशय आज 21वीं शताब्दी में भी भोपाल शहर की 40 प्रतिशत पेयजल आपूर्ति कर रहा है। इसका श्रेय निश्चय की उस समय की बेजोड़ जल-अभियांत्रिकी क्षमता को है। बुंदेलखंड में सूखे के कारण मची

तबाही के पीछे तालाबों की उपेक्षा भी खास कारण है। तालाब खुदवाना, उनकी मरम्मत कराना यहां की महान परंपराओं में शुमार रहा।

बुंदेलखंड नरेश छत्रसाल के पुत्र जगतराज ने एक बीजक के मुताबिक खुदाई करवाकर गड़ा धन प्राप्त किया तो छत्रसाल नाराज हुए। उन्होंने कहा, 'मृतक द्रव्य चंदेल को, तुम क्यों लिया उखार अगर उखाड़ ही लिया है तो उससे चंदेलों के बने तालाबों की मरम्मत की जाये और नये तालाब बनवाये जायें। इसी धन से पुराने तालाबों की मरम्मत के साथ वंशवृक्ष देखकर संवत 286 से 1962 तक की 22 पीढ़ियों के नाम पर पूरे बाइस बड़े-बड़े तालाब बनवाये गये। दुरावस्था में ही सही, लेकिन इनका अस्तित्व अभी भी बुंदेलखंड में मौजूद है। महोबा नगर एवं आसपास के इलाके को पेयजल की आपूर्ति मदन सागर से होती है। इसका निर्माण चंदेल राजा मदन बर्मन ने 1929 ई. में कराया था। इस जलाशय को अब उर्मिल बांध से जोड़ दिया गया।

जर्जर तालाब के बड़े हिस्से पर अतिक्रमण है। वर्ष 2007-08 में सूखा राहत निधि से 80 लाख रुपये से जलाशय की सफाई करायी गयी थी, लेकिन तालाब का चौथाई हिस्सा भी साफ नहीं हो सका। यहां कीरत सागर का निर्माण चंदेल राजा कीर्ति बर्मन ने वर्ष 1960 ई. में कराया था। आल्हा-ऊदल और पृथ्वीराज चौहान के मध्य इसी तालाब की कछार में युद्ध हुआ था, इस वक्त से यहीं ऐतिहासिक कजली मेला लगता है। तमाम अतिक्रमण और सफाई के अभाव में लंबा भूभाग पट जाने के बावजूद यहां से नहर निकालकर करीब 2500 हेक्टेअर भूमि को सिंचित बनाने का बंदोबस्त किया गया है। वर्ष 2006 में सम विकास योजना से तीन करोड़ रुपये खर्च होने पर तालाब तीन इंच भी मिंट्टी नहीं हटायी जा सकी। महोबा में ही कल्याण सागर, विजय सागर, केड़ारी तालाब, सलालपुर तालाब करीब सात से नौ सौ साल पुराने हैं। इन सभी तालाबों के काफी भूभाग पर अतिक्रमण है। सफाई के अभाव में अब इनकी संचयन क्षमता बहुत कम रह गयी है।[4]

अनुपम मिश्र का कहना है कि हमारे देश में बस्ती के आसपास जलाशय तालाब पोखर, कूप, चाल, खाल आदि बनाए जाते थे। जल को सुरक्षित रखने की व्यवस्था की जाती थी। इस काम के विशेषज्ञ थे लेकिन वे जनसामान्य में घुले-मिले लोग ही थे। उनकी विशेषज्ञता उन्हें शेष समाज से अलग-थलग नहीं

करती थी। अनुपम मिश्र ने यह सारा ब्यौरा देते हुए मध्यकालीन भारत में जल व्यवस्था का विश्वकोश तैयार किया है। अनुसंधान का मॉडल प्रस्तुत किया है। पता नहीं कितने शब्दों, अर्धप्रचलित भूलेखों को पुनर्जीवित किया है। इस विशद धैर्य परीक्षक अनुसंधान प्रक्रिया में उन्होंने आधुनिक, मध्यकालीन और एक हद तक प्राचीन भारत की जाति व्यवस्था, उसके आर्थिक आधार के ढांचे का भी प्रामाणिक आधार खड़ा किया है। मेरे विचार से 'आज भी खरे हैं तालाब' हमारा लुप्त आत्मविश्वास लौटाती है। तालाबों का नामकरण पुलिंग और स्त्रीलिंग शब्दों की जोड़ियों से जोड़ा जाता रहा है। हरियाणा और पंजाब में जोहड़-जोहड़ी, बंध-बंधिया, ताल-तलैया, पोखर-पोखरी और डिग्गी, तो कहीं-कहीं चाल कहीं खाल, कहीं ताल तो कहीं तोली, कहीं चौरा, चौपड़ा, चौधरा, तिघरा, चार घाट तीन घाट, अठघट्टी पोखर। तालाब के अलग-अलग घाटअलग काम के लिए होते थे। जिस तालाब में मगरमच्छ होते थे उनके नाम होते थे मगरा ताल, नकरा ताल। बिहार में बाराती ताल भी होता था। बिहार के लखीसराय की रानी हर दिन उस तालाब में नहाती थी इसलिए वहाँ 365 तालाब बनाए गए थे। पुड्डुचेरी राज्य के नाम का मतलब ही है नया तालाब।[5]

संस्कृत में और हिंदी में भी जल को जीवन का समानार्थक बताया गया है। अनुपम मिश्र बताते हैं कि हमारा समाज अपने जीवन के अक्षय स्रोत को बनाने, उसके संरक्षण की विधि से भलिभांति परिचित था। तालाब बनाना और उसका संरक्षण करना उसके व्यवहार में था। तालाब बनाना एक परंपरा हो गयी थी। हमें आज सिर्फ उन स्त्रोतों को सहेज कर रखना था, किन्तु आज हम अपने लोभ के कारण उस स्त्रोतों को नष्ट कर रहें हैं। जल संकट की समस्या मानव की स्वयं की पैदा की हुई है।

भारतीयों ने जल संरक्षण के लिए एक से एक प्रयास किए। जिनमें तालाबों, कुण्डों, झीलों, बावड़ियों का निर्माण मुख्य रूप से किया गया था। जल प्रबंधन के इन उपायों से भू-जल का स्तर कभी कम नहीं होता था, और सालभर पीने का पानी सुलभ रहता था। भारत के बहुत से गांवों, कस्बों में आज भी जल संरक्षण और प्रबंधन की ये प्राचीन भारतीय तकनीकें देखीं जा सकतीं हैं। पश्चिमी विकास के प्रभाव में इन सिद्ध तकनीकों को उपेक्षा के भाव से देखा गया और अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मारी गई।

पर्यावरणविद् अनुपम मिश्र विशेष आदर के पात्र हैं। जिन्होंने भारत के प्राचीन अद्भुत जल प्रबंधन की तरफ जनता और सरकार का ध्यान प्रभावशाली ढंग से खींचा और समाज को इन प्राचीन जल प्रबंधन

तकनीकों का लोहा मानने पर विवश कर दिया। उनकी किताब 'आज भी खरे हैं तालाब' और 'राजस्थान की रजत बूंदें' ने जल संरक्षण के दृष्टिकोण में भारतीय दृष्टि के मेल का 'अनुपम' कार्य किया था। वह अलग बात है की आलसी और कामचोर सरकारों ने हर क्षेत्र की तरह यहाँ भी अपनी निष्क्रियता ही दिखाई।[6]

4.3. वर्षा जल संरक्षण की नीति: देश में भौगोलिक विषमता के चलते कुछ इलाकों में जल ही जल है तो कुछ इलाके सूखे की मार झेल रहे हैं। आज लोग जल संरक्षण के प्रति जागरूक नहीं हैं आज यह ज़रूरी है की लोग वर्षा का जल संरक्षण कर जल प्रबंधन करें। अनुपम मिश्र के शब्दों में कहें तो साल में 365 दिन होते हैं, लेकिन पर्यावरण दिवस सिर्फ एक ही दिन होता है। यह हमारे समाज और हमारी सरकार का ही दुर्भाग्य है कि वो पर्यावरण कि चिंता सिर्फ एक ही दिन करते हैं। यह विकास का दौर है और उसकी कीमत प्रकृति चुका रही है। ऐसे में कभी अरावली की खैर नहीं तो कभी हिमालय की खैर नहीं। अनुपम मिश्र का कहना था कि सरकार को जीडीपी बढ़ानी है। उसके लिए विशाल स्तर परनिर्माण का काम करना है। कहीं नोएडा बन रहा है, तो कहीं उससे भी बड़ा ग्रेटर नोएडा बन रहा है। कहीं गुड़गांव बन रहा है तो कहीं इंद्रप्रस्थ और कहीं उसका भी विस्तार इंद्रप्रस्थ एक्सटेंशन बन रहा है। इस विस्तार में होने वाले हर निर्माण कार्य में रेत लगती है। सीमेंट लगता है। अब ये सीमेंट, रेत कहां से आ रही है। सीमेंट कारखाने से निकलता है, वो भी पत्थर तोड़कर बनता है। लेकिन रेत को बनाने में नदियों को हजारों साल लगते हैं। वो पत्थरों को घिसकर रेत बनाती हैं और किनारों पर छोड़ती हैं। पहले हमारी जरूरतें इतनी नहीं थीं, अब तो लग रहा है जैसे सृष्टि का नए सिरे से निर्माण हो रहा है। नए नियम गढ़े जा रहे हैं। इसी के चलते रेत माफिया नाम से एक नया शब्द आया है। इसकी वजह से नदियों का रास्ता बदला जा रहा है। जंगल काटे जा रहे हैं।

अनुपम मिश्र का यह मानना था कि हमें अपनी ही तकनीक पर अंधविश्वास हो चला है। हम नई दिल्ली को पीने का पानी 300 किलोमीटर दूर से लाकर दे रहे हैं। सरकारों का दावा होता है कि हम लोगों को प्यासा नहीं मरने देंगे। ये हो भी रहा है। सरकार सैकड़ों किलोमीटर दूर से पानी लाकर दे रही है। लेकिन शहर के सभी तालाब नष्ट कर दिए गए हैं। सन् 1908 में नई दिल्ली राजधानी बनी थी, तब नई दिल्ली में 800 तालाब थे, अब एक भी नहीं है। हमारा भू-जल खत्म हो चला है। ऐसे में अगर किसी दिन 300 किलोमीटर दूर भी पानी नहीं रहेगा तो? तो नई दिल्ली पर कितना बड़ा संकट आ जाएगा। यही संकट गांवों

पर आने वाला है। मिश्र ने कहा कि आज शहर बनते हैं तो सबसे पहले भू-जल को नष्ट करने का कामकिया जाता है।

अनुपम मिश्र ने वर्ष 2012 के हमलोग कार्यक्रम में बताया कि जो पानी हम खरीदकर पीते हैं वह बहुत सस्ता है। उसे दूध से भी महंगा होना चाहिए। राजस्थान के लोग जानते हैं पानी का महत्व, पानी संरक्षण का महत्त्व, पानी के तालाब और कुएं का महत्व। नई दिल्ली वाले तो पूरी यमुना पी गए। अब गंगा और भागीरथी को पीने में लगे हैं। अब हिमाचल के रेणुका झील से पानी लेने की बात चल रही है। हरियाणा के पानी पर अभी नई दिल्ली निर्भर कर रही है। बीच-बीच में दोनों सरकारों के बीच बात-चीत और तकरारें भी होती रहती हैं। 100 साल पहले नई दिल्ली में 800 तालाब थे, नई दिल्ली के सभी 800 तालाब कहाँ गए? तालाबो के ऊपर घर बन गए दुकानें बन गयी, बहुत सारे मॉल भी बन गए। हम तालाब क्यों नहीं बनवाते? मच्छर क्यों अधिक हो गए हैं? तालाब की मछलियां मच्छरों के लार्वा को खा जाती हैं। प्रकृति ने रचना बड़ी सोच समझकर की है। हमने प्रकृति का क्षरण किया है। 800 साल पहले जैसलमेर का तालाब जन भागीदारी से बना था। उसे बनाए के लिए राजा के साथ पूरी प्रजा ने भी कुदाल चलाये थे।

यदि हम वर्षा जल को नहीं सहेजेंगे तो अब शहर डूबने लगेंगे और कहीं ना कहीं डूब भी रहे हैं। आज पानी को जानिए, पहचानिये, कद्र कीजिये, पूजा कीजिये, लोग करते थे, करते हैं। आज छठ पर्व एक उदाहरण है और भी कई पर्व त्यौहार जैसे गंगा स्नान, कुम्भ स्नान, मकर संक्रांति आदि जलाशयों के निकट मनाये जाते हैं। [7]

संदर्भ:

(1,2,7)https://hindi.news.18com/news/nation/anupam-mishra-interview-on-environment-day-

(3,5) मिश्र ,अनुपम .*आज भी खरे हैं तालाब* .नई दिल्ली: गाँधी शांति प्रतिष्ठान.

(4)http://hindi.indiawaterportal.org/content/%E0%A4%AD%E0%A5%8B%E0%A4%AA%E0%A4%BE%E0%A-%E0%A4%A4%E0%A4%BE%E0%A4%B2%E0%A4%BE%E0%A4%AC,http://bharatdiscovery.org/india/%E0%A4%AC%E0%A4%A1%E0%A4%BC%E0%A4%BE_%E0%A4%A4%E0%A4%BE%E0%A4%B2%E0%A4%BE%E0%A4%AC,_%E0%A4%A4%B2

(6) http://theanalyst.co.in/anupam-mishra/

अध्याय-पांच

अनुपम मिश्र की पर्यावरण के क्षेत्र में प्रस्तुति एवं विश्लेषण

अनुपम मिश्र एक सामाजसेवी के साथ- साथ पर्यावरण पत्रकार भी थे। यदि उनके जीवन वृतांत पर एक नज़र डालें तो उन्होंने अपना कार्य सन् 1969 में शुरू किया। सन् 1969 से गांधी शांति प्रतिष्ठान से जुड़कर हिन्दी प्रकाशन का काम शुरू किया। यहीं से उन्होंने श्री प्रभाष जोशी के नेतृत्व में श्रवण गर्ग के साथ आंदोलन के बारे में लिखा, पत्रिकाएं निकाली और सर्व सेवा संघ के सर्वोदय साप्ताहिक के प्रकाशन से जुड़ गए।

देश के कुछ पर्यावरण आंदोलनों के साथ गांधी शांति प्रतिष्ठान से संपर्क रहा फिर उत्तराखंड में चिपको, मध्यप्रदेश में तवा बांध का मिट्टी बचाओ अभियान, दक्षिण में अप्पिकों भीनासर में गोचर रक्षा आंदोलन से जुड़े। इसी समय दिनमान में चिपको आंदोलन पर पहला लेख प्रकाशित हुआ। सन् 1973 में चंबल में जयप्रकाश जी के नेतृत्व में डाकुओं को समर्पण के लिए राज़ी किया। इस अभियान में सर्वश्री प्रभाष जोशी और श्रवण गर्ग के साथ मिलकर चंबल की बंदूकें गांधी के चरणों में रिपोर्टनुमा किताब लिखी। सन् 1978 में चिपको नाम से चिपको आंदोलन पर पुस्तक प्रकाशित की। श्री सत्येंद्र त्रिपाठी ने इसका अंग्रेजी में अनुवाद भी किया। सन् 1974 में बिहार आंदोलन छिड़ा। श्री प्रभाष जोशी के साथ इंडियन एक्सप्रेस से निकालने वाले प्रजानीति और आसपास में उपसंपादक रहे। वर्ष 1973 से 1976 तक उन्होंने यह दायित्व संभाला। यहीं से उनकी स्वतंत्र पत्रकारिता का भी आरंभ हुआ।

सन् 1977 में अनुपम मिश्र दोबारा गांधी शांति प्रतिष्ठान आ गए। 1969-70 से पर्यावरण का काम शुरू किया और सन् 1977 इस कार्य ने गति पकड़ी। सन् 1978 में पर्यावरण कक्ष ने बंधुआ मजदूरों की स्थिति जानने के लिए एक सर्वे किया और यह निष्कर्ष निकला कि खेसारी दाल की पंगुता से लोग बंधुआ मजदूर बनते हैं। 1980 में खेसारी दाल और शरीर पर होने वाले उसके असर को जाने का काम भी अनुपम मिश्र ने किया। सन् 1980 में ओयनी के काम से जुड़े और यही वह समय था जब वह राजस्थान की अद्भुत पानी परंपरा को समझने में जुट गए।

सन् 1986 में देश का पर्यावरण और सन् 1988 में हमारा पर्यावरण किताबें आई। 10-12 वर्षों के अध्ययन के बाद सन् 1993 में आज भी खरे हैं तालाब पुस्तक अस्तित्व में आई। सन् 1977 से 2000 तक पर्यावरण कक्ष से छोटी-बड़ी मिलाकर लगभग 17 पुस्तकें निकलीं। इनमें प्रमुख हैं बिगड़ता पर्यावरण, मिट्टी बचाओ अभियान, हमारा पर्यावरण, देश का पर्यावरण, कुंड:रीते घाट भरने की रीत,ओरण:मरुभूमि में हरियाली की चादर, आज भी खरे हैं तालाब आदि। सन् 1995 में राजस्थान की रजत बूंदें निकली। इस पुस्तक में मरुभूमि की परंपरागत जल-संरक्षण की पद्धति को सचित्र दर्शाया गया है। इसी बीच अनेकों लेख भी लिखे जैसे तैरने वाला समाज डूब रहा है, ना जा स्वामी परदेसा, राज समाज और पानी, अकेले नहीं आता अकाल, कितना सृजन कितना विसर्ज आदि तमाम अविस्मरणीय लेख शामिल हैं। [1]

5.1.अनुपम मिश्र द्वारा लिखी गयी पुस्तकों का अध्ययन:

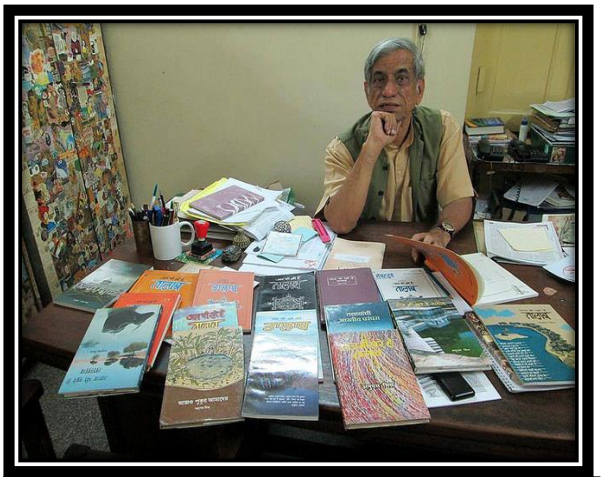

4. अनुपम मिश्र एवं उनकी पुस्तकें

1. आज भी खरे हैं तालाब

संबंधित विषय- अनुपम मिश्र ने अपनी इस पुस्तक में तालाब को भारतीय समाज मेंरखकर देखा है और समझा है। उन्होंने अपनी यह पुस्तक संपादित नहीं की है,उन्होंने इसे कॉपीराइट मुक्त भी रखा है। इस किताब की यात्रा ग्यारह साल पहले शुरू हुई थी। वर्ष 1993 में गांधी शांति प्रतिष्ठान ने आज भी खरे हैं तालाब का पहला संस्करण तीन हज़ार प्रतियों के साथ छापा। नौ अध्याय में विभाजित यह किताब अपनी

शैली और भाषा में किसी वृहद कथानक की तरह है। बंधे हुए पानी के बारे में होकर भी इसकी भाषा में जो रवानगी है वह पाठकों को किसी नदी में प्रवाह के साथ तैरते चले जाने का आनंद देती है। अनुपम मिश्र ने अपनी इस पुस्तक आज भी खरे हैं तालाब में राजस्थान, मध्य प्रदेश, बिहार , बंगाल सहित विभिन्न राज्यों के गांवों की तालाब संस्कृति के माध्यम से वहाँ के सामाजिक और पर्यावरणीय इतिहास एवं संस्कृति को भी प्रस्तुत किया है। तालाब निर्माण की प्रक्रिया स्थानीय लोगों की परम्पराओं और संस्कृति का हिस्सा थीं। अपनी इस चमत्कारी पुस्तक में अनुपम मिश्र न केवल तालाब औरतालाब निर्माण की प्रक्रिया के बारे में बताया है अपितु तालाब को बनाने वाले अनाम नायकों की खोज कर सामने लाते हैं। यह पुस्तक भारत के सुंदर बेजोड़ तालाबों के बेजोड़ परंपरा को सामने लाती है।

पुस्तक का सामाजिक और पर्यावरणीय पक्ष- अनुपम मिश्र ने अपनी इस पुस्तक आज भी खरे हैं तालाब में एक ऐसे समाज से हमें रूबरू कराया है जो भले ही कम पढ़े-लिखे होते थे लेकिन उन्हें अपनी जल जैसी अमूल्य सम्पदा को बचना अच्छे ढ़ंग से आता था। वह एक अलग ही सामाज था जिसे अपनी भावी पीढ़ी की चिंता थी और जिसने अपनी आने वाली पीढ़ी को इस संपदा को भेंट किया है किन्तु आज का समाज एकदम भिन्न है।

वरिष्ठ पत्रकार प्रभाष जोशी के अनुसार अनुपम ने तालाब को भारतीय समाज में रखकर देखा है। सम्मान से समझा है। अद्भुत जानकारी इकट्ठी की है और उसे मोतियों की तरह पिरोया है। कोई भारतीय ही तालाब के बारे में ऐसी किताब लिख सकता था, लेकिन भारतीय इंजीनियर नहीं, पर्यावरणविद नहीं, शोधक विद्वान नहीं, भारत के समाज और तालाब से उस के संबंध को सम्मान से समझने वाला विनम्र भारतीय। ऐसी सामग्री हिन्दी में ही नहीं, अंग्रेज़ी और किसी भी भारतीय भाषा में आप को तालाब पर नहीं मिलेगी। तालाब पानी का इंतज़ाम करने का पुण्यकर्म है तो इस देश के सभी लोगों ने किया है। उनको, उनके ज्ञान को और उनके समर्पण को बता सकने वाली एक यही किताब है।[2]

पुस्तक का संदेश- पुस्तक में अनुपम मिश्र यह लिखते हैं की सैकड़ो हजारों तालाब अचानक शून्य से प्रकट नहीं हुए थे। इनके पीछे एक इकाई थी बनवाने वालों की, तो दहाई थी बनाने वालों की। यह इकाई,

दहाई मिलकर सैकड़ा हज़ार बनती थी। पिछले दो सौ बरसों में नयी किस्म की थोड़ी सी पढ़ाई पढ़ गए समाज ने इस इकाई, दहाई , सैकड़ा, हज़ार को शून्य ही बना बना दिया। यह पुस्तक हमें अपनी जल संपदा जो कई वर्षों से हमारे समाज में मौजूद है उसको बचाने का संदेश देती है।

2. राजस्थान की रजत बूंदे

संबंधित विषय- अपनी इस पुस्तक में अनुपम मिश्र ने पश्चिमी राजस्थान में सदियों से जल प्रबंधनके प्रति लोगों की कड़ी मेहनत के तरीके को बताते हुए लिखा है कि यहाँ के लोगों ने सदियों से जलती हुई इस धरती पर अपनेसमर्पण, श्रमसाध्य विस्तार और समुदाय की अगुवाई वाली कार्रवाई के काम के माध्यम से पानी का प्रबंधन किया है। राजस्थान में पानी बहुत कम गिरता है, जितना पानी है वह खारा पानी है उसको पी नहीं सकते और न ही उसका इस्तेमाल नहाने के लिए कर सकते हैं। फिर भी यहाँ के लोगों ने बिना किसी सरकारी मिशन का इंतज़ार किए बिना किसी एन.जी.ओ. का इंतज़ार किए जहां जगह मिली उसी के अनुरूप टांका बनाकर जल संरक्षण के लिए निर्माण कार्य किया। घर बनाने से पूर्व जल गौड़ का निर्माण करते थे। अनुपम मिश्र की यह रचना सिर्फ राजस्थान राज्य की जल समस्या का समाधान मात्र नहीं है। यह ज़मीन की गहराई में जीवन की पहचान है। यह रचना पानी की हर आहट की कलात्मक अभिव्यक्ति है। राजस्थान की रजत बूंदें के माध्यम से अनुपम मिश्र आम जनजीवन को यह संदेश देते हैं कि हमें अपने समाज, अपने गाँव और अपने शहर में सबके साथ मिलकर अपने पर्यावरण को समझने की कोशिश करनी चाहिए।

पुस्तक का सामाजिक और पर्यावरणीय पक्ष- इस पुस्तक में एक ऐसे समाज के बारे में बताया गया है की एक समाज ऐसा भी है जहां प्रकृति इतनी मेहरबान नहीं है जहां धरती हमेशा ज्वाला उगलती रहती है लेकिन फिर भी उस समाज को जल का उपयोग और जल संरक्षण भलिभांति आता है। उनका मुख्य कार्य जल को संरक्षित करना होता है। उनके घर का निर्माण ही ऐसे किया गया है की उसमे जल संरक्षित हो सके,किन्तु एक सामाज ऐसा भी है जहां प्रकृति इतनी कट्टर नहीं है किन्तु लोग पानी को लेके इतने सजग नहीं हैं।

पुस्तक का संदेश- इस पुस्तक के माध्यम से अनुपम मिश्र यह संदेश देना चाहते हैं कि यदि राजस्थान की मरुभूमि पानी से गीली हो सकती है अर्थात् वहाँ पानी अपने सम्पूर्ण अस्तित्व में हो सकता है तो अन्य जगह क्यों नहीं जहां प्रकृति का इतना कहर नहीं है।

5. राजस्थान की रजत बूंदें

3. हमारा पर्यावरण

संबंधित विषय- अनुपम मिश्र ने अपनी इस कृति के माध्यम से बताया है कि कवि जिस मिट्टी के गुण गाते नहीं थकते थे, वह आज बंजर हो चली है। यह पुस्तक देश के पर्यावरण पर प्रस्तुत दूसरी गैर सरकारी रिपोर्ट है। हमारा पर्यावरण में अनुपम मिश्र ने पर्यावरण के क्षेत्र में हो रही घटनाओं और उनके पीछे छिपी नीतियों और विकास की अवधारणाओं को साथ में रखकर देखने की कोशिश की है। यह भी दर्शाया है की इनके कारण लाभ कौन पता है और किसे नुकसान होता है। प्रस्तुत पुस्तक के जरिए उन्होंने यह चेताने की कोशिश की है कि कैसे प्राकृतिक सम्पदा पूरे समाज से छीन कर कुछ लोगों को लाभ पहुंचाने के लिए किस तरह बर्बाद की जा रही है। यह भी समझने की कोशिश की है कि किस तरह सम्पदा के भिन्न भिन्न रूपों पर समाज के विभिन्न अंग टिके थे और आज विकास के नाम पर कैसे ये जीवन टूट चले हैं और इस कारण स्त्री- पुरुषों, गाँव- शहर, पशु–पक्षियों पर क्या बीत रही है। हमारा पर्यावरण पुस्तक कुछ तथ्य प्रस्तुत करती है जिसके अनुसार चारगाह समाप्त हो रहे हैं। पशुपालक उखड़ रहे हैं। देश में लगभग 8 लाख हेक्टेयर ज़मीन

बीहड़ बनती जा रही है और जिस रफ्तार से बीहड़ को रोकने का काम किया जा रहा है, उस हिसाब से इस कार्य को पूरा होने 250 वर्ष लगेंगे और तब यह बीहड़ दोगने हो जाएंगे। पिछले तीस वर्षों में खनिज उत्पादन 50 गुना हुआ है पर इसके कारण लाखों हेक्टेयर फसल और वन चौपट हुए हैं और अनेक गाँव वीरान हुए हैं।

पुस्तक का सामाजिक और पर्यावरणीय पक्ष- प्रस्तुत पुस्तक या रिपोर्ट में अनुपम मिश्र ने एक ऐसे समाज को दिखाया है। जिसके बारे में शायद आज हम अंजान हैं। प्रस्तुत पुस्तक का समाज सभी प्रकार के प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण था। एक समय में एक ऐसा समाज भी था जिसके पास खेती की ज़मीन, जंगल की ज़मीन, और चारगाह की ज़मीन उपलब्ध थी। किन्तु बीते कई वर्षों में चारगाह की ज़मीन की उपेक्षा की गई है, जिसकी वजह से पर्यावरण की समस्या पैदा हो गयी। फिर समाज और आधुनिक हुआ और उद्योग बढ़े जिसकी वजह से धरती और बिगड़ने लगी। एक ऐसा समाज था जिसकी वजह से पशुधन के मामले में देश बहुत धनी था। किन्तु 1986 के आते आते पर्यावरण की हालत नाज़ुक हो गई। अंततःपुस्तक का सामाजिक और पर्यावरणीय पक्ष यह है की हमारा समाज पूर्ण था प्रकृति हरी भरी थी किन्तु धीरे धीरे समाज की परिभाषा बदलती गयी और जो भूमि चारगाहों से परिपूर्ण थी वहाँ पर उद्योग शुरू होने लगे जिससे पर्यावरण को क्षति हुई।

पुस्तक का संदेश- अनुपम मिश्र की यह पुस्तक शाश्वत विकास का संदेश देती है। प्रकृति के पास हमारी ज़रूरत पूरा करने के लिए हमेशा से ही सबकुछ था किन्तु हमारे लालच ने प्रकृति से यह शक्ति छीन ली है।

4. महासागर से मिलने की शिक्षा

संबंधित विषय- अनुपम मिश्र की यह पुस्तक महासागर से मिलने वाली शिक्षा उनके द्वारा लिखे गए विभिन्न लेखों जैसे जड़े, राज, समाज और पानी, तैरने वाला समाज डूब रहा है, अकेले नहीं आते बाढ़ और अकाल, दुनिया का खेला,साध्य,साधन और साधना जैसे महत्वपूर्ण लेखों का समायोजन है। पर्यावरणविद् अनुपम मिश्र ने अपनी इस पुस्तक में जल संरक्षण से जुड़ी बुनियादी बाते तो बताई ही हैं और

साथ ही में इस पुस्तक में उनके गांधीवादी पर्यावरणविद् रूप से भी हमें रूबरू कराती है। इस पुस्तक में उनके अलग-अलग मौकों पर दिये गए भाषणों, व्याख्यानों और लिखे लेखों का समायोजन है। यह किताब उनके सात व्याख्यान/भाषण और चार लेखों से सुसज्जित है। ज्यादातर लेखों में जल और जंगल के पारंपरिक प्रबंधन के उदाहरण देते हुए इसे आज के दौर की समस्याओं का समाधान बताया गया है। प्रस्तुत पुस्तक में अनुपम मिश्र ने पर्यावरण से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य प्रस्तुत किए हैं।

पुस्तक का सामाजिक और पर्यावरणीय पक्ष- अनुपम मिश्र कहते हैं कि बाढ़, सूखा और अकाल से निपटने के लिए कैसे भारतीय समाज के अलग-अलग हिस्सों में पानी के सामूहिक प्रबंधन की शानदार परंपरा थी। वे यह भी लिखते हैं की, 'अंग्रेजों के आने से पहले देश के पांच लाख गांवों में, कुछ हजार कस्बे-शहरों में, राजधानियों में कोई बीस लाख तालाब समाज ने बिना किसी *वॉटर मिशन* या *वॉटरशेड डेवलेपमेंट* के, अपने ही साधनों से बनाए थे। उनकी रखवाली, टूट-फूट का सुधार भी लोग खुद ही करते थे। हमें जरा उस ढांचे के आकार की, प्रकार की, संख्याबल की, बुद्धिबल की, संगठनबल की कल्पना करनी चाहिए जो पूरे देश में पानी का प्रबंध करता था किन्तु आज का दृश्यलेख ही बदल चुका है आज का समाज दूसरा है जिसे नदियों में बहते हुए शीतल पानी से ज़्यादा उस पर बांध बनाकर बिजली उत्पन्न करना ज़्यादा पसंद है।

पुस्तक का संदेश- अनुपम मिश्र लिखते हैं कि समुद्र और धरती के मिलन बिन्दु पर, हजारों वर्षों से एक उत्सव की तरह खड़े वन बहुत विशिष्ट स्वभाव लिए होते हैं। दिन में दो बार ये खारे पानी में डूबते हैं तो दो बार पीछे से आ रही नदी के मीठे पानी में। मैदान, पहाड़ों में लगे पेड़ों से वनों की तुलना करना ठीक नहीं है। वनस्पति काऐसा दर्शन अन्य किसी स्थान पर संभव नहीं है। यहाँ इन पेड़ों की, वनों की जड़ें भी ऊपर रहती हैं लेकिन आज दुर्भाग्य से हमारा पढ़ा-लिखा संसार कुछ और ही प्रकृति की कल्पना कर चुका है। अनुपम मिश्र की यह पुस्तक जनमानस को अपने स्वयं के पर्यावरण की रक्षा का संदेश देती है।

5.2. अनुपम मिश्र द्वारा लिखे लेखों का अध्ययन:

1. तालाब बांधता धरम सुभाव (हिंदुस्तान 5 जनवरी 2014)

संबंधित विषय- अनुपम मिश्र ने अपने इस लेख में भारत की भव्य तालाब निर्माण की परंपरा के बारे में बताया है और इस विषय पर ज़ोर दिया है कि जो समाज को जीवन दे उसे निर्जीव कैसे ,माना जा सकता है? तालाबों में, जलस्त्रोतों में जीवन माना गया और समाज ने उनके चारों ओर जीवन रचा। पहले के समाज में तालाब निर्माण करना और कराना लोगों की संस्कृति में शामिल था।

लेख का सामाजिक और पर्यावरणीय पक्ष- लेखक ने अपने इस लेख में एक ऐसे समाज का दिखाया है जहां तालाब बनाना लोगों का स्वभाव था प्रसंग सुख का हो तो तालाब बन जाता था, प्रसंग दुख का हो तो तालाब बन जाता था। पूरे समाज पर दुख आता, अकाल पड़ता तब भी तालाब बनाने का काम होता था। लोगों को तात्कालिक राहत मिलती और पानी का इंतजाम होने के बाद में फिर कभी आ सकने वाले इस दुख को सह सकने की शक्ति समाज में बनती थी। बिहार के मधुबनी इलाके में छठवीं सदी में आए एक बड़े अकाल के समय पूरे क्षेत्र के गाँवों ने मिलकर 63 तालाब बनाएँ थे। कहीं पुरस्कार की तरह तालाब बना दिया जाता, तो कहीं तालाब बनाने का पुरस्कार मिलता था। दण्डविधान में भी तालाब मिलता है। बुंदेलखंड में जातीय पंचायतें अपने किसी सदस्य की अक्षम्य गलती पर जब दण्ड देती थीं तो उसे दण्ड में प्रायः तालाब बनाने को कहती थीं। यह परंपरा आज भी राजस्थान में मिलती है। अलवर जिले के एक गाँव गोपालपुरा में पंचायती फैसलों को न मनाने की गलती करने वालों से दण्ड स्वरूप कुछ पैसा ग्राम कोष में जमा करवाया जाता है। उसी कोष से यहाँ कई छोटे छोटे तालाब भी बनवाए जा चुके हैं। लेकिन आज समाज का एक वर्ग जिसे हम पढ़ा-लिखा वर्ग कहते हैं ऐसा भी है जिसे यह संस्कृति रास नहीं आती। पहले बड़े शहर या गाँव की परिभाषा में उसके तालाब की गिनती होती है थी किन्तु आज गिनती ऊंची इमारतों की जाती है।

लेख का संदेश- तालाबों के दीर्घ जीवन का एक ही रहस्य था ममत्व, किन्तु आज के बदलते परिदृश्य ने यह परिभाषा नहीं बदली। आज लोग तालाब निर्माण में विश्वास नहीं रखते हैं। सिर्फ खुद के लिए सोचते हैं। अनुपम मिश्र का यह लेख लोगों को फिर से एकजुट होकर तालाब निर्माण की मुहिम शुरू करने और अपने प्राकृतिक संसाधनों को बचाने का संदेश देता है।

2. धरती का बुखार (हरियाणा स्काउट संवाद सितम्बर 2010)

लेख का संबंधित विषय- अनुपम मिश्र के इस लेख का विषय पर्यावरण है। इस लेख में उन्होंने पर्यावरण पर आने वाले और पर्यावरण में घटित होने वाले संकट पर चिंता व्यक्त की है। उनके इस लेख के माध्यम से भविष्य के पर्यावरण की कल्पना साफ साफ की जा सकती है। अपने इस लेख में वह कुछ वर्ष पहले आई हुई सुनामी का ज़िक्र करते हैं और लिखते हैं की समुद्र तट से जुड़ी ज़मीन हमारे अनेक प्रदेशों में हैं। पूर्व में बंगाल से लेकर पश्चिम में महाराष्ट्र तक छोटे बड़े कई प्रदेश समुद्र में खुलते हैं पर हम तो इस सुनामी का नाम ही भूल गए हैं। हिंदुस्तान के ही नहीं दुनिया भर के इतने सारे उपग्रहों के तैनात होने के बावजूद किसी को उसकी सूचना नहीं थी। सुनामी आई और सब बर्बाद कर दिया और आज हम फिर से उसी सुप्तावस्था में हैं जो भयंकर तबाही के बाद ही टूट सकती है।

लेख का सामाजिक और पर्यावरणीय पक्ष- पर्यावरण और मानव एक दूसरे को प्रभावित करते हैं मनुष्य जैसा व्यवहार प्रकृति के साथ करता है प्रकृति भी उसके साथ वैसा ही व्यवहार करती है। बदलते मौसम की,गरम होती धरती की चिंता सबको है और यह स्वाभाविक है। अगर धरती का गरम होने का असर समझना हो तो हमें अपने शरीर का उदाहरण मानकर समझना चाहिए। जब हम निश्चित तापमान में रहते हैं तो स्वस्थ रहते हैं। शरीर का तापमान एक डिग्री भी ज़्यादा हो जाए तो कहते हैं कि बुखार हो गया है फिर हम उसे उतारने की कोशिश करते हैं क्योंकि हम ज़्यादा तापमान सह नहीं सकते हैं। उसी तरह धरती का गरम होना धरती का बुखार है वह बार बार कह रही कि उसका तापमान बढ़ रहा है, उसका बुखार उतारने का उपाय किया जाए लेकिन ऐसा नहीं हो पा रहा है। आज का समाज धरती के बुखार को कम करने का कोई उपाय तो नहीं कर रहे अपितु उससे निरंतर बढ़ा ही रहे हैं। जब धरती का बुखार अपनी चरम

सीमा पर होगा तब जीवन की कल्पना करना एक फरेब होगा। हमारा पढ़ा-लिखा समाज ठंड और गर्मी के मौसम के आंकड़ों को अभी हाल में इकट्ठा करना सीखा है। इसका इतिहास अंग्रेजों के आने के बाद का है। करीब सौ-सवा सौ साल पहले मौसम विज्ञान के विभाग बने थे और तब तो ये बहुत ही कामचलाऊ अवस्था में थे। पृथ्वी दिवस पर वह लिखते हैं कि किसी को भी नहीं मालूम नहीं कि यह कब शुरू हुआ, किसने इसकी शुरुआत की। भारत सरकार का यह दिवस या पर्यावरण मंत्रालय का या कि किसी ने कह दिया कि 22 अप्रैल को धरती दिवस मनाते हैं। इस चक्कर में हम अपने बनाए हुए दिवस भूल गए।

लेख का संदेश- अनुपम मिश्र अपने इस लेख के माध्यम से यही कहना चाहते हैं कि पर्यावरण का संकट वास्तविक संकट है और इसे नकली औजारों से नहीं लड़ा जा सकेगा। इसके लिए वास्तविक तैयारी करनी पड़ेगी।

3. गंगा अभियानों से नहीं होगी साफ (जनमत स्वर जून 2016)

लेख का संबंधित विषय- प्रस्तुत लेख का विषय गंगा नदी की सफाई पर आधारित है। समय समय पर गंगा की सफाई की योजनाएँ बनती आई हैं। उदाहरण देते हुए अनुपम मिश्र लिखते हैं की बेटे-बेटियाँ जिद्दी हो सकतें हैं। कुपुत्र-कुपत्री भी हो सकते हैं पर हमारी संस्कृति में प्रायः यही माना जाता है कि माता-कुमाता नहीं होती। ज़रा सोचें कि जिस गंगा माँ के बेटे-बेटी उसे स्वच्छ बनाने के प्रयत्न में कोई तीस-चालीस बरस से लगे रहे हैं वह भला साफ क्यों नहीं होती ? क्या इतनी जिद्दी है हमारी माँ? सफाई की अनेक योजनाएं पहले भी बनी हैं। बिना कोई अच्छा परिणाम दिए कुछ अरब रुपये इन योजनाओं में बह चुके हैं। इसलिए केवल भावनाओं में बहकर हम फिर ऐसा कोई काम न करें कि इस बार भी अरबों रुपेय की योजनाए बनें और गंगा जस की तस गंदी ही रह जाए।

लेख का सामाजिक और पर्यावरणीय पक्ष- लेख का सामाजिक और पर्यावरणीय पक्ष यह है कि तीस -चालीस बरस पहले तक छोटे-बड़े सभी शहरों में अनगिनत तालाब हुआ करते थे। ये तालाब चौमासे की वर्षा को अपने आप में संभालते थे और शहरी क्षेत्र की बाढ़ भी रोकते थे और वहाँ का भू-जल

भी उठाते थे। किन्तु यदि आज नदी का सारा पानी विकास के नाम पर निकालते रहे, ज़मीन की कीमत ने नाम पर तालाब मिटते रहें और फिर सारे शहरों, खेतों की सारी गंदगी, जहर नदी में मिलाते जाएँ। फिर सोचें कि अब कोई कई योजना बनाकर हम नदी साफ कर लेंगे यह तो मूर्खता होगी! गुजरात का भूरुच इलाका इसका उदाहरण है जहां रसायन उद्योग ने विकास के नाम पर नर्मदा को किस तरह बर्बाद किया है। कालराज मिश्र के अनुसार गंगा भारत की जीवनधारा है यह केवल नदी ही नहीं, भारत की आस्था, संस्कृति , परंपरा, सभ्यता की स्वर्णिम इतिहास, प्रेरणा और पूजा है। आज गंगा विश्व की छठी सर्वाधिक प्रदूषित नदी है। विश्व की दस अत्यधिक प्रदूषित नदियों में गंगा एक है। गंगा के कछारी क्षेत्र में कृषि में उपयोग में आने वाले उर्वरकों की मात्रा सौ लाख टन है, जिसका पांच लाख टन बहकर गंगा में मिल जाता है। 1500 टन कीटनाशक भी मिलता है। सैकड़ों टन रसायन, कारखानों, कपडा मिलों, डिस्टलरियों, चमड़ा उद्योग, बूचड़खाने, अस्पताल और सकडों अन्य फैक्टरियों का निकला उपद्रव्य गंगा में मिलता है। 400 करोड़ लीटर अशोधित अपद्रव्य, 900 करोड अशोधित गंदा पानी गंगा में मिल जाता है। नगरों और मानवीय क्रियाकलापों से निकली गंदगी नहाने-धोने, पूजा-पूजन सामग्री, मूर्ति विसर्जन और दाह संस्कार से निकला प्रदूषण गंगा में समा जाता है।

भारत में गंगा तट पर बसे सैकड़ों नगरों का 1100 करोड़ लीटर अपशिष्ट प्रतिदिन गंगा में गिरता है। आज गंगा के आस्तित्व और भविष्य पर बेशुमार संकट है। हमारी गलत नीतियों और करतूतों ने हालात को और भी बदतर बना दिया है। सन् 1979 में केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण मंडल ने गंगा में प्रदूषण की विकरालता को समझते हुए एक समीक्षा की थी। सन् 1985 में गंगा एक्शन प्लान का प्रारम्भ हुआ, पर गंगा की हालत नहीं बदली। गंगा बेसिन अथारिटी की स्थापना 2009 में हुई पर नतीजे नहीं मिले। वर्ष 2014 में नमामि गंगे परियोजना की घोषणा हुई है। गंगा प्रदूषण मुक्त, शुद्ध रहे, बाधाओं से मुक्त होकर आविरल बहे और बहती रहे इसी में भारत का हित है। इस हेतु भारत सरकार की पहल और प्रयास सराहनीय है। इसके साथ ही गंगा किनारे के पांच राज्यों, सैकड़ों नगरों और उद्योगों को भी जुटना होगा। वैज्ञानिक,जल विज्ञानी,भूगर्भशास्त्री, सलाहकार, नीति निर्माता, पर्यावरणविद, गैरसरकारी संगठन, विशेषज्ञ, धर्मिक प्रमुख, साधु संत, गंगा के किनारे आजीविका चलाने वाले मछली पालक मल्लाह, नविक, कृषक, मजदूर से लेकर देश का प्रत्येक नागरिक अपनी सम्पूर्ण चेतना से इस समस्या को समझे और अपने हिस्से का योगदान दें,

तभी हम स्वच्छ, निर्मल, प्रदूषणमुक्त आविरल गंगा की कल्पना साकार कर सकते हैं, हमारा दृढ निश्चय, राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य बोध और माँ गंगा की रक्षा का संकल्प आनिवार्य है। यह अपरिहार्य भी है तकि गंगा बहे, बहती रहे।[3]

लेख का संदेश- कोई भी नदी मात्र अभियान बनाने से साफ नहीं होगी। किसी भी नदी को साफ करने के लिए हमें नदी धर्म को समझना होगा। विकास की हमारी आज जो इच्छा है उसकी ठीक से जांच करें बिना कटुता के। गंगा को,हिमालय को कोई चुपचाप षड्यंत्र करके नहीं मार रहा है यह तो सब हमारे ही लोग हैं। जीडीपी, विकास, नदी जोड़ो परियोजना में सर्वसम्मति से गंगा को मिटाने की कोशिश की जा रही है इसलिए सर्वसम्मति से गंगा को बचाने की मुहिम शुरू करनी होगी।

4. तैरने वाला समाज डूब रहा है (लोकशक्ति सन्देश मैगज़ीन जुलाई 2005)

लेख का संबंधित विषय- इस लेख का विषय नदियां और तालाब हैं। इस लेख में उत्तर बिहार की नदियों का विवरण किया गया है। अनुपम मिश्र लिखते हैं कि उत्तर बिहार में समाज का एक सरल दर्पण साहित्य रहा होगा तो दूसरा तरल दर्पण नदियां थी। उन्नीसवीं शताब्दी तक वहाँ के बड़े-बड़े तालाबों के बड़े-बड़े किस्से चलते थे। लेकिन धीरे-धीरे ये किस्से कहीं गुम होने लगे। जो समाज बाढ़ में तैरता था वह आज डूब रहा है। पिछले दो-एक सौ साल में कई तटबंध और बांध बनें। बिना नदियों का स्वभाव समझे कई छोटे और बड़े बांध बनाए गए। नदियों की धारा इधर से उधर न भटके- यह मान कर हमने एक नए भटकाव के विकास की योजना अपनाई है जिसको तटबंध कहते हैं। आज पता चलता है कि इनसे बाढ़ रुकने के बजाय बढ़ी है, नुकसान ज्यादा हुआ है।

लेख का सामाजिक और पर्यावरणीय पक्ष- पहले का समाज नदियों कि बाढ़ के पानी को रोककर बड़े बड़े तालाबों में डालता था और इससे इनकी बाढ़ का वेग कम करता था। उत्तर बिहार के लोग बाढ़ से खेलना जाते थे। यहां का समाज इस बाढ़ में तैरना जानता था। इस बाढ़ में तरना भी जानता है। इस पूरे इलाके में हृद और चौरा या चौर दो शब्द बड़े तालाबों के लिए हैं। चौर में भी बाढ़ का अतिरिक्त पानी

रोक लिया जाता था। धीरे-धीरे बाद के नियोजकों के मन में यह आया कि इतनी जलराशि से भरे बड़े-बड़े तालाब बेकार की जगह घेरते हैं- इनका पानी सुख कर जमीन लोगों की खेती के लिए उपलब्ध करा दें। यह नदियों की गोद में पला-बढ़ा समाज था। इसे बाढ़ भयानक नहीं दिखती थी। अपने घर की, परिवार की, सदस्य की तरह दिखती थी।

लेख का संदेश- प्रस्तुत लेख का संदेश यह है कि बाढ़ आज से नहीं आ रही है। अगर आप बहुत पहले का साहित्य न भी देखे तो देश के पहले राष्ट्रपति राजेंद्र बाबू की आत्मकथा में देखेंगे तो उसमें छपरा की भयानक बाढ़ का ज़िक्र मिलेगा। उत्तर बिहार जहां कभी लोग बाढ़ से नहीं घबराते थे, जिन्हें तैरने वाला समाज कहा जाता था, वह आज प्राकृतिक संसाधनों से खिलवाड़ करने के कारण उसी बाढ़ में डूब रहे हैं।

5. मृगतृष्णा झुठलाते तालाब (समरथ में जून 2016)

लेख का संबंधित विषय- अनुपम मिश्र का यह लेख जैसलमेर, बाड़मेर और बीकानेर के जल प्रबंधन पर आधारित है। वह लिखते हैं की यह क्षेत्र सबसे गरम और सूखे क्षेत्र हैं। साल में कोई 3 इंच से 12 इंच पानी बरसता होगा। जल के अभाव को ही मरुभूमि का स्वभाव माना गया है। चारों तरफ मृगतृष्णा से घिरी तप्ति भूमि में जीवन को बचाए रखने में यहाँ के लोगों का सबसे बड़ा हांथ है। पानी को बचाने का जूनून यहाँ की परंपरा है। इसी संदर्भ में मृगतृष्णा को झुठलाते हुए जगह- जगह तरह- तरह प्रबंध किए गए हैं। जहां तालाब नहीं, पानी नहीं, वहाँ गाँव नहीं। किसी भी घर को बनाने से पहले वहाँ जल प्रबंधन किया जाता है।

लेख का सामाजिक और पर्यावरणीय पक्ष- इस लेख में एक ऐसा समाज देखने को मिलता है जिसने चारों तरफ मृगतृष्णा से घिरी तपती मरुभूमि में जीवन की एक जीवंत संस्कृति की नींव रखते समय इस समाज ने पानी से संबंधित छोटी से छोटी बात को देखा-परखा। पानी के मामले में हर विपरीत परिस्थिति में उसने जीवन की रीत खोजने का प्रयत्न किया और मृगतृष्णा को झुठलाते हुए जगह-जगह तरह-तरह के प्रबंध किए। मरुभूमि में सैकड़ों गाँवों का नामकरण वहाँ बने तालाबों से जुड़ा है। इस समाज ने

पानी के मामले में हर विपरीत परिस्थिति में उसने जीवन की रीत खोजने का प्रयत्न किया और मृगतृष्णा को झुठलाते हुए जगह-जगह तरह-तरह के प्रबंध किए हुए हैं।

लेख का संदेश- मेघ और मेघराज भले ही मरुभूमि में कम आते हों, लेकिन मरुभूमि में मेघोजी जैसे लोगों की कमी नहीं रही। पानी के मामले में इतना योग्य बन चुका समाज अपनी योग्यता को, कौशल को,अपना बताकर घमंड नहीं करता। लेख का यह संदेश है की जब मरुभूमि गीली हो सकती है तो अन्य जगह जहां प्रकृति मेहरबान रहती है वहाँ भी जल संरक्षित किया जा सकता है।

6. जल समृद्धि के देश में क्यों है ऐसी प्यास (कादम्बिनी 12 मई 2016)

लेख का संबंधित विषय- अनुपम मिश्र ने अपने इस लेख में जल संकट पर कटाक्ष करते हुए में देश के परंपरागत जल प्रबंधन का ज़िक्र किया है। वह लिखते हैं कि कई सालों से यह बात जुमले की तरह अक्सर सुनने को मिल जाती है कि तीसरा विश्वयुद्ध पानी के लिए होगा। यह तो खैर कब होगा, क्या होगा, पर मैं तो यह याद दिलाना चाहता हूँ कि जो हो रहा है वह ही कहाँ कम है! आज भी दो प्रदेशों के बीच युद्ध हो रहा है, दो देशों के बीच भी हो रहा है। बढ़ते जल संकट के साथ जल-संरक्षण और जल प्रबंधन की चर्चा भी दुनियाभर में ज़ोरों से की जाती रही है, लेकिन लोग, जो अपनी धरोहर को पीढ़ी दर पीढ़ी एक दूसरे को सौंपते आए हैं, मरुधरा में भी जल-प्रबंधन करते आए हैं, उन्हें चर्चा में कहीं शामिल नहीं किया जाता। राजस्थान में नहर आई, यह नेतृत्व का निर्णय है, अधिकारियों का निर्णय है। लोगों की इच्छा, हो सकता है जगाई गयी हो, लेकिन उनको नहीं मालूम कि प्रदेश में पानी आएगा तो क्या गुल खिलाएगा ? वे अपने आँगन में ही पराए हो जाते हैं , जबकि इस समाज का सुंदर जल-दर्शन देख इस धरा को सजदा करने को जी चाहता है। इनके संचित ज्ञान का इस्तेमाल कर उस जगह का आगे का जल-प्रबंधन किया जाए तो शायद दुनिया ही बदली नज़र आएगी।

लेख का सामाजिक और पर्यावरणीय पक्ष- प्रस्तुत लेख का सामाजिक और पर्यावरणीय पक्ष पर जोर देते हुए अनुपम मिश्र कहते हैं कि और मामलों में भले ही हमारे देश गरीब हो, पर पानी के मामले में

हम अमीर रहे हैं। पानी की भाषा तक अतिशय समृद्ध है।पानी के इतने रूप, इतने पर्याय किसी और भाषा में दुर्लभ हैं। बावजूद इसके, आज की तारीख में इस देश में भी जल-संकट दिन-ब-दिन जिस तरह गहरता हुआ दिख रहा है, वह चिंताजनक है। आखिर इस हाल तक हम क्यों और कैसे पहुँच गए हैं। हमारे पुरखे मिट्टी के रंग, गंध से उसका स्वभाव जान लेते थे, सतह का दबाव भी पहचानते थे। जैसलमेर के रामगढ़ खंड का ज़िक्र करते हुए अनुपम मिश्र लिखते हैं कि यहाँ सबसे कम पानी गिरता है किन्तु पुरखों का ज्ञान तो देखिए कि तीन-सौ फुट नीचे तक खारा पानी मिलता है, वहाँ करीब चालीस-चालीस किलोमीटर की दूरी तक मीठे पानी के कुएं ढूंढ निकाले। किसी संस्था या सरकार ने यहाँ पैसा नहीं लगाया और ना ही कोई पंचवर्षीय योजना बनी।

आज के परिप्रेक्ष्य में पानी की समस्या को हल करने के लिए बड़े पैमाने पर नदियों को जोड़ने की बात कही जा रही है। पिछले बरसों में तालाबों की विदाई के साथ साथ बाढ़ का आगमन भी हुआ है। एक-दो घंटे भी पानी बरस जाए , तो सड़कें लबालब हो जाती हैं , घरों में पानी घुस जाता है। इसका कारण यह है कि पहले यह पानी जिन तालाबों में इकट्ठा होता था, अब वहाँ कॉलोनी और मॉल बन गए हैं।

लेख का संदेश- अनुपम मिश्र के इस लेख का संदेश सही जल प्रबंधन का है। पानी के बारे में हमें अपनी सोच किस समीक्षा करने चाहिए क्यों कि पर्यावरण को संतुलित किया जा सकता है, परंतु भूगोल को नहीं।पृथ्वी की जो ढ़ाल है, चढ़ाव है, जिसके कारण ज़्यादातर नदियां पूरब की तरफ बहती हैं उन्हें पश्चिम की तरफ मोड़ेंगे तो आनेवाली पीढ़ी हमें कभी माफ नहीं करेगी। पानी का मान पानी के हिसाब से रखना पड़ेगा, वरना पानी कब आदमी का पानी उतार लेगा, हम-आप समझ भी नहीं पाएंगे।

7. विकास की बर्बर अराजकता और पर्यावरण (सशर्त पत्रिका दिसम्बर 2014)

लेख का संबंधित विषय- अनुपम मिश्र का यह लेख विकास और पर्यावरण से संबंधित है। अनुपम मिश्र लिखते हैं कि आधुनिक विकास आज एक राजक्षमा, राजरोग और आसान शब्दों में कहें तो तपेदिक की बीमारी की तरह लोगों को तिल-तिल खा रहा है, गला रहा है। कभी-कभी ज़्यादा हल्ला मच जाए तो

विकास वाले उदारतापूर्वक इस रोग का इलाज करने के लिए राजवैद्य नियुक्त कर देते हैं। आबादी का एक बड़ा हिस्सा प्राकृतिक संसाधनों की नष्ट करने पर तुला हुआ है। इसमें लालची पूंजीवादी भी हैं और कल्याणकारी समाजवादी सार्वजनिक उद्योग भी।

लेख का सामाजिक और पर्यावरणीय पक्ष- अनुपम मिश्र के इस लेख के अनुसार दिवस और दिन में बहुत फर्क होता है। तीन सौ चौसठ दिनों में की गयी गलतियों को ढंकने में दिवस ढक्कन की तरह काम आता है। पिछले कई वर्षों से 5 जून को मनाया जाने वाला विश्व पर्यावरण दिवस कुछ ऐसा ही ढक्कन है। इस ढक्कन का उपयोग दो तरह से होता है। यह साल भर समाज द्वारा पर्यावरण में फैलाई गयी गंदगी को ढकता है, और कुछ के मैन में छिपे गुस्से को निकालने के लिए सेफ़्टी-वाल्व भी इसमें है। जबसे पर्यावरण दिवस मन रहा है, तब से देश के पर्यावरण को सुधारने की तमाम कोशिशों के बावजूद यह चौतरफा दिन-दूना, रात-चौगुना ही बिगड़ रहा है और इस पर टिकी आबादी का जीवन पहले से ज़्यादा खतरे में पड़ता जा रहा है।

लेख का संदेश- प्रस्तुत लेख का संदेश यह है कि आधुनिक विकास हमारी अच्छी से अच्छी पद्धति या चीज़ के बारे में हमारे मन में सेंध लगा देता है, चाहे वे पीने के पानी जुटाने वाले परंपरागत तरीके हों, घर में बनाने वाली परंपरागत सामाग्री हो, बेरोक-टोक ठीक फसल देने वाले बीज हों, बाज़ार पर न निर्भर रहने वाली पूरी कृषि पद्धति हो। दूसरी तरफ इस विकास में हर तरफ छिपे धोखे और खतरे से बचने की भी कोशिश हो पाए, इसके लिए कुछ लाल फीते बांध दिए जाते हैं, इन लाल फीतों को खोलने की कोशिश वे सभी लोग लगे हैं जो इनके सुनहरे फीते खोल रहे हैं।

5.3.अनुपम मिश्र की पर्यावरण पत्रकारिता का प्रभाव: अनुपम मिश्र ने पर्यावरण में जाकर लोगों के बीच उनके पर्यावरण को समझा फिर उसका सार अपनी किताब में प्रस्तुत किया। उनकी किताब और लेखों की भाषा बहुत साधारण है जो एक आम व्यक्ति जो ज़्यादा पढ़ा-लिखा ना हो वह भी किताब का संदेश अच्छे से समझ सकता है। उनकी किताबों ने बहुत लोगों को प्रेरित किया और आज भी कर रही है।

- **किताब पढ़कर कर्तव्य सूझा-**

➢ **मध्यप्रदेश-** मध्यप्रदेश के सागर जिले के कलेक्टर बी.आर. नायडू को अनुपम मिश्र की किताब आज भी खरे हैं तालाब एक पत्रकार ने भेंट स्वरूप दी थी। इस किताब को पढ़कर वह बहुत प्रभावित हुए और बदलाव करने की ठान ली। जगह-जगह जाकर वह गाँववालों को प्रेरित करने लगें। वह कहते थे कि तालाब का काम शुरू कीजिए अगर शासन कोई मदद कर सकेगा वह बाद में करेगा। काम पहले शुरू हो जाना चाहिए। उन्होंने स्वैच्छिक सेवा की एक बड़ी मुहिम शुरू की। रोज़ 11000 रुपेय की एक बड़ी क्रेन लगाई गयी। रोज़ एक मोहल्ले के लोग चंदे से यह रकम देते थे और क्रेन यह काम करती थी। इस मुहिम में प्रसिद्ध गीतकार और कारोबारी विट्ठल भाई पटेल ने भी खूब चंदा जमा किया। अपना काम छोड़कर वह एक-एक रुपया चंदा जुटाते थे और ग्यारह हज़ार रुपेय होने पर अभियान रोकते थे। ऐसा करके सागर में एक विशाल तालाब की सफाई हो गयी और यह अभियान यहाँ रुका नहीं नायडू की यह अलख 1000 तालाबों को निरंजन कर गयी। ऐसी ही एक और अलख के कारण मध्यप्रदेश के शिवपुरी जिले के लगभग 340 तालबों को पुनर्जीवित किया गया।

(जनसत्ता 27 जून 2004)

➢ **गुजरात का भुज गाँव-** अनुपम मिश्र की इस कालजयी पुस्तक से गुजरात में भी बारिश हुई। गजरात के भुज के हीरा व्यापारियों ने अनुपम मिश्र की पुस्तक आज भी खरें हैं तालाब से प्रभावित होकर अपने क्षेत्र में जल संरक्षण की मुहिम चलाई। पुस्तक से प्रेरणा पाकर पूरे सौराष्ट्र में जल संरक्षण की अनेक यात्राएं निकाली गईं।

गुजरात की एक संस्था संभाव के श्री फरहाद कोंट्रक्कटर पर इस पुस्तक का गहरा प्रभाव पड़ा। श्री फरहाद राजस्थान के बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, अलवर, जोधपुर, महाराष्ट्र ,गुजरात के कई हिस्सों के पुराने जलस्त्रोतों को बचाने के विराट काम में जुटे हैं।

(इंडिया वॉटर पोर्टल 8 सितम्बर 2008)

- **जयपुर जिले का लापोड़िया गाँव-** जयपुर के लपोड़िया गाँव के निवासी लक्ष्मण सिंह अनुपम मिश्र की पुस्तक से प्रभावित हुए और लपोड़िया अकाल के श्राप से मुक्त हुआ। लपोड़िया गाँव ने ना सिर्फ अपनी जलगाहें बचाई बल्कि अपने प्रदेश की चारगाहें और गोचर भी बचाएं। अपने सामूहिक प्रयास से 300 घरों का लपोड़िया जयपुर डेयरी को 40 लाख वार्षिक दूध दे रहा है।

(सहारा समय 2 जुलाई 2005)

- **उत्तरांचल में भी जली अलख-** पौड़ी गढ़वाल के उफरेखाल क्षेत्र के दूधाटोली लोकविकास संस्थान के श्री सच्चिदानंद भारती ने अनुपम मिश्र की पुस्तक से प्रेरणा पाकर पानी बचाने के लिए पहाड़ी तलाई को पुनर्जीवित करने का काम शुरू किया। इस दौरान पिछले 13 सालों में उन्होंने 13 हज़ार चालों को बचाया बनाया।

(इंडिया वॉटर पोर्टल 8 सितम्बर 2008)

- **कर्नाटक-** कर्नाटक सरकार ने पुस्तक से प्रभावित होकर तालाब बचाने का काम सीधे अपने हाथों में लिया और वहाँ एक जल संवर्धन योजना संघ बनाया तथा विश्व बैंक की मदद से पूरे राज्य के तालाबों को बचाने की योजना तैयार की।

(इंडिया वॉटर पोर्टल 8 सितम्बर 2008)

- **पंजाब में भी बरसे मेघा-** अनुपम मिश्र की पुस्तक पंजाब के साहित्यकारों ने, आलोचकों,लोकनायकों, सामाजिक और पर्यावरणीय-धार्मिक संस्थाओं के साथ-साथ धार्मिक संतों यहाँ तक की गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के सदस्यों पर इस पुस्तक का खासा प्रभाव पड़ा।संत

बलबीर सीचेवाल जी ने बेहद रचनात्मक उपयोग किया। वे अब नदी किनारे होने वाले वार्षिक साहित्य सम्मेलनों में पुस्तक खरीदकर रचनधर्मियों को भेट करते हैं।पंजाब के लोकगायकों ने इस पुस्तक को पढ़कर अपने तरीकों से जलस्त्रोतों को बचाने की मुहिम शुरू की।

(इंडिया वॉटर पोर्टल 8 सितम्बर 2008)

- **बंगाल-** बंगाल का किस्सा भी मज़ेदार है। जहाज से हथियार गिराए जाने के बाद सुर्खियों में आए पुरुलिया नामक कस्बे की एक घुमक्कड़ पत्रकार निरुपमा अधिकारी वहाँ के एक अकाल क्षेत्र का दौरा करती करती अचानक हरियाली देखकर ठिठक गई। गाँव वालों से पता चला कि उस गाँव में कुछ तालाब ज़िंदा थे, इसलिए वहाँ धरती के भीतर नमी अभी शेष थी। तालाबों की उपयोगिता के बारे में निरुपमा की दृष्टि साफ होती चली गयी और यह सब अनुपम मिश्र की पुस्तक की वजह से संभव हो पाया जिसके बाद निरुपमा ने इस पुस्तक का बंगला अनुवाद किया।

- **अलवर शहर में गूँजता पानी-** राजस्थान के अलवर शहर को अनुपम मिश्र की किताब ने नया जीवन प्रदान किया है। इस किताब से प्रभावित होकर राजेंद्र सिंह राणा ने तरुण भारत संघ नामक संस्था बनाकर पानी का काम शुरू किया। तरुण भारत संघ के कार्यकर्ताओं ने ग्रामीणों के साथ मिलकर वर्षा का पानी रोकने के लिए जोहड़ों को खोदकर गहरा किया, नए जोहड़ बनाएँ, कुएं खोदें, बड़े पैमाने पर पेड़ लगाए तो धीरे-धीरे इलाके का नक्शा ही बादल गया। बारिश का पानी एकत्रित होने लगा, वहाँ सूखी रहने वाली 45 कि.मी. लंबी अरवरी नदी में पानी बहने लगा। अब खेतों की सिंचाई होने लगी,फजल संकट दूर हुआ और जनजीवन में खुशहाली आ गयी। इस उपलब्धि के लिए भांवता गाँव को पहला डाउन टू अर्थ जोसेफ जोने पुरस्कार मिला। सामुदायिक नेतृत्व के लिए 2001 में तरुण भारत संघ के प्रमुख राजेंद्र सिंह राणा को रमन मैगसेसे पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

(जनसत्ता 27 जून 2004)

- **नागपुर महाराष्ट्र-** नागपुर के वलिनी गाँव के सरपंच धनराज भांगे एवं उपसरपंच केशव डनभारे ने बताया की आज से लगभग 20 वर्ष पूर्व गर्मी के दिनों में जिला परिषद के माध्यम से गाँव में टैंकर से पीने का पानी पहुंचाया जाता था। गाँव के हर आदमी, औरत और बच्चों को पानी के लिए बाल्टी और गुंडी लेकर टैंकर के पीछे पीछे दौड़ना पड़ता था। गाँव में टैंकर नहीं आया तो पानी के लिए त्राहि-त्राहि हो जाती थी। लेकिन आज गाँव के खेतों में बने तालाबों के कारण पानी की स्थिति बहुत हद तक सुधर गयी है। गाँववासी पानी की कीमत अच्छी तरह से समझ गए हैं और वह यह भी समझ गए हैं कि यदि बारिश के पानी को रोका नहीं गया तो भविष्य में उनके बच्चों को पानी के लिए तरसना पड़ सकता है। हाल ही में गाँव में दो डीजल पंप खरीद के दिए गए हैं जो नाम मात्र शुल्क पर उन किसानों को दिए जाते हैं जो तालाब का पानी अपने खेत को देना चाहते हैं। वलनी को आदर्श गाँव बनाने के लिए सेतु के रूप में फ्रेंड्स कॉलोनी निवाली योगेश अनेजा का सहयोग गाँव वालों को मिला। योगेश अनेज़ा को यह कार्य अनुपम मिश्र की किताब आज भी खरे हैं तालाब को पढ़कर आया जो उनको किसी ने भेंट स्वरूप दी थी।

(दैनिक भास्कर, मंगलवार, 24 नवम्बर नागपुर)

- **किताब जिसने जलाई अलख-** अनुपम मिश्र की किताब आज भी खरे हैं तालाब ने नागपुर के योगेश अनेज़ा जोकि मूलतः हरियाणा के हैं को बहुत प्रभावित किया है। योगेश अनेजा जी के पिता जी केएल अनेज़ा कृषि विभाग के आकादमिक हेड थे। उनकी वजह से बचपन से ही पर्यावरण के प्रति चेतना तो थी ही। योगेश अनेजा ने नागपुर के समीप जागरुती कॉलोनी के एनआईटी गार्डेन के पास अमृत की खेती का निर्माण किया है। जैसा शीर्षक वैसा काम। वास्तव में वहाँ अमृत की ही खेती होती है। कम संसाधन में किसान कैसे उन्नत खेती कर सकता है यह सब इस अमृत की खेती में देखने को मिलता है। पानी कितनी सरलता से किसान को उपलब्ध हो सकता है इन सबका निचोड़ इस अमृत की खेती में है। यह सब उन्होंने अनुपम मिश्र की किताब आज भी खरे हैं तालाब से प्रेरित होकर किया है। आज से लगभग 20 वर्ष पहले यह किताब उनको किसी ने भेंट स्वरूप दी थी। आज भी खरे हैं तालाब को पढ़कर उनके मन में अनुपम मिश्र

से मिलने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई। योगेश अनेज़ा अनुपम मिश्र से मिले और राजस्थान में अनुपम मिश्र और राजेंद्र सिंह राणा के काम को देखा और समझा और उससे काफी प्रभावित हुए। लगभग 45 वर्षीय योगेश अनेज़ा जोकि पेशे से एक व्यापारी हैं उनकी स्पेयरपार्ट्स की दुकान है जो किसी पर्यावरण संरक्षण के केंद्र से जुड़े हुए नहीं थे, मात्र अनुपम मिश्र की पुस्तक आज भी खरे हैं तालाब पढ़कर प्रभावित हुए और नागपुर से लगभग 18 किलोमीटर दूर गाँव वलिनी में जल संरक्षण की अनोखी मुहिम भी शुरू की। योगेश अनेज़ा का कहना है कि अनुपम मिश्र ने तालाब के बारे में जितनी जानकारी दी वह अतुल्य है। वह वास्तव में जल गुरु थे। पिछले कई वर्षों में सरकार ने लोगों को आलसी बना दिया है। प्राचीन काल में तालाब बनाना एक परंपरा थी। राजा महाराजा और जनता मिलकर तालाब का निर्माण करते थे। किन्तु आज के समय में सरकार ने लोगों को यह चेताया है कि तालाब निर्माण का काम सरकार का है और लोगों ने तालाब निर्माण का कार्य बंद कर दिया और बरसो चली आ रही परंपरा टूट गयी। नतीजा यह निकला कि आज से 20 वर्ष पूर्व जब मैंने तालाब निर्माण का कार्य शुरू किया तब काफी परेशानी का सामना करना पड़ा।

योगेश अनेज़ा ने जो काम वलिनी गाँव में किया उसका एक मॉडल नागपुर के एनआईटी गार्डेन के समीप किया। उनके वलिनी गाँव में किए गए कार्य का संक्षिप्त प्रारूप है यह अमृत की खेती। यह अमृत की खेती वहाँ के कोर्पोरेटर की भूमि पर बनाई गयी है। जिससे एक छोटे पैमाने पर लोग सारी बात समझ सके। वह 1 साल से यहाँ काम कर रहे हैं। यहाँ खेती का विस्मयकारी तरीका देखने को मिला। उनकी भूमि पर लगभग पौधों की 30 प्रजातियाँ हैं। उन्होंने पत्तों पर खेती शुरू की। कुछ भी बाहर से नहीं खरीदा। उनका मानना है की प्रकृति के पास सब कुछ है। प्रकृति के पास आपकी ज़रूरत पूरा करने के लिए सबकुछ है हमें कुछ भी कहीं और से लाने की ज़रूरत नहीं हैं। यूरिया का प्रयोग न करके पत्तों से ही खाद का निर्माण किया योगेश अनेज़ा एकल खेती का विरोध करते हैं और कहते हैं कि किसान को कुछ खेती अपने लिए भी करनी चाहिए। एकदम कम संसाधन में बहुत अच्छी खेती की जा सकती है। खेत में ही छोटे छोटे कुएं खोदे गए हैं। सिंचाई के लिए बिजली का और टूबेवेल का प्रयोग न करके ट्रैडेलपम्प का प्रयोग किया है

ट्रैडेलपम्प की विशेषता यह है की इसमें किसान को बिजली की आवश्यकता नहीं होती और चूंकि इसमें शारीरिक बल लगता है इसलिए इसमें आवश्यता से अधिक पानी नहीं लिया जाता। पानी बर्बाद नहीं होता।आश्चय की बात यह की यह ट्रैडेलपम्प की कंपनी है तो भारत की लेकिन सबसे ज़्यादा अफ्रीका में बिकती है, यह पम्प मात्र 3000 का है।

6.व 7. मानव निर्मित ट्रेडेल

योगेश अनेज़ा बताते हैं कि हमारे घर का गंदा पानी है वह सीधे हमारे शरीर में जाता है, और इसका नमूना वह अपने इस मॉडल में भी दर्शा रहे हैं उनके अनुसार नागपुर के सभी घरों का गंदा पानी गोरेवाड़ा तालाब में जाता है फिर वहाँ सरकार नेबहुत बड़ा वॉटर ट्रीटमेंटप्लांट लगया हुआ है फिर वहाँ वॉटर फ़िल्टर होते हुए सीधे हमारे घर में जाता है जो काफी हद तक अशुद्ध है। योगेश अनेज़ा ने इसी पानी को शुद्ध करने के लिए अपने इस मॉडल में ट्रिपल वॉटर फ़िल्टर प्रक्रिया इस्तेमाल करते हैं इसमें तीन चरणों में पानी शुद्ध होकर पौधे तक पहुंचता है।

जलयुक्त शिवार योजना के अंतर्गत योगेश अनेज़ा ने किसानों के लिए 18 तालाब बनवाए। (वलिनी गाँव में 30 मी. बाई 30 मी. और 15 मी.) योगेश अनेज़ा अपना मॉडल दिखाते हुए कहते हैं कि हमें तालाब खोदने के लिए सरकार की योजना की ज़रूरत नहीं हैं। हम अपने खेत में अपनी सुविधानुसार बारिश का पानी रोकने के लिए एक आइडियल गड्ढा खोद सकते हैं। बड़े बड़े तालाब के तुलना में छोटे तालाब ज़्यादा सुविधाजनक होते हैं। ऐसे कई गड्ढे किसान आसानी से अपने खेत में बना सकता है जैसा योगेश अनेज़ा ने अपने इस मॉडल में किया। इससे प्रकृति को पानी भी मिल जाता है और हमारी ज़रूरत पूरी हो जाती है। बोरेवेल से पानी लेने से धरती सूख जाती है उसकी हालत बाण पर लेटे भीष्म पितामाह जैसी हो जाती है।

8.व 9. जल संरक्षण के लिए खेत में निर्मित छोटे तालाब

एक साइकल पम्प का भी आविष्कार किया। साइकल पम्प के जरिए शारीरिक श्रम से पानी की ज़रूरत पूरी की जाती है चूंकि यह भी एक मैनुअल इक्विपमेंट है, इसलिए इसके ज़रिए जितना पानी चाहिए उतना लिया जा सकता है। पानी को बर्बाद होने से बचाया जा सकता है। पानी बचाने और पानी के संरक्षण के अद्भभुत उपयोग उन्होंने अपनी इस अमृत की खेती में किया है। योगेश अनेजा ने आज भी खरे हैं तालाब किताब पढ़कर एक अनोखी धरती से किसानों को और जनता से रूबरू कराया।

10. व 11. सिंचाई हेतु साइकिल

संदर्भ:

(1)http://www.mkgandhi.org/g_journal/journals.htm

(2)https://khabar.ndtv.com/news/blogs/prabhash-joshi-article-on-environmentalist-anupam-

(3)http://kalrajmishra.com/ganga-an-article-by-kalraj-mishra/

अध्याय छ:

तथ्यों का संकलन और विश्लेषण

6.1. साक्षात्कार प्रस्तुति: प्रस्तुत शोध की मांग के अनुसार पर्यावरण और अनुपम मिश्र के पर्यावरण में योगदान को ध्यान में रखते हुए पर्यावरणविद् और अनुपम मिश्र के साथ काम कर चुके हुए लोगों के साथ साक्षात्कार किया गया है।

पर्यावरणविद् मुरलीधर बेलखोड़े से साक्षात्कार

मुरलीधर बेलखोड़े मूलतः महाराष्ट्र के वर्धा जिले निवासी हैं। मुरलीधर बेलखोड़े एक पर्यावरणविद् हैं, और निसर्ग सेवा समिति के अध्यक्ष भी हैं। निसर्ग सेवा समिति का मुख्य लक्ष्य पर्यावरण को बचाना है अधिक अधिक मात्रा में वृक्षारोपण करना है। मुरलीधर बेलखोड़े कई वर्षो से पर्यावरण को बचाने के लिए कार्यरत हैं और उन्हें अपने इस काम के लिए भारत सरकार से वर्ष 2007-2008 में प्रियदर्शिनी इन्दिरा गांधी वृक्षमित्र पुरस्कार भी मिला और ऐसे कई अन्य पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।

- **आपके अनुसार पर्यावरण पत्रकारिता की वर्तमान स्थिति क्या है ?**

मीडिया की आम जनता में बहुत अहम भूमिका है, आज मीडिया लोगों के दैनिक जीवन का अजेंडा सेट करने का कार्यकर रही है। मीडिया लोगों को बता रही है कि उन्हें आज किस विषय में

बात करना है। अगर पर्यावरण पत्रकारिता की वर्तमान स्थिति की बात करें तो मेरे अनुसार आज वह उतनी सुदृढ़ नहीं है। यदि कुछ एक चैनल जैसे की एनिमल प्लैनेट, नेशनल जियोग्राफिक को छोड़ दिया जाए तो और मीडिया पर्यावरण को लेकर इतने जागरूक नहीं खासकर वह मीडिया (प्रिंटमीडिया) जिसकी आम जनता में आसानी से पहुँच है उसमें पर्यावरण को लेकर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया जाता, उसका ज़्यादा ध्यान किसी राजनीतिक मुद्दे या अन्य मुद्दे पर होता है।

- **जबतक कोई बड़ी त्रासदी या आपदा नहीं आती तब तक भारतीय मीडिया मेंपर्यावरण पत्रकारिता में निरंतरता नहीं दिखती इस पर आपके क्या विचार हैं ?**

भारतीय मीडिया के संदर्भ में यह कथन एकदम सटीक बैठता है। इसका जीवंत उदाहरण हमें केदारनाथ में हुए हादसे में देखने को मिलता है। आज कोई हादसा होता है तो मीडिया में उसका प्रभाव कुछ दिन तक मिलता है और कुछ दिन बाद सब एक धुंध की भांति गायब हो जाता है। आज भारतीय मीडिया को पर्यावरण को लेकर और अधिक गंभीरता से काम करने की ज़रूरत है।

- **वर्तमान समय में पर्यावरण और विकास एक दूसरे को कैसे प्रभावित कर रहे हैं ?**

पर्यावरण और विकास एक दूसरे से संबंधित हैं। आज विकास के नाम पर पर्यावरण के साथ ज़बरदस्त खिलवाड़ किया जा रहा है। मैं विकास का विरोधी नहीं हूँ, विकास होना चाहिए उसमें कोई दो राय नहीं है, लेकिन शाशवत विकास होना चाहिए, प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर विकास होना चाहिए। आज टूरिज़म के लिए अर्थात् पैसा कमाने के लिए भवन निर्माण किया जा रहा है या किसी अन्य इमारत का निर्माण किया जा रहा है ताकि उनका अर्थशास्त्र मजबूत हो सके यदि व्यावसायिक हित के लिएविकास होगा तब निश्चित ही विनाश होगा।

- **पर्यावरण को बचाने में सरकार की नीतियाँ कितनी सार्थक साबित हुई हैं और आप उनसे कितना सहमत हैं ?**

मैं पर्यावरण को बचाने में जो सरकार की नीतियाँ हैं उनसे पूर्णतयः सहमत नहीं हूँ। यदि इतिहास के पन्नों को पलटा जाए तो यह ज्ञात होगा कि रुल्स अँड रेग्युलेशन हैं। 1979 का एक्ट इसका उदाहरण है। आज सारे कानून बने हुए हैं लेकिन उनका सही ढंग से इम्प्लीमेंट नहीं हो रहा है। विकास की आड़ में कितना विनाश हो रहा है उसका कोई ब्योरा नहीं है।

- **पर्यावरण को बचाने या पर्यावरण को मजबूत बनाने में अनुपम मिश्र द्वारा किए कार्यों पर आपकी क्या राय है ?**

आज बहुत से ऐसे व्यक्ति हैं जो पर्यावरण के क्षेत्र में जी जान से काम कर रहे हैं उसमें मिश्रा जी का नाम भी आता है यदि उन्होंने जो काम किए हैं वह नहीं किए होते तो आज जितना नुकसान हो रहा है उससे ज़्यादा नुकसान होता। आज सरकार को मिश्रा जी के द्वारा किए गए कार्यों से प्रेरणा लेनी चाहिए। उनके दिखाए हुए रास्ते पर चलकर पर्यावरण को बचाने की मुहिम शुरू करनी चाहिए। मिश्रा जी ने अपना पूरा जीवन पर्यावरण को समर्पित कर दिया। उनकी पुस्तक आज भी खरे हैं तालाब आज जल संरक्षण में मील का पत्थर है। वह अपनी पुस्तक के माध्यम से यह बता रहे हैं कि पहले के लोग ज़्यादा पढे-लिखे नहीं होते थे लेकिन उनको जल संरक्षण का कार्य अच्छे से आता था। वह बेहतर जल इंजीनियर थे किन्तु आज के लोग पता नहीं कौन सी नयी किस्म की पढ़ाई पढ़ आए हैं कि वह अपनी जल सम्पदा को नष्ट करने में तुले हुए हैं।

- **पर्यावरण के क्षेत्र में आप कब से और कैसे सक्रिय रहे हैं ?**

पर्यावरण के क्षेत्र में काम करते हुए मुझे 25 साल हो गए हैं। मेरे अनुसार पर्यावरण को मजबूत बनाने में सबसे अहम भूमिका हमारे वृक्ष की होती है जो जीवन भर हमे सिर्फ खाने को भोजन, स्वच्छऔर ताजी हवा, दवाएं और ऑक्सिजन देता है। जिसके लिए मैंने और मेरे एन.जी.ओ. निसर्ग सेवा समिति ने ज़्यादा से ज़्यादा वृक्ष लगाने और लगवाने की संकल्पना की है। हमारा मुख्य लक्ष्य लोगों को वृक्ष लगाने के लिए प्रेरित करना है। जिसके लिए हमने एक घर एक वृक्ष (नए घर के निर्माण पर वृक्षारोपण), जन्मदिन पर वृक्षारोपण, विवाह वृक्ष, स्मृति वृक्ष(अपने किसी प्रियजन की याद में वृक्षारोपण) देहदान वृक्ष (फ़ेरेवेल ट्री) अर्थात् मनोपरांत हिन्दू समाज में देहदान के लिए लकड़ी की आवश्यकता होती है जो वृक्ष से ही प्राप्त होती है। जिसके लिए पहले से वृक्षारोपण किया जाने की संकल्पना करना। नूतन वर्षा अभिनंदन(नए साल में वृक्षारोपण) वृक्ष लागने की पूरी सेवा हमारी समिति देती है। यह कार्य हम पिछले 10 वर्षों से कर रहे हैं। यहाँ तक की 5 साल तक उसकी देखभाल करने की ज़िम्मेदारी हमारी समिति ही देती है। यह सब सिर्फ एक फोन कॉल पर प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपलब्ध है। हमारी निसर्ग सेवा समिति का मुख्य लक्ष्य ही पर्यावरण को मजबूत बनाना है।

- **पर्यावरण में सुधार या बचाव के लिए आपके अनुसार सरकार को कौन सी नीतियाँ या योजनाए बनानी चाहिए ?**

इस प्रश्न पर मेरा सिर्फ मेरा इतना ही कहना है की सारी नीतियाँ पहले से बनी हुई हैं, सरकार को पर्यावरण संरक्षण के लिए ज़्यादा कुछ नीतियाँ बनाने कि जरूरत नहीं है ज़रूरत है तो सिर्फ उनका कड़ाई से पालन करने की। सरकार को सिर्फ इतना ही चाहिए कि पर्यावरण संरक्षण के लिए जो नीतियाँ बनी हुई हैं उनका कड़ाई से पालन होना चाहिए। आज सरकार को शाश्वत विकास पर ध्यान देना चाहिए।

- **लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाने में मीडिया एक एहम भूमिका कैसे अदा कर सकता है ?**

मीडिया पर्यावरण को मजबूत बनाने में एक अहम भूमिका निभा सकता है। एक स्पेशल मीडिया पर्यावरण के बारे में होना चाहिए। जैसेकि हमारे धर्म और संस्कृति के लिए अलग चैनल है आस्था संस्कार टीवी आदि ठीक उसी प्रकार एक स्पेशल चैनल पर्यावरण को लेकर भी होना चाहिए। जिसमे 24 घंटे पर्यावरण से संबंधित खबरें प्रसारित होनी चाहिए और उसमें ऐसी ज्ञानवर्धक बातें बतानी चाहिए जिससे पर्यावरण संरक्षण हो सके।

- **पर्यावरण को बचाने में एक आम नागरिक की क्या भूमिका होनी चाहिए ?**

हम सबसे ही पर्यावरण का निर्माण होता है। पर्यावरण में रहने वाले लोग उसे प्रभावित करते हैं। पर्यावरण का संरक्षण हो या विनाश यह उसमें रहने वाले लोगों द्वारा ही तय होता है। इसलिए आम नागरिक को चाहिए कि वह पर्यावरण का दोहन ना करें। प्राकृतिक संसाधनों का दोहन ना करें अपने पर्यावरण में हरियाली बनाएँ रखें। आधुनिकता की होड़ में पर्यावरण के साथ खिलवाड़ ना करें। सभी को एकजुट होकर पर्यावरण को मजबूत बनाने की कोशिश करनी चाहिए ना की उसे नष्ट करने की या हानि पहुंचाने की।

वरिष्ठ पत्रकार राकेश दीवान से साक्षात्कार- टेलिफोनिक इंटरव्यू (9826066153)

पत्रकार राकेश दीवान वर्तमान में विकास संवाद मीडिया ग्रुप भोपाल के सलाहकार हैं। राकेश दीवान ने काफी लंबे समय तक अनुपम मिश्र के साथ काम किया। इन्होंने स्वयं पर्यावरण के क्षेत्र में काफी काम किया। पत्रकार राकेश दीवान तुलसीनगर भोपाल के रहने वाले हैं। यह अनुपम मिश्र से उनके कार्य से और उनके कार्य करने के तरीके से भली भांति परिचित थे।

- **आप अनुपम मिश्र के साथ कब से और कितने वर्ष तक जुड़े रहे ?**

मेरा और अनुपम भाई का साथ काफी लंबे अरसे तक रहा। अनुपम भाई के पिता भवानी प्रसाद मिश्र गांधी जी के वर्धा स्थित आश्रम में शिक्षक और प्राचार्य के रूप में कुछ कार्यरत रहे। इसके बाद वह अन्य शहरों में रहे वहाँ से वह अक्सर अपने पिता के जन्म स्थान होशंगाबाद आते रहते थे। यहाँ उनके पिता को जानने वाले और उनके साथी रहा करते थे। उस दौरान मेरा अनुपम भाई से औपचारिक परिचय हुआ और धीरे-धीरे यह परिचय कब गहरी मित्रता में बदल गया पता ही नहीं चला।

- **आपका अनुपम मिश्र के साथ पर्यावरण के लिए कौन कौन से काम किए गए ?**

अनुपम भाई से मित्रता होने के बाद मैंने उनके साथ काम करना शुरू कर दिया। सन् 1973-1974 में गांधीवादी व विचारक बनवारी लाल चौधरी के निर्देशन में हमने तवा बांध के कारण उपजी समस्याओं को लेकर होशंगाबाद में 'मिट्टी बचाओ अभियान' शुरू किया था। हम जो भी काम करते थे उसके प्रचार प्रसार का जिम्मा अनुपम भाई के पास था। इसी समय अनुपम और दिलीप चिंचालकर के साथ मिलकर इसी नाम से किताब लिखी, जो उनकी पहली किताब थी। इसके बाद हमने मिलकर कई काम किए। जब उत्तराखंड में पेड़ों को बचाने के लिए चिपको आंदोलन चलाया गया, तो अनुपम ने उसपर भी एक किताब लिखी और लिखा कि पानी और जंगल का गहरा संबंध है अगर जंगल खत्म होगा तो इसका असर पानी पर भी पड़ेगा। इसके बाद एक बार अनुपम किसी काम से राजस्थान गए तो वहाँ पानी को लेकर काम कर रहे तरुण भारत संघ से उनका परिचय हुआ इसके बाद उन्होंने इस संगठन के साथ मिलकर करीब 10 साल तक काम किया।इस काम के लिए उन्हें के.के.बिड़ला फ़ाउंडेशन की फैलोशिप भी मिली। इस दौरान उन्होंने जो किताब लिखी वह थी राजस्थान की रजत बूंदें, और यहीं से अनुपम ने तालाबों पर लिखने का सोचा और इसके लिए मैंने मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के कई क्षेत्रों में जाकर जानकारी और आंकड़े एकत्र किए। फिर अनुपम भाई की एक अद्भभूत कृति आई आज भी खरे हैं तालाब। दुनिया में शायद ही इस तरह कोई और कृति होगी।

- **अनुपम मिश्र की पर्यावरणीय दृष्टि से आप किस तरह प्रभावित हैं ?**

पानी को लेकर अनुपम का मानना था कि इसे सहेजने के लिए सदियों से समाज के अपने ताने-बाने हैं इसलिए हम ज़िंदा हैं आज समाज को उसका सम्मान करना चाहिए उसको संवारिए बिगाड़िए मत। आज समाज पढ़े-लिखे वर्ग और अनपढ़ वर्ग में विभाजित है। आज का समाज जिसे अनपढ़ कहता है उसमें अपनी जल सम्पदा को बचाने में ज़्यादा शक्ति थी और आज का पढ़ा लिखा वर्ग न जाने कौन सी किस्म की नयी पढ़ाई पढ़ कर आए हैं जो अपनी इस जल सम्पदा को नष्ट करने पर तुले हुए हैं। पर्यावरण के दोहन पर अनुपम मिश्र हमेशा से ही कहते थे इक्कीसवीं के बाद भी सदियाँ हैं। हमे अपनी भावी पीढ़ी के लिए भी कुछ सोच कर रखना चाहिए जैसाकि हमारे लिए रखा गया। अनुपम मिश्र की ऐसी सोच सच में अतुल्य है यदि आज समाज उनकी इस पर्यावरणीय सोच को अपना ले तो कहीं न कहीं पर्यावरण को बचाया जा सकता है।

- **आज समाज के जल दर्शन के क्या मायने हैं ?**

आज समाज के जल दर्शन के क्या मायने हैं इसका प्रमाण भोपाल को विरासत में मिला इतना बड़ा तालाब है हज़ार बारह सौ साल पुराना यह तालाब आज भी हमें पानी पिला रहा। हमने क्या किया! सारे शहरों के गटरों का पानी उसमें छोड़ना शुरू कर दिया! अगर हम इस विरासत का सम्मान नहीं कर सकते तो अपमानित भी न करे! अगर हम अपने बुजुर्गों-पूर्वजों का सम्मान करना भूल जाएंगे, तो उसका खामियाजा हमें भुगतना पड़ेगा और हम भुगत भी रहे हैं।

- **वर्तमान में जल संपदा अर्थात् जल को बचाने के लिए अनुपम मिश्र द्वारा सुझाए गए रास्ते कैसे कारगर साबित हो सकते हैं ?**

अनुपम मिश्र खुद को समाज का क्लर्क कहते थे। वह समाज में जाकर लोगों के बीच रहकर उनसे बातकर के फिर उसको लिखते थे! वह सुनने और देखने दोनों प्रकार की गुणवत्ता वाले पत्रकार थे। उन्होंने जल को बचाने के जो रास्ते अपनी पुस्तक और लेखों के माध्यम से लोगों को दिखाए हैं वह बेहद असरकारी हैं। आज के समय में हम यदि उनके दिखाए हुए रास्ते में चले तो काफी हद से जल संकट से छुटकारा पाया जा सकता है अनुपम मिश्र हमेशा से भूमिगत को रीचार्ज करने के और वर्षा जल संरक्षण के पक्षधर थे।

- **पर्यावरण को बचाने के लिए आप समाज को क्या संदेश देना चाहते हैं ?**

आज लोगों को सिर्फ यही कहना चाहता हूँ कि पर्यावरण का आदर करना सीखें और पेड़ लगाओ का नारा लगाना बंद करें। आधुनिकता की होड़ में पर्यावरण को नुकसान पहुंचाना बंद करें क्योंकि सरकार पेड़ भले ही लगा सकती है लेकिन जंगल नहीं लगा सकती। जो आप कर नहीं सकते उसे काटने का हक़ भी आपको नहीं है। यह प्रकृति का प्रसाद है और सबसे दुख की बात तो यह है जो नदी संरक्षण का कार्य कर रहे वहीं बांध के तले बहे जा रहे हैं (नर्मदा जल संरक्षण के संदर्भ) हमें पर्यावरणविद् का सम्मान करना चाहिए।

अनुपम मिश्र की पत्नी मंजू मिश्र से साक्षात्कार

श्रीमती मंजू मिश्र ने अनुपम मिश्र की पर्यावरण पत्रकारिता में पूरा सहयोग दिया। अर्थात् जहां -जहां अनुपम मिश्र गए वह उनके साथ गईं उन्होंने उनके कार्य को बहुत नजदीक से देखा है और उनके कार्य में बराबर उनकी सहयोगी बनी।

- **अनुपम मिश्र साहित्यकार भवानी प्रसाद के पुत्र होने के बावजूद उन्होंने समाज कार्य मुख्यत: तालाब संस्कृति का काम क्यों चुना ?**

समाज कार्य मुख्यत: तालाब संस्कृति को बचाने में उनकी रुचि हमेशा से थी। हम जहां भी जाते थे वहाँ से अनुपम जी कुछ न कुछ अपने जीवन में जोड़ लेते थे। जैसे पेड़ बचाने का कार्य जल स्त्रोत बचाने और उनको दुरुस्त करने के तरीके और वहाँ की संस्कृति भी। अनुपम जी वर्तमान समय में जो स्त्रोतों की जो स्थिति है और भूतकाल में जल स्त्रोतों की जो स्थिति थी उससे भली भांति परिचित थे इसलिए उन्होंने समाज को पुनः जल संसाधनों से परिपूर्ण करने की कोशिश की और रही बात एक साहित्यकार के पुत्र होने की तो उसकी झलक लगभग उनके हर लेख में दिख जाती है।

- **आज अनुपम मिश्र हमारे बीच में नहीं हैं, आपको क्या लगता है कि उनके द्वारा जो जल संरक्षण की मुहिम शुरू की गयी थी वह थम गयी है या थम जाएगी ?**

अनुपम मिश्र जी के न होने से वास्तव में समाज को हानि तो हुई है लेकिन अनुपम मिश्र जी का कहना था कि मैंने किसी का ठेका नहीं लिया है। जब तक ठोकर नहीं लगती तब तक इंसान नहीं सीखता। यदि लोगों को ज़रूरत लगेगी तो वह काम करेंगें। उनके जाने से उनकी मुहिम खत्म नहीं हुई है। उनका काम उनकी किताबों के माध्यम से ज़िंदा है और हमेशा रहेगा और लोगों को प्रेरणा देता रहेगा।

- **अनुपम मिश्र की जलयात्रा कब शुरू हुई ?**

सन् 1980 के करीब जब मैं अनुपम मिश्र जी के साथ राजस्थान गयी जहां तक मुझे याद है यह उनकी मेरे साथ पहली जल यात्रा थी। तब हमने देखा वहाँ पानी लेने के लिए चप्पल उतार के जाना पड़ता था। प्रत्येक घर की संरचना ऐसी होती थी की वहाँ वर्षा का जल सरक्षित हो सके और वहाँ जल संरक्षण के तमाम स्त्रोत थे जैसे कि कुंड, बावड़ी आदि।तब अनुपम मिश्र जी लोगों से पूछा की यह क्या है तब लोगों ने बताया कि यहाँ पानी बहुत कम होता है इसलिए वर्षा का जल संरक्षित हो सके इसलिए इन चीजों का निर्माण किया गया है। जीवन जीने के लिए जितना कम से कम पानी की ज़रूरत होती उतना लोग उपयोग करते थे। फसल भी वह ही पैदा करते थे जिसमें कम पानी की ज़रूरत हो। इसके विपरीत उनको उनकी गोवा की यात्रा में देखने को मिला। गोवा में इतिहास में जहां पर वर्षा का जल संरक्षित होता था वहाँ पर लोगों के घर बन चुके थे। जिसको देख कर उन्हें काफी निराशा हुई और उन्होंने भविष्य की कल्पना भी कर ली। यहीं से उनकी अन्य जल यात्राएं भी शुरू हुई।

- **आपको क्या लगता है आने वाले दिनों में जल स्त्रोतों की क्या स्थिति होगी ?**

वर्तमान में जितनी तेजी से जल स्त्रोतों को खत्म किया जा रहा है उससे ही भविष्य का अंदाज़ा लगाया जा सकता है की भविष्य कितना भयावह होगा। नई दिल्ली को नयी नई दिल्ली बनने से पहले यहाँ 800 के करीब तालाब थे किन्तु आज वह तालाब बांध के तले दब हैं। अभी 6-7 साल पहले की बात है नई दिल्ली में पानी की कमी की वजह से शॉपिंग माल बंद हो गए थे। गांधी जी का कहना था कि प्रकृति के हमारी ज़रूरत पूरा करने के लिए सबकुछ है किन्तु हमारे लालच ने सब नष्ट करके रखा हुआ है। आज मनुष्य की प्राथमिकताएं ही तय नहीं हैं। अनुपम मिश्र जी के शब्दों में कहें तो जो पानी आज

हमें 20 रुपेय का मिल रहा है उसकी कीमत बहुत कम है वह और अधिक कीमत पर मिलना चाहिए तब ही लोग इसकी महत्ता को समझेंगे। वर्तमान सुधरेगा तभी भविष्य सुधरेगा।

- **जल स्त्रोतों को बचाने के लिए आप जनता को क्या संदेश देना चाहती हैं ?**

मैं यह संदेश देना चाहूंगी कि हमारी जल सम्पदा हमें हमारी पूर्वजों के द्वारा दी गयी भेंट हैं और हमें इसे अपनी आने वाली पीढ़ी के लिए भी बचाना है। हमारे पास जो तालाब संस्कृति है वह काफी पुरानी है। आज हमें ऐसी क्या ज़रूरत आन पड़ी है जो हम इसे नष्ट करने पर तुले हुए हैं। हम यह क्यूँ भूल बैठे हैं की इक्कीसवीं के बाद भी सदियाँ हैं। आधुनिकता की इस अंधी दौड़ में हमारे प्राकृतिक संसाधन चपेट में आ रहे हैं। प्राकृतिक संसाधनों का दोहन न करें और पानी का सदुपयोग करें।

6.2. साक्षात्कार विश्लेषण: प्रस्तुत शोध को करने के लिए पर्यावरणविद् मुरलीधर बेलखोड़े, पत्रकार राकेश दीवान और अनुपम मिश्र की पत्नी से किए गए साक्षात्कार से कुछ साक्ष्य उभरकर सामने आए जो इस शोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

पर्यावरणविद् मुरलीधर बेलखोड़े के अनुसार आज मीडिया का मुख्य कार्य सिर्फ टी.आर.पी. पर केन्द्रित है। मीडिया जितना ज़्यादा ध्यान मसालेदार खबरों पर होता है उतना पर्यावरण संबंधी खबरों पर नहीं होता है। भारतीय मीडिया में पर्यावरण पत्रकारिता के प्रति तबतक निरंतरता नहीं दिखती जब तक कोई बड़ी आपदा या त्रासदी नहीं आ जाती। यदि कुछ एक चैनल जैसे की एनिमल प्लैनेट,नेशनल जियोग्राफिक को छोड़ दिया जाए तो और मीडिया पर्यावरण को लेकर इतने जागरूक नहीं खासकर वह मीडिया (प्रिंटमीडिया) जिसकी आम जनता में आसानी से पहुँच है उसमें पर्यावरण को लेकर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया जाता, उसका ज़्यादा ध्यान किसी राजनीतिक मुद्दे या अन्य मुद्दे पर होता है।आज आधुनिकता की होड़ में सभी अंधे हो चले हैं। चाहे वह सरकार हो या अन्य नागरिक सभी अपना अर्थशास्त्र मजबूत करने में जुटे हुए हैं। विकास की आड़ में पर्यावरण का सर्वनाश किया जा रहा है। मीडिया पर्यावरण को मजबूत बनाने में एक अहम् भूमिका निभा सकता है। एक स्पेशल मीडिया पर्यावरण के बारे में होना चाहिए।हमारे धर्म और संस्कृति के लिए अलग चैनल है आस्था, संस्कार टीवी आदि ठीक उसी प्रकार एक स्पेशल चैनल पर्यावरण को लेकर भी होना चाहिए जिसमे 24 घंटे पर्यावरण से संबंधित खबरे प्रसारित होनी चाहिए और उसमें ऐसी ज्ञानवर्धक बातें बतानी चाहिए जिससे पर्यावरण संरक्षण हो सके।

पत्रकार राकेश दीवान के अनुसार अनुपम मिश्र ने मिट्टी के महत्व को समझा है, जल को उसकी तरल ऊर्जा में धरती के भीतर जिस तरह देखा वैसा कोई और न देख सका। अनुपम मिश्र ने हमें पर्यावरण की विरल समझ दी। उन्होंने अपने नाम को सार्थक कर दिया जैसा उनका नाम था व्यक्तित्व भी उतना ही सुंदर और कृतित्व भी। पानी को लेकर अनुपम का मानना था की इसे सहेजने के लिए सदियों से समाज के अपने ताने-बाने हैं इसलिए हम ज़िंदा हैं आज समाज को उसका सम्मान करना चाहिए उसको संवारिए बिगाड़िए मत। आज समाज पढे-लिखे वर्ग और अनपढ़ वर्ग में विभाजित है और आज का समाज जिसे अनपढ़ कहता है उसमें अपनी जल सम्पदा को बचाने में ज़्यादा शक्ति थी। आज का पढ़ा लिखा वर्ग न जाने कौन सी किस्म की नयी पढ़ाई पढ़ कर आए हैं जो अपनी इस जल सम्पदा को नष्ट करने पर तुले हुए हैं। वर्तमान समय में लोगों के जल दर्शन के क्या मायने हैं, इसका प्रमाण हमें भोपाल को विरासत में मिला इतना बड़ा तालाब है हज़ार बारह सौ साल पुराना यह तालाब आज भी हमें पानी पिला रहा है और हमने क्या किया! सारे शहरों के गटरों का पानी उसमें छोड़ना शुरू कर दिया। अनुपम मिश्र हमेशा से भूमिगत को रीचार्ज करने के और वर्षा जल संरक्षण के पक्षधर थे। उन्होंने जल को बचाने के जो रास्ते अपनी पुस्तक और लेखों के माध्यम से लोगों को दिखाए हैं वह बेहद असरकारी हैं।

अनुपम मिश्र की पत्नी मंजु मिश्र के अनुसार अनुपम मिश्र की जल यात्रा सन् 1980 में राजस्थान से शुरू हुई। राजस्थान की प्रत्येक घर की संरचना ही ऐसे की गयी है वहाँ वर्षा का जल संरक्षित हो सके। वहाँ पर माजूद कुंड, बावड़ी और झालर जैसे परंपरागत जल स्त्रोत वहाँ की आग उगलती हुई धरती को चेतावनी दे रहे हैं। किन्तु वर्तमान समाज का परिदृश्य ही कुछ भिन्न है। आधुनिकता की इस अंधी दौड़ में लोग परंपरागत जल स्त्रोतों को नष्ट करके वहाँ पर भवन निर्माण करके अपनी आधुनिकता का परिचय दे रहे हैं। वर्तमान में जितनी तेजी से जल स्त्रोतों को खत्म किया जा रहा है उससे ही भविष्य का अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि भविष्य कितना भयावह होगा।

निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति में पर्यावरण की रक्षा करने को धर्म बताया गया है। लोगों में आधुनिक बनने के लिए विकास की होड़ लग जाती है और जैसे जैसे विकास की जंग आगे बढ़ती है पर्यावरण आधारित संघर्ष बढ़ते जा रहे हैं। विगत 200 वर्षों से जो विकास की परंपरा अपनाई गयी है उसका यह परिणाम है की हमारी वायु जहरीली हो गई है, नदियां गंदे नालों में तब्दील हो गयी हैं, अनेक प्रकार के जंतुओं की प्रजातियाँ आज विलुप्तप्राय हो चुकी हैं और हो रही हैं, वनों के अंधाधुंध कटाव के कारण धरती के तापमान में निरंतर वृद्धि हो रही है, ओज़ोन परत में छेद हो रहा है। विकास की इस प्रक्रिया ने हजारों लोगों को जल,जंगल, ज़मीन से बेदखल कर दिया है। ऐसी स्थिति में पर्यावरण को विनाश से बचाने के लिए विभिन्न प्रकार के आंदोलन जैसे चिपको आंदोलन, नर्मदा आंदोलन, टिहरी बांध आंदोलन, अपिकों आंदोलन, साइलेंट घाटी आंदोलन, विष्णोई आंदोलन गंगा मुक्ति आंदोलन, पानी पंचायत आंदोलन आदि चले। माधव, गाडगील तथा रामचंद्रा गुहा भारतीय पर्यावरण आंदोलनों में मुख्यतः तीन वैचारिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किए जो की गांधीवादी, मार्क्सवादी तथा उपयुक्त तकनीकी दृष्टिकोण।

प्रस्तुत शोध से यह निष्कर्ष निकला कि आज लोगों में जल प्रबंधन या जल के प्रति जागरूकता में अभाव देखने को मिलता है। लोग विकास की अंधी दौड़ का हिस्सा बन चुके हैं। आज ऊंची-ऊंची इमारतें खड़ी करना एकमात्र उनका लक्ष्य बन गया है। उनको नदियों का बहता पानी अच्छा नहीं लगता इसके विपरीत नदियों पर बांध बनाने से उनको ज़्यादा खुशी मिलती है। अतः मैं शोध करने से पूर्व जो प्राकल्पना की थी कि लोगों में जल प्रबंधन के प्रति जागरूकता देखने को मिलती है वह सही साबित हुई।

सेंटर ऑफ़ साइंस एंड विलेजेस वर्धा महाराष्ट्र के चेयरमैन भरत महोदय जी का कहना है कि पेड़-पौधों, नदी, पर्वत, अग्नि-वायु सहित प्रकृति के विभिन्न रूपों के साथ मानवीय रिश्ते जोड़े गए हैं। हिन्दू धर्म में जलस्त्रोतों की अपनी उपयोगिता है। अधितकतर गाँव-नगर नदी के किनारे बसे हैं और जो गाँव नदी के किनारे नहीं बसे हुए थे वहाँ गाँव वालों ने तालाब बनाए हुए थे बिना नदी, तालाब और ताल के किसी भी अगोन या नगर की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी जिसका बड़ा सुंदर और जीवंत ज़िक्र अनुपम मिश्र ने अपनी पुस्तक आज भी खरे हैं तालाब में किया है।

पर्यावरण के वर्तमान परिदृश से तो हम सभी परिचित हैं प्रदूषित वातावरण ऊंची इमारतें, बांध के तले दबी नदियां या है आज का पर्यावरण। पर्यावरण को बचाने के लिए समय समय पर पर्यावरणविदों ने सुध ली और समाज को जागृत करने की कोशिश की उसमें से अनुपम मिश्र जी का नाम कभी भूला नहीं जा सकता। अनुपम मिश्र के लिए तालाब केवल जल का भंडार नहीं थे। वे समाज की आस्था, कला-कौशल, समाजिकता और संस्कार शीलता का जीता जागता उदाहरण थे। अनुपम मिश्र जी का कहना था की पानी अपना रास्ता कभी नहीं भूलता, पानी ज़रूर लौट के आता है अनुपम मिश्र ने जो कुछ भी लिखा उस पर अपना अधिकार नहीं रखा और वह काफी असरकारी भी हुआ। उनकी रचनाए अनेकों भाषा में छपी और लोगों ने उससे प्रेरणा ली और आज भी ले रहे हैं। शशि त्यागी के अनुसार क्षेत्रीय लोगों से सीखकर उनकी सूझ-बूझ के अनुसार राजस्थान के सात जिलों ले लगभग 1500 गाँव में टांका, खड़ीन, बेरी , नाड़ी आदि का काम हम कर रहे हैं। किशोर संत जी कहते हैं की वैश्विक तापमान का बढ़ना, जीव प्रजातियों को लुप्त होना, मरुस्थल का विस्तार, घोर आर्थिक असमानता, सामाजिक और पर्यावरणीय विघटन, प्रजातन्त्र की दुर्दशा, ऐसे अनेक संकेत हैं जिंहोने मानव के भविष्य पर और आधुनिक मानव- बुद्धि पर प्रश्नचिन्ह लगा दिए हैं। इसलिए विश्व भर में विकल्प की तलाश हो रही है। यह कोई नया प्रयास नहीं है।

अनुपम मिश्र जिस समाज की बात करते हैं वह आधुनिक है पर तथाकथित वैज्ञानिकों द्वारा वर्णित समाज नहीं है। अनुपम समाज को निराकार मानते हैं। उनका समाज स्थानीय प्रकृति,परिवेश, पड़ोस और विश्व से साथ निभाता है और इसमें से उनका ज्ञान विज्ञान उत्पन्न होता है। यह रिश्ता टूट गया है, जिस कारण समाज और विकास दोनों पटरी से उतर गए हैं। जहां यह संबंध कायम है और कम-अधिक मात्रा में स्वदेशी सामाजिक और पर्यावरणीय व्यवस्थाएं टिकी हुई हैं, अनुपम उसकी तरफ हमें ले जाते हैं।

गांधी निधि स्मारक नई दिल्ली के चेयरमैन रामचंद्र राही का कहना है कि गांधी शांति प्रतिष्ठान के पर्यावरण कक्ष में अनुपम जो काम कर रहे थे उसका उद्देश्य वाकई में इस बात को समझना था की ब्रिटिश शासन से पहले देश के लोगों ने हजारों वर्षों तक अपनी पानी की जरूरतें कैसे पूरी की थीं। इसी उद्देश्य से उन्हें न सिर्फ सिंचाई के विशाल प्राणलियों से अवगत कराया बल्कि टांकों, तालाबों की घरेलू प्रौद्योगिकी से भी परिचय कराया। ब्रिटिश शासन से पहले समाज ने कोई 20 लाख तालाब बना रखे थे, और इन तालाबों में जमा होने वाले बारिश के पानी से लोगों की जरूरतें पूरी होती थीं

और इससे भू-जल स्तर भी बढ़ता था। समाज पानी के मामले में आत्मनिर्भर था। कुएं, तालाब, और बावड़ियों ने सदियों तक लोगों की अच्छे तरीके से सेवा की है। समाज के लोग भी इन जल संरचनाओं को बनाने और रख रखाव करना जानते थे। लोग बराबर आसमान पर नज़र रखते थे,और होने वाली बारिश की मात्रा के आधार पर ही पानी खर्च करते थे। अनुपम मिश्र ने अपने नाम को सार्थक कर दिया जैसा उनका नाम है वैसे ही बेजोड़ प्रतिभा वाला उनका व्यक्तित्व भी है। महान साहित्यकार भवानी प्रसाद मिश्र से विरासत में मिली भाषा उनकी रचनाओं को और भी मनमोहक बना देती है। उनकी रचनाएँ समाज का प्रत्येक वर्ग बड़ी आसानी से समझ सकता है। उनकी तालाबों पर लिखी हुई किताब उस समय के समाज की समृद्ध सोच से भी रूबरू कराती है, जो हमारे पूर्वजों ने बहुत सोच समझकर गढ़ी थी। सन् 1969 से गांधी शांति प्रतिष्ठान में हिन्दी प्रकाशन के काम से शुरू हुई अनुपम मिश्र की यात्रा उन्हें उत्तराखंड में चिपको आंदोलन, मध्यप्रदेश में तवा बांध का मिट्टी बचाओ अभियान, भीनासर में गोचर रक्षा आंदोलन फिर 1973 में चंबल में जयप्रकाश के नेतृत्व में डाकुओं का समर्पण तक ले गयी। सन् 1986 में देश का पर्यावरण और सन् 1988 में हमारा पर्यावरण किताब ऐसे चलते चलते उनकी यात्रा राजस्थान में गयी फिर उनकी अनमोल कृति आज भी खरे हैं तालाब आई जिसने समस्त देश को प्रेरित किया। अनुपम मिश्र हमें बहुत कुछ सीखा कर चले गए।

शोध के दौरान अनुपम मिश्र द्वारा लिखी गयी पुस्तकों, लेखों और पर्यावरण के क्षेत्र में किए गए कार्यों और प्रभावों का गहन अध्ययन किया गया है। जिससे यह निष्कर्ष निकला है कि अनुपम मिश्र ने जल संरक्षण के प्रति लोगों में जागरूकता लाने में हर मुमकिन कोशिश की है। शोध करने से पूर्व यह प्राकल्पना की गयी थी कि अनुपम मिश्र ने जल संरक्षण के प्रति लोगों में जागरूकता पैदा करने की कोशिश की है वह प्रमाणित होती है। अनुपम मिश्र के कार्यों और उनकी लिखी पुस्तकों द्वारा लोगों में जागरूकता पैदा हुई और कहीं-कहीं जल संरक्षण के लिए मुहिम शुरू की गयी। लोगों ने अपने परंपरागत जल स्त्रोतों को बचाने के लिए प्रयास करना शुरू कर दिया। मीडिया ने भी लोगों द्वारा किए गए कार्यों का प्रचार किया। अनुपम मिश्र की पुस्तकों से प्रभावित होकर जिन लोगों ने कार्य किया उसकी जानकारी लोगों तक पहुंचाना मीडिया ने अपना कर्तव्य समझा। मीडिया ने स्वयं तालाश तालाबों की नामाक अभियान शुरू किया। जिससे यह साबित होता है कि अनुपम मिश्र द्वारा जल संरक्षण के लिए किए गए कार्यों के बाद मीडिया जागरूक हुई है। अतः शोध करने से पूर्व जो तीन प्राकल्पनाएं की गयी थी वह प्रमाणित होती हैं।

सुझाव

प्रदूषित पर्यावरण के दूरगामी दुष्प्रभाव भी होते हैं जो अत्यंत घातक होते हैं। प्रत्यक्ष दुष्प्रभाव में जल ,वायु तथा परिवेश का दूषित होना मानव का अनेक रोग से ग्रसित होना आदि शामिल है। अपने पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए हमें सबसे पहले अपनी मुख्य जरूरत 'जल' को प्रदूषित होने से बचाना होगा। कारखानों का गंदा पानी, नालियों में प्रवाहित मल, सीवर लाइन का गंदा निष्कासित पानी पास के जल स्त्रोतों जैसे नदियों और समुद्र में गिरने से रोकना होगा। कारखानों के पानी में हानिकारक रासायनिक तत्व घुले रहते हैं जो नदियों के जल को विषाक्त कर देते हैं, परिणामस्वरूप जलचरों के जीवन को संकट का सामाना करना पड़ता है। दूसरी ओर हम देखते हैं कि उसी प्रदूषित पानी को सिंचाई के काम में लेते हैं जिसमें उपजाऊ भूमि भी विषैली हो जाती है। उसमें उगने वाली फसल व सब्जियां भी पौष्टिक तत्वों से रहित हो जाती हैं, जिनके सेवन से अवशिष्ट जीवननाशी रसायन मानव शरीर में पहुंच कर खून को विषैला बना देते हैं। आधुनिकता और विकास के लोभ में आकर हम आज सब भूल बैठे हैं। संसाधनों का दोहन और पर्यावरण को नुकसान पहुँचाना आज मनुष्य की प्रविति्त बन गयी है।

आज वह समय आ गया है की हम अपने पर्यावरण की सुध लें प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करना बंद करें, पुरातन जल स्त्रोतों को नष्ट करना बंद करें हम जिस आधुनिकता की दौड़ में चल पड़े हैं वहाँ से पर्यावरण का विनाश साफ साफ होता दिखाई दे रहा है। अनुपम मिश्र द्वारा उनकी किताब आज भी खरे हैं तालाब में हमारे पूर्वजों द्वारा व्यवहार में लायी गयी जल संरक्षण की शैली सबसे उचित है और वर्तमान समय में उसे व्यवहार में लाने की बहुत ज़रूरत है। वर्षा जल संरक्षण करने से काफी हद तक जल संकट से छुटकारा पाया जा सकता है। उतने ही जल का उपयोग करना चाहिए जितनी आवश्यकता हो।

पर्यावरण के अनुकूल त्योहार मानना चाहिए, नदियों में मूर्ति विसर्जन नहीं करना चाहिए। आज वर्षा जल संग्रह करने को अपनी आदत में शामिल करने की बहुत आवश्यकता है। यदि हम वर्षा का जल सहेजेंगे तो जल संकट से काफी हद तक छुटकारा पाया जा सकता है।

वृक्ष हमारे अभिन्न मित्र हैं ये हमें छाया, फल, लकड़ी प्रदान करते हैं जमीन का कटाव रोकते हैं, बाढ़ से सुरक्षा करते हैं। जहाँ ज्यादा वृक्ष होते हैं वहां अच्छी बारिश होती है जिससे बारिश में नदी

नाले भर जाते हैं और पानी की कमी नहीं हो पाती। इसलिए लगातार वृक्षा रोपण करते रहना चाहिये। बिना रोकथाम के पानी निकालने से भू-जल के स्तर में भारी गिरावट आ जाती है। इसके लिये भू-जल के वितरण प्रबन्धन नियमों का पालन करना जरूरी है। साथ ही नए कानून बनाने की ज़रूरत है जो किसी भी प्रकार के वाटर वेस्टेज को एक गैरकानूनी काम के रूप में देखें- और ऐसा करने वालों को जुर्माना और सजा देने का प्रावधान करें। पानी की बर्बादी रोकने, वर्षा जल का संचयन करने, लगातार वृक्षारोपण करने तथा पानी को प्रदूषण से बचाने हेतु लगातार जागरूकता कार्यक्रम चलाते रहना चाहिये और यह प्रयास हम सबको मिलकर करना चाहिए। पारंपरिक जल स्त्रोतों को पुनर्जीवित करने के लिए कदम उठाना चाहिए।

पर्यावरण को मजबूत बनाने के लिए हमें प्लास्टिक की थैलियों की जगह कपड़े का बैग अपने उपयोग में लाना चाहिए। ग्लोबल वार्मिंग इस समय बड़ी चिंता है। पृथ्वी पर जिन चीजों का उपयोग हम कर रहे हैं उनमें तापमान में क्रमशःवृद्धि हो रही है। आज हमें अपनी दैनिक दिनचर्या में बदलाव लाने की ज़रूरत है। हमारी दैनिक दिनचर्या में पर्यावरण संतुलन बनाए रखने का लक्ष्य अवश्य होना चाहिए।

मीडिया से लोगों का आचार-व्यवहार प्रभावित होता है। मीडिया जो लोगों को दिखाता है वह लोगों के मन मस्तिष्क में घर कर लेती है और वह उसी के अनुरूप अपना दृष्टिकोण विकसित कर लेते हैं। इसलिए आज भारतीय मीडिया की प्राथमिकता मसालेदार खबरें न होकर ज़्यादा से ज़्यादा पर्यावरण संबंधी खबरों की होनी चाहिए। मीडिया को पर्यावरण से संबंधी खबरे छापकर जनता को जागरूक करना चाहिए।